29 जुलाई, 2025
श्रावण, शुक्ल पक्ष, पंचमी
संवत 2082
पृष्ठ : 12, मूल्य : ₹3.00

* ओड़िशा संस्करण

www.epaper.azadsipahi.in

कलम कलम बढ़ाये जा

आजाद सिपाही

रांची
मंगलवार, वर्ष 10, अंक 279

चीन में महिलाओं से संबंध रखने पर महंत शी योंगक्सिन बर्खास्त

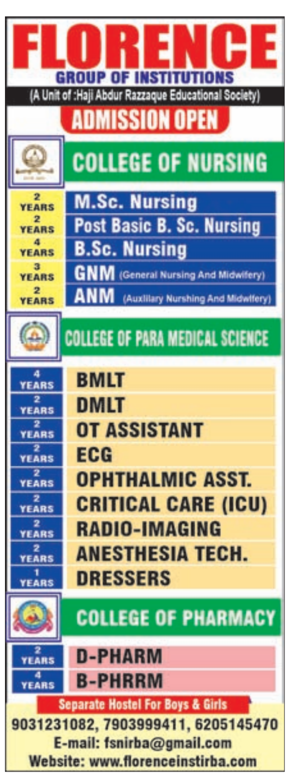

सावन में चला 'ऑपरेशन महादेव', चुन-चुन कर मार रही सेना

पहलगाम हमले का मुख्य आरोपी मूसा ढेर!

मुठभेड़ में 3 आतंकी मारे गये

- पहलगाम हमले का मुख्य आरोपी हाशिम मूसा के मारे जाने का दावा, सर्च ऑपरेशन अभी भी जारी

आजाद सिपाही संवाददाता

श्रीनगर। भारतीय सेना ने सोमवार को ऑपरेशन महादेव के तहत श्रीनगर के लिडवास इलाके में छिपे तीन पाकिस्तानी आतंकियों को ढेर कर दिया। चिनार कॉर्प्स ने सोशल मीडिया पर इसकी जानकारी दी। मारे गये आतंकियों में पहलगाम हमले का मुख्य आरोपी हाशिम मूसा भी शामिल है, जबकि दूसरा, 2024 के सोनमर्ग सुरंग प्रोजेक्ट पर हुए हमले में शामिल था। हालांकि सेना ने इसकी आधिकारिक पुष्टि नहीं की है। आतंकियों के पास से अमेरिकी एम4 कार्बाइन, एके-47 और 17 ग्रेनेड मिले हैं। कुछ और संदिग्ध सामान भी बरामद हुआ है। आर्मी प्रवक्ता ने बताया कि आतंकियों की पहचान की जा रही है।

खुफिया जानकारी पर चलाया ऑपरेशन : सेना के मुताबिक, सुबह 11 बजे खुफिया जानकारी मिलने के बाद लिडवास में सर्च ऑपरेशन चलाया गया। इस दौरान दूर से दो बार फायरिंग की आवाज सुनी गयी थी। इलाके में सुरक्षाबलों की तैनाती बढ़ा दी गयी है। पहलगाम हमले के आतंकवादियों ने जिन उपकरणों का इस्तेमाल किया था, उस से मिलते-जुलते एक तकनीकी संकेत के बाद हरवान के जंगलों में अभियान शुरू किया। लगभग 11:30 बजे 24 राष्ट्रीय राइफल्स और चार पैरा यूनिट के जवानों की एक टुकड़ी ने तीन आतंकवादियों का पता लगाया और उन पर अचानक हमला कर दिया।

26 पर्यटकों की हत्या हुई थी : 22 अप्रैल को हुए पहलगाम हमले में 26 लोगों की मौत हो गयी थी और 16 लोग गंभीर रूप से घायल हुए थे। आतंकियों ने पर्यटकों को उनकी धार्मिक पहचान के आधार पर चुन-चुनकर निशाना बनाया था। घटना पहलगाम शहर से 6 किलोमीटर दूर बायसरन घाटी में हुई थी।

मुठभेड़ में तीन आतंकियों के नाम सामने आये थे

हमले के बाद हुई जांच में तीन आतंकियों के नाम सामने आये थे। 24 अप्रैल को अनंतनाग पुलिस ने तीन स्केच जारी किये। इसमें तीन आतंकियों के नाम थे, अनंतनाग का आदिल हुसैन ठोकर, हाशिम मूसा उर्फ सुलेमान और अली उर्फ तल्हा भाई। मूसा और अली पाकिस्तानी हैं। मूसा पाकिस्तान के स्पेशल सर्विस ग्रुप में कमांडो रह चुका है। इन पर 20-20 लाख रुपये का इनाम भी रखा गया है। फिलहाल यह साफ नहीं हुआ है कि एनआइए ने जिन दो आरोपियों को गिरफ्तार किया था, उन्होंने इन्हीं तीन आतंकियों के नाम उजागर किये या किन्हीं और आतंकियों के।

लोकसभा में 'ऑपरेशन सिंदूर' पर बहस शुरू

दबाव में सीजफायर नहीं किया: राजनाथ

- रक्षा मंत्री ने कहा : परीक्षा में रिजल्ट की अहमियत, कितनी पेंसिल टूटी या पेन गुमे, यह पूछना बेमानी

आजाद सिपाही संवाददाता

नयी दिल्ली। लोकसभा में सोमवार दोपहर 2:05 बजे से 'ऑपरेशन सिंदूर' पर चर्चा शुरू हुई। रक्षा मंत्री राजनाथ ने चर्चा की शुरुआत करते हुए कहा कि हमने आतंकियों को उनके घर में घुसकर मारा। सेना ने आतंकियों से हमारी माताओं-बहनों के सिंदूर का बदला लिया। रक्षा मंत्री ने 55 मिनट के भाषण में कहा कि हमारा मकसद आतंकी ठिकाने तबाह करना था और सेनाओं ने अपना लक्ष्य हासिल किया। हमने किसी के दबाव में पाकिस्तान से सीजफायर नहीं किया। बताते चलें कि सोमवार को संसद में 11 बजे से कार्यवाही शुरू हुई थी। पहले विपक्ष ने बिहार वोटर वेरिफिकेशन से जुड़े स्पेशल इंटेसिव रिवीजन मुद्दे पर हंगामा किया। सदन को तीन बार स्थगित किया गया। इसके बाद 'ऑपरेशन सिंदूर' पर चर्चा शुरू हुई।

जरूरत पड़ी तो घर में घुसकर मारेंगे : राजनाथ सिंह ने कहा कि विपक्ष पूछ रहा है कि युद्ध में हमारे कितने फाइटर जेट गिरे? उन्होंने यह नहीं पूछा कि हमारे सशस्त्र बलों ने दुश्मनों के कितने जेट गिराये? परीक्षा में रिजल्ट की अहमियत होती है। कितनी पेंसिल टूटी या पेन गुमे, यह पूछना बेमानी है। उन्होंने कहा कि हमारी सरकार ने आतंकवाद पर जीरो टॉलरेंस की नीति पर कोई समझौता नहीं करेंगे। केंद्र में मोदी जी के नेतृत्व में सरकार बनी, तब से परिस्थितियां बदलीं। हमने उरी में सर्जिकल स्ट्राइक की।

'ऑपरेशन सिंदूर' रुका है, खत्म नहीं हुआ : राजनाथ ने कहा कि जैसा की मोदी जी ने कहा कि 'ऑपरेशन सिंदूर' रुका है, खत्म नहीं हुआ। अगर पाकिस्तान ने कोई कार्रवाई की, तो भारत इसका जवाब देगा। हमने लक्ष्मण रेखा खींच ली है। आतंकियों को शरण देने वालों पर कड़ी कार्रवाई होगी।

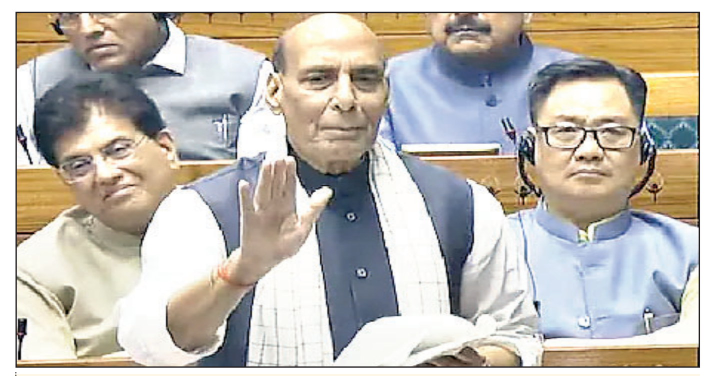

सीमा पार करना या कैप्चर करना उद्देश्य नहीं था

लोकसभा में चर्चा के दौरान रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने कहा कि सीमा पार करना या कैप्चर करना 'ऑपरेशन सिंदूर' का उद्देश्य नहीं था। कार्रवाई का मकसद सालों से पाले-पोसे जा रहे आतंकियों को निशाना बनाना था। 'ऑपरेशन सिंदूर' में सेनाओं को आजादी दी गयी कि वे लक्ष्य खुद चुनें। 10 मई की सुबह भारतीय वायुसेना ने पाकिस्तान के एयरबेस पर पर करारे हमले किये, तो उन्होंने हार मान ली। पाकिस्तान की तरफ से कहा गया कि बस बहुत हुआ, हमले रोक दीजिए। हमने बता दिया कि जरूरत पड़ी तो घर में घुसकर मारेंगे।

केंद्रीय रक्षा राज्यमंत्री को धमकी देनेवाला गिरफ्तार

- धनबाद के हरिहरपुर का रहने वाला है आरोपी नित्यानंद पाल
- कारगिल विजय दिवस पर संजय सेठ को पांच बार कॉल कर जान से मारने की धमकी दी थी

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। रक्षा राज्यमंत्री सह रांची से सांसद संजय सेठ को फोन पर जान से मारने की धमकी देने वाला युवक गिरफ्तार कर लिया गया है। आरोपी को धनबाद से गिरफ्तार किया गया। वह धनबाद के हरिहरपुर का रहने वाला है और उसकी पहचान नित्यानंद पाल के रूप में हुई है। नित्यानंद पाल की गिरफ्तारी की पुष्टि रांची पुलिस के द्वारा की गयी है। बता दें कि केंद्रीय रक्षा राज्यमंत्री संजय सेठ कारगिल विजय दिवस के अवसर पर कश्मीर में थे, उसी दौरान उनके फोन पर पांच बार कॉल कर जान से मारने की धमकी दी गयी थी। उन्होंने झारखंड के डीजीपी को मामले की जानकारी दी थी। इसके बाद झारखंड पुलिस ने टेक्निकल टीम की मदद से फोन करने वाले आरोपी की गिरफ्तारी की है।

14 अगस्त तक सहायक आचार्य नियुक्ति के सभी रिजल्ट जारी करें : सुप्रीम कोर्ट

- रिजल्ट जारी नहीं हुआ तो, 18 अगस्त को मुख्य सचिव, जेएसएससी सचिव, शिक्षा सचिव को कोर्ट में होना होगा हाजिर

आजाद सिपाही संवाददाता

नयी दिल्ली। सहायक आचार्य नियुक्ति मामले में अब तक पूरा रिजल्ट नहीं जारी करने पर सुप्रीम कोर्ट ने नाराजगी जतायी है। कोर्ट ने कहा है कि अगर 14 अगस्त तक सभी श्रेणी के कुल 26001 पदों का रिजल्ट जारी नहीं हुआ तो 18 अगस्त को झारखंड सरकार के मुख्य सचिव, जेएसएससी, शिक्षा सचिव एवं शिक्षा उपसचिव को कोर्ट में हाजिर होना होगा। सुप्रीम कोर्ट ने सहायक आचार्य नियुक्ति मामले में परिमल कुमार एवं अन्य की अवमानना याचिका पर सुनवाई करते हुए यह आदेश दिया है।

सुनवाई के दौरान प्रार्थी की ओर से कोर्ट को जानकारी दी गयी कि गणित एवं विज्ञान विषय में कक्षा 6 से 8 तक में 5008 सीट के विरुद्ध केवल 1661 अभ्यर्थियों का ही रिजल्ट जारी हुआ है, जबकि दस्तावेज वेरिफिकेशन में 2734 अभ्यर्थियों को बुलाया गया था। 400 अभ्यर्थियों को दस्तावेज वेरिफिकेशन में बुलाया गया, जिसमें कोई त्रुटि भी नहीं थी। इसके बाद भी उनका रिजल्ट जारी नहीं हुआ। गणित एवं विज्ञाना विषय में कई अभ्यार्थियों का नंबर पासिंग मार्क्स से अधिक हैं, लेकिन उन्हें दस्तावेज वेरिफिकेशन में नहीं बुलाया गया। सोशल साइंस विषय का रिजल्ट अबतक जारी नहीं हुआ है। इसके अलावा कक्षा 1 से 5 तक के लिए सहायक आचार्य का रिजल्ट जारी नहीं हुआ है।

पिछली सुनवाई में सुप्रीम कोर्ट ने मामले में झारखंड सरकार के मुख्य सचिव एवं जेएसएससी सचिव को एक माह के भीतर सहायक आचार्य नियुक्ति प्रक्रिया पूरी कर अनुपालन रिपोर्ट प्रस्तुत करने का निर्देश दिया था। सुप्रीम कोर्ट ने कहा था कि अगर अनुपालन रिपोर्ट राज्य सरकार की ओर से फाइल नहीं किया जाता है तो संबंधित जिम्मेदार अधिकारी के खिलाफ अवमानना की कार्रवाई शुरू की जायेगी। परिमल कुमार एवं अन्य की ओर से वरीय अधिवक्ता गोपाल शंकर नारायणन एवं अधिवक्ता अमृतांश वत्स ने पक्ष रखा।

19 साल की दिव्या बनीं शतरंज की वर्ल्ड चैंपियन

- एफआइडीइ वीमेंस वर्ल्ड कप 2025 का खिताब अपने नाम किया

आजाद सिपाही संवाददाता

नयी दिल्ली। भारतीय शतरंज के इतिहास में एक नया अध्याय जुड़ गया है। 19 वर्षीय दिव्या देशमुख ने एफआइडीइ वीमेंस वर्ल्ड कप 2025 का खिताब अपने नाम कर लिया है। उन्होंने दुनिया की शीर्ष महिला शतरंज खिलाड़ियों में शुमार कोनेरू हंपी को हराकर यह उपलब्धि अपने नाम किया। फाइनल मुकाबले में दोनों भारतीय दिग्गजों के बीच जबरदस्त टक्कर देखने को मिली। दोनों क्लासिकल गेम्स ड्रॉ रहे, जिसके बाद फैसला रैपिड टाइब्रेकर में हुआ। इस शानदार जीत के साथ ही दिव्या देशमुख भारत की 88वीं ग्रैंडमास्टर भी बन गयी हैं। ग्रैंडमास्टर की उपाधि शतरंज की दुनिया में सबसे प्रतिष्ठित मानी जाती है और इसे हासिल करना किसी भी खिलाड़ी के करियर की सबसे बड़ी उपलब्धियों में से एक होता है। इस जीत के बाद दिव्या को इनामी राशि के रूप में लगभग 43 लाख रुपये मिलेंगे, वहीं हंपी को करीब 30 लाख रुपये मिलेंगे।

सुप्रीम कोर्ट ने बिहार में ड्राफ्ट वोटर लिस्ट पर नहीं लगायी रोक

आयोग आधार और वोटर कार्ड शामिल करे

- बहस की तारीख आज तय करेगी सुप्रीम कोर्ट

आजाद सिपाही संवाददाता

नयी दिल्ली। सुप्रीम कोर्ट ने बिहार में मतदाता सूची के मसौदा (ड्राफ्ट वोटर लिस्ट) के प्रकाशन पर कोई रोक नहीं लगायी है लेकिन चुनाव आयोग को कहा गया है कि वो इस प्रक्रिया में आधार कार्ड और मतदाता फोटो पहचान पत्र यानी वोटर आइडी कार्ड को शामिल करे। अदालत विशेष गहन पुनरीक्षण पर बहस की तारीख अब मंगलवार को तय करेगी। बेंच ने चुनाव आयोग से कहा कि यह प्रक्रिया बड़े पैमाने पर नाम काटने के बदले नाम जोड़ने जैसी होनी चाहिए। अदालत ने याचिकाकर्ताओं के वकीलों से पूछा कि बहस के लिए कौन कितना समय लेगा।

बताते चलें कि सुप्रीम कोर्ट ने पिछली तारीख पर चुनाव आयोग से कहा था कि वो आधार कार्ड, वोटर कार्ड और राशन कार्ड को लिए जा रहे दस्तावेजों की सूची में शामिल करने पर विचार करे। चुनाव आयोग ने कोर्ट में दाखिल जवाब में कहा कि ये तीनों दस्तावेज भरोसेमंद नहीं हैं, क्योंकि इन्हें गलत तरीके से फर्जी बनाया जा सकता है। जस्टिस सूर्यकांत ने सोमवार को सुनवाई के दौरान आयोग से कहा कि दुनिया का कोई भी पेपर जाली बनाया जा सकता है।

कोर्ट ने चुनाव आयोग से कहा कि आपकी लिस्ट वाले पेपर भी निर्णायक नहीं हैं। कोर्ट ने आयोग से पूछा कि क्या वो आधार कार्ड और मतदाता फोटो पहचान पत्र स्वीकार करेगा। आयोग ने कहा कि उसे राशन कार्ड स्वीकार करने में दिक्कत है। आयोग ने कहा कि वोटर आइडी तो फॉर्म पर पहले से प्रिंटेड है और फॉर्म में वोटर को आधार नंबर भरना है। आयोग ने कोर्ट को बताया कि अदालत का ही आदेश है कि आधार कार्ड नागरिकता की पहचान का दस्तावेज नहीं है।

रांची में होटल ताज खुलने का रास्ता साफ

जमीन की लीज प्रक्रिया पूरी, नवंबर में हो सकता है शिलान्यास

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। राजधानी रांची में प्रतिष्ठित ताज होटल के निर्माण का रास्ता अब पूरी तरह साफ हो गया है। सोमवार को झारखंड सरकार के नगर विकास विभाग ने होटल ताज के निर्माण के लिए आवश्यक भूमि की लीज औपचारिक रूप से ताज ग्रुप के नाम कर दी। यह प्रक्रिया दोपहर करीब 12 बजे रजिस्ट्री कार्यालय में पूरी हुई, जहां विभाग और ताज समूह के अधिकारी मौजूद थे। ताज होटल का निर्माण धुर्वा स्थित स्मार्ट सिटी कोर कैपिटल क्षेत्र में किया जायेगा। भूमि की लीज 60 वर्षों के लिए दी गयी है। इसके एवज में ताज ग्रुप ने राज्य सरकार को 4.20 करोड़ रुपये स्टांप शुल्क और अन्य फीस के रूप में अदा किये हैं।

छह एकड़ भूमि पर बनेगा भव्य ताज होटल : ताज होटल को कुल छह एकड़ क्षेत्रफल में विकसित किया जायेगा, जिस पर लगभग 400 करोड़ रुपये की लागत आने का अनुमान है।

निर्माण कार्य अगले चार वर्षों में पूरा होने की उम्मीद है। प्रस्तावित होटल की ऊंचाई लगभग 27 मीटर होगी और यह 40 प्रतिशत ग्राउंड कवरेज में निर्मित होगा।

होटल का शिलान्यास समारोह नवंबर 2025 में आयोजित किये जाने की संभावना है, जिसे लेकर तैयारियां शुरू हो चुकी हैं। गौरतलब है कि 24 जुलाई 2024 को झारखंड सरकार और टाटा समूह की कंपनी इंडियन होटल्स लिमिटेड के बीच होटल ताज के निर्माण को लेकर समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किये गये थे। इस अवसर पर मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन और टाटा स्टील के सीइओ एवं एमडी टीवी नरेंद्रन मौजूद थे।

बिहार की सत्ता के रास्ते में 'एम' फैक्टर का रोल है अहम

■ नीतीश और लालू, दोनों को है इसी फैक्टर के सहारे मैदान जीतने की उम्मीद

■ इस 'एम' फैक्टर ने पहले भी बिहार के सियासी रण को रोमांचक बनाया है

आजाद सिपाही विशेष

बिहार के आसन्न चुनाव के मद्देनजर जो गतिविधियां अभी चल रही हैं, उनमें सबसे महत्वपूर्ण है अपने-अपने हथियारों को दुरुस्त करना, ताकि आनेवाले दिनों में इनके सहारे चुनाव मैदान में बाजी मारी जा सके। इन सियासी गतिविधियों के बीच बिहार में एक 'एम' फैक्टर है, जो हमेशा से राज्य की सत्ता का रास्ता दिखाता है। यह 'एम' फैक्टर किसी जाति या संप्रदाय, मसलन मुसलमान का सूचक नहीं है, बल्कि इस फैक्टर के तहत वे समूह शामिल हैं, जो 'एम' अक्षर से शुरू होते हैं। इस फैक्टर के साथ सबसे अहम बात यह है कि नीतीश और लालू, दोनों के पास 'एम' फैक्टर के अपने-अपने हथियार हैं। उदाहरण के लिए नीतीश के पास जहां मोदी, मंदिर, मुखिया आदि हैं, तो लालू के पास मुस्लिम और महिला जैसे फैक्टर हैं। दोनों ही गठबंधन, सत्तारूढ़ एनडीए और विपक्षी महागठबंधन अपने-अपने 'एम' फैक्टरों के हथियारों का अधिक से अधिक इस्तेमाल कर बिहार की सत्ता तक के रास्ते को तय करने की रणनीति तैयार कर रहा है। इन सबके बीच यह देखना भी बेहद दिलचस्प है कि बिहार की राजनीति में इन 'एम' फैक्टरों की कितनी अहमियत है और ये वाकई चुनाव में निर्णायक होते हैं या नहीं। लेकिन इस सवाल का जवाब का अभी देना मुश्किल है कि बिहार के आगामी चुनाव में इस 'एम' फैक्टर का कितना अहम रोल रहेगा। क्या है बिहार का 'एम' फैक्टर और नीतीश-लालू, दोनों के पास कितने 'एम' हैं, जिनके सहारे वे चुनावी वैतरणी पार करने की जुगत में हैं, बता रहे हैं **आजाद सिपाही के विशेष संवाददाता राकेश सिंह।**

राकेश सिंह

राजनीति में हर फैक्टर महत्वपूर्ण भूमिका निभाता रहा है। बात अगर बिहार की हो तो जाति वाली राजनीति में भी 'एम' फैक्टर काफी ऊपर रहता है। अगर गौर से देखा जाये, तो पिछले 35 सालों से बिहार में लालू यादव और नीतीश कुमार के इर्द-गिर्द ही राजनीति घूमती रही है। ऐसे में इन दोनों के 'एम' फैक्टर के बारे में जानना बेहद दिलचस्प हो सकता है।

पहले बात नीतीश कुमार की करते हैं। वैसे तो नीतीश कुमार का कोर वोट बैंक कोइरी-कुशवाहा है। कुर्मी वोट पर उनका एकाधिकार रहा है। हालांकि लालू यादव जातीय समीकरण के साथ मुस्लिम को जिस प्रकार से साधते रहे हैं, उसके बाद नीतीश कुमार ने एक साथ कई 'एम' फैक्टर पर काम करना शुरू किया है। कुछ पर तो नीतीश कुमार पहले से काम करते रहे हैं, जिसका उन्हें चुनाव में लाभ भी मिलता रहा है। इस बार नीतीश कुमार के पास जो 'एम' फैक्टर मौजूद हैं, वे बेहद प्रभावशाली भूमिका निभा सकते हैं।

नीतीश के 'एम' फैक्टर में पहला मंदिर

इनमें पहला है मंदिर। यह आज देश का सबसे बड़ा मुद्दा बनता जा रहा है। राम मंदिर को लेकर बीजेपी को कई राज्यों में लाभ मिला। चूंकि बिहार में भी 80% से अधिक हिंदू हैं, नीतीश कुमार और एनडीए को लगता है कि लालू यादव के जातीय समीकरण को मंदिर जैसे धार्मिक मुद्दे से ध्वस्त किया जा सकता है। बीजेपी के लिए तो पहले भी यह बड़ा मुद्दा रहा है, लेकिन अब नीतीश कुमार की पहल भी इस ओर दिख रही है। वह विधानसभा चुनाव से पहले हर हाल में मां सीता की मंदिर बनाना चाहते हैं। सीतामढ़ी के पुनौरा धाम में बनने वाले मां जानकी के मंदिर से उत्तर बिहार की 116 विधानसभा सीटों पर सीधा असर होगा। ऐसे तो यह मंदिर मुद्दा 243 सीटों पर ध्रुवीकरण में असरदार होगा। इस मंदिर के लिए नीतीश कुमार सरकार ने एक हजार करोड़ की राशि खर्च करने की घोषणा की है। कैबिनेट में 882 करोड़ की राशि मंजूर भी की है। मंदिर न्यास पर सरकार का कब्जा हो, उसके लिए सरकार ने अध्यादेश तक लाया है।

सबसे बड़ा राजनीतिक ब्रांड मोदी

नीतीश के पास जो दूसरा सबसे ताकतवर 'एम' है, उसका नाम मोदी है। मोदी आज सबसे बड़े राजनीतिक ब्रांड हैं। हर चुनाव में उनके चेहरे को आगे रखा जाता है। देश ही नहीं, दुनिया के सबसे लोकप्रिय नेता के तौर पर उनकी पहचान है। बिहार में इस साल पीएम मोदी का पांच बार दौरा हो चुका है। 85 हजार करोड़ की योजना का तोहफा वह बिहार को दे चुके हैं। चुनाव में सबसे अधिक डिमांड मोदी की होती है। नीतीश कुमार को अच्छी तरह से पता है कि हारी हुई बाजी को भी नरेंद्र मोदी पलट सकते हैं। 2020 में एनडीए की सरकार बनाने में पीएम मोदी की बड़ी भूमिका रही। इस साल भी मोदी जब भी बिहार आये हैं, नीतीश कुमार उनके साथ रहे हैं। लोगों में उनके प्रति आकर्षण और उत्साह कम नहीं हुआ है। इसलिए मोदी आज नीतीश कुमार की सबसे बड़ी जरूरत हैं। खासकर तेजस्वी यादव और विपक्ष के नेता जिस प्रकार से उनपर हमलावर हैं, मोदी का चेहरा उनके लिए नैया पार करने में बड़ा मददगार हो सकता है। इसलिए मंदिर के साथ नीतीश कुमार मोदी ब्रांड पर भी पूरा फोकस कर रहे हैं। कार्यक्रमों में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की तारीफ करते ही हैं, अब पार्टी कार्यालय में भी अपने साथ मोदी की तस्वीर लगा रहे हैं। नीतीश कुमार मोदी ब्रांड को अपने साथ जोड़ रहे हैं।

महिलाओं की ताकत भी नीतीश के पास

नीतीश कुमार के पास तीसरा 'एम' फैक्टर है महिला। यह नीतीश कुमार के लिए वरदान की तरह है। आधी आबादी का वोट सबसे अधिक नीतीश कुमार और एनडीए को मिलता है। बिहार में आधी आबादी का वोटिंग पुरुषों के मुकाबले 6% से भी अधिक होती है। यह एक बड़ा कारण है कि नीतीश कुमार महिला वोटर को लेकर इस बार भी बड़ी उम्मीद लगाये हुए हैं और लगातार बड़े फैसले ले रहे हैं। नीतीश कुमार को 2005 में सत्ता में लाने वाला सबसे बड़ा फैक्टर महिलाएं थीं। इस फैक्टर पर नीतीश कुमार शुरू से काम करते रहे हैं। पंचायत में आरक्षण से लेकर नौकरियों में आरक्षण तक का बड़ा फैसला लिया है। जीविका योजना शुरू करने के लिए विश्व बैंक से लोन तक लिया। साइकिल योजना, पोशाक योजना आधी आबादी को साधने के लिए ही लागू किया। साथ ही महिलाओं के कहने पर ही शराबबंदी भी लागू की। महिलाओं का वोट नीतीश और सहयोगियों को अधिक मिलता रहा है। जदयू-बीजेपी गठबंधन को सबसे बड़ी जीत साल 2010 में मिली थी। तब गठबंधन को 39.1 फीसदी मत मिले थे। 2015 के विधानसभा चुनाव में नीतीश कुमार ने लालू प्रसाद यादव से हाथ मिलाया और जीत दर्ज की। इस चुनाव में भी 42 फीसदी महिलाओं का वोट मिला। यानी महिलाओं का वोट नीतीश कुमार को मिले कुल वोट प्रतिशत जितना ही रहा है। यही सच्चाई इससे पहले के चुनावों में भी नजर आयी। पिछले लोकसभा चुनाव में एनडीए को महिलाओं का करीब 40% वोट मिला था।

महादलित वोट बैंक

नीतीश का चौथा 'एम' फैक्टर है महादलित वोट बैंक। बिहार में महादलितों का वोट 19% से अधिक है। ऐसे तो दलित की राजनीति करने वाले बड़े नेताओं में चिराग पासवान और जीतन मांझी हैं। इस बार दोनों एनडीए के साथ हैं। इसके बावजूद नीतीश कुमार की इस वोट बैंक पर पकड़ रही है। 2020 में चिराग पासवान के अकेले चुनाव लड़ने के कारण महादलित वोट बैंक में सेंधमारी हो गयी थी, जिसका नुकसान एनडीए को हुआ। जदयू तो कई सीटों पर चुनाव हार गया और पहली बार जदयू 43 सीट लाकर तीसरे नंबर की पार्टी हो गयी। एनडीए को किसी तरह 125 सीट आयी। महागठबंधन को भी 110 सीट मिली थी। बिहार में महादलितों में 22 जातियां हैं, जिनमें से नीतीश कुमार ने पासवान को छोड़कर 21 को शुरू में महादलित बना दिया। रामविलास पासवान के कारण पासवान को महादलित से बाहर रखा था। बाद में रामविलास पासवान के साथ ट्यूनिंग बेहतर होने पर पासवान को भी महादलित में शामिल कर लिया, तो नीतीश कुमार के लिए यह एक बड़ा वोट बैंक रहा है। पिछले दिनों नीतीश कुमार ने टोला सेवक को लेकर बड़ा फैसला लिया था।मुस्लिम वोट भी मिलता रहा है नीतीश को

मुस्लिम वोट बैंक भी बिहार में बड़ा फैक्टर रहा है। नीतीश कुमार को 2010 में 210 सीटों पर प्रचंड जीत दिलाने में इस फैक्टर की बड़ी भूमिका रही है। हालांकि 2020 में मुस्लिम का बड़ा खेमा नीतीश कुमार से इसलिए नाराज हो गया, क्योंकि नीतीश कुमार फिर से बीजेपी के साथ हो गये। अभी वक्फ कानून के लागू होने के बाद यह नाराजगी और बढ़ी है, लेकिन नीतीश कुमार इस वर्ग के लिए भी बड़े फैसले ले रहे हैं। 2020 में जदयू ने 11 मुस्लिम उम्मीदवार उतारे थे। उसमें से एक भी जीत नहीं पाया। लोकसभा चुनाव में भी किशनगंज से जदयू का मुस्लिम उम्मीदवार हार गया। बिहार विधानसभा में एनडीए की तरफ से एकमात्र मुस्लिम विधायक जमा खान हैं, जो बसपा से चुनाव जीते थे। वह बाद में जदयू में शामिल हो गये। उन्हें मंत्री भी बनाया गया है। नीतीश कुमार मुस्लिम को लेकर भी शुरू से बीजेपी के साथ रहते हुए भी अलग रुख अपनाते रहे हैं। यही कारण है कि लालू प्रसाद यादव का 'एम-वाइ' समीकरण ध्वस्त हो गया। हालांकि वक्फ कानून लागू होने के बाद से मुस्लिमों में नाराजगी है। फिर भी पसमांदा मुसलमान से नीतीश कुमार को उम्मीद है। अभी हाल ही में नीतीश कुमार ने अल्पसंख्यक आयोग और मदरसा बोर्ड का गठन भी किया है।

मुखिया भी निभाते हैं अहम भूमिका

बिहार में त्रिस्तरीय पंचायत प्रतिनिधियों में मुखिया की बड़ी भूमिका होती है। आठ हजार से अधिक पंचायत बिहार में हैं। ग्रामीण इलाकों में वोटर को अपने पक्ष में करने में मुखिया बड़ी भूमिका निभा सकते हैं। इसलिए उनकी नाराजगी दूर करने के लिए कई बड़े फैसले नीतीश कुमार ने लिये हैं। इनका पावर भी बढ़ाया गया है और मानदेय भी बढ़ा दिया गया है।

लालू के पास सबसे बड़ा 'एम' फैक्टर

जहां तक लालू के 'एम' फैक्टर का सवाल है, तो मुस्लिम वोट लालू का मजबूत किला रहा है। 1990 के दशक में जब लालू प्रसाद यादव ने बिहार की सत्ता संभाली थी, तब से लगातार मुस्लिम-यादव (एम-वाइ) समीकरण लालू प्रसाद यादव के साथ रहा। यादव के बाद लालू प्रसाद यादव की सबसे बड़ी ताकत मुस्लिम वोट बैंक ही था। बिहार के बड़े मुस्लिम चेहरा, चाहे शहाबुद्दीन हों, अब्दुल बारी सिद्दीकी हों, तस्लीमुद्दीन हों, सभी लालू यादव के साथ रहे। सभी का अपने-अपने क्षेत्र में बड़ा दबदबा था। इनके अलावा भी कई चेहरे थे। 2005 में नीतीश के सत्ता संभालने के बाद लालू के मुस्लिम वोट बैंक में बड़ा बदलाव हुआ। उसके बावजूद मुस्लिम वोट बैंक का बड़ा हिस्सा लालू यादव के साथ जुड़ा रहा है और आज भी है। नीतीश कुमार ने भले 'एम' फैक्टर के सहारे लालू यादव को घेरा, फिर भी लालू यादव नीतीश कुमार पर कई बार भारी पड़े हैं। 2020 का परिणाम इसका उदाहरण है। नीतीश उसी की काट में इस बार बड़ा गेम प्लान कर रहे हैं और कई 'एम' फैक्टर को अपने साथ जोड़ कर विधानसभा चुनाव जीतने की रणनीति उन्होंने बनायी है।

महिला फैक्टर पर भी तेजस्वी रेस

महिला फैक्टर पर तेजस्वी यादव भी काम कर रहे हैं। माई-बहिन मान योजना जैसे कई तरह के वादे कर रहे हैं। हालांकि नीतीश कुमार महिलाओं को लुभाने के लिए लगातार फैसले ले रहे हैं। कहा तो यह भी जा रहा है कि आगे आने वाले दिनों में भी कई बड़े फैसले लेंगे। ऐसे में तेजस्वी की ओर से किये गये वादे का कितना असर होता है, यह भी देखने वाली बात होगी।

सबसे बड़ा फैक्टर मजदूर

मजदूर वर्ग भी बिहार में बड़ा फैक्टर रहता है। पलायन के दर्द से बिहार जूझ रहा है। इस दर्द को भी भुनाने की कोशिश में तेजस्वी यादव जुटे हुए हैं। मजदूरों के साथ युवाओं को भी जोड़ने की कोशिश में लगे हुए हैं। कुल मिलाकर देखें तो लालू और तेजस्वी के साथ यही तीन बड़े 'एम' फैक्टर हैं। वैसे नीतीश कुमार ने 'एम' फैक्टर का बड़ा कुनबा तैयार किया है, जो भारी पड़ता दिख रहा है।

'एम' फैक्टर का राजनीतिक असर

'एम' फैक्टर को लेकर जानकारों का कहना है कि इस पर तो नीतीश कुमार शुरू से काम करते रहे हैं। इसी कारण 20 साल से वह सत्ता में है। अब कई 'एम' फैक्टर उन्होंने अपने साथ जोड़ लिया है। इस बार लालू प्रसाद यादव पर नीतीश कुमार का कई 'एम' फैक्टर भारी पड़ रहा है। इसी कारण नीतीश कुमार सत्ता में बने हुए हैं।

'टेढ़ी बतियाइयेगा तो टेढ़ी बतियायेंगे'

राजद विधायक भाई वीरेंद्र को पंचायत सचिव ने रगड़ा

आजाद सिपाही संवाददाता

पटना। बिहार में अपने बयान से कई बार बवाल और विवाद पैदा कर चुके राष्ट्रीय जनता दल के चर्चित विधायक भाई वीरेंद्र को उनके विधानसभा क्षेत्र मनेर के एक पंचायत सचिव ने हड़का दिया है। पटना जिले की मनेर विधानसभा सीट से चौथी बार विधायक बने भाई वीरेंद्र लालू यादव और तेजस्वी यादव के करीबी और राजद के बड़े नेताओं में गिने जाते हैं। भाई वीरेंद्र ने एक पंचायत सचिव को किसी मृत्यु प्रमाण पत्र को लेकर फोन किया था, जिस दौरान सिर्फ नाम बोलने से नहीं पहचान पाये पंचायत सचिव और उनके बीच प्रोटोकॉल और बात करने के तरीके पर बहस हो गयी। पंचायत सचिव भी जबर निकला और कह दिया, टेढ़ी बतियाइयेगा, तो टेढ़ी बतियायेंगे। भाई वीरेंद्र और पंचायत सचिव के बीच इस बातचीत का ऑडियो वायरल हो गया है। जाहिर तौर पर बातचीत विधायक और पंचायत सचिव के बीच की है, तो ऑडियो भी इन दोनों में ही किसी ने जारी किया है। विधायक का मूड फोन की शुरुआत में ही तब खट्टा हो गया, जब पंचायत सचिव ने 'भाई वीरेंद्र बोल रहा हूं' कहने पर उन्हें पहचानने से इनकार कर दिया। पंचायत सचिव ने दुआ-सलाम नहीं किया और कहा, 'हां बोलिये'। इस बात से विधायक भाई वीरेंद्र उखड़ गये। कहने लगे- 'बोलिये, कौन बोल रहा है रे'। तो सचिव ने पूछा- 'किनसे बात करना है आपको'। इस पर विधायक बोले- 'पंचायत सचिव से बात करना चाह रहा हूं'। सचिव बोला- 'हां, पंचायत सचिव बोल रहा हूं। बोलिए'। इसके बाद का संवाद इस तरह बिगड़ता चला गया।

बिहार चुनाव में दिखेगा हाइटेक अंदाज

'हरियाणा से आया नीतीश का 'निश्चय रथ'

आजाद सिपाही संवाददाता

पटना। बिहार चुनाव की तैयारी के लिए मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने भी कमर कस ली है। चुनाव प्रचार के लिए उनका हाइटेक रथ भी हरियाणा से आ गया है, जो कई सुविधाओं और टेक्नोलॉजी से लैस है। इसे 'निश्चय रथ' नाम दिया गया है, हालांकि दिखने में तो यह वैनिटी वैन की तरह है। रथ पर मुख्यमंत्री नीतीश कुमार की फोटो लगी है। यह रथ नीतीश सरकार के 'सात निश्चय' का संदेश देते दिख रहा है, जिस पर 'बहन-बेटियों के सपने साकार, धन्यवाद नीतीश कुमार' का स्लोगन भी लिखा हुआ है। इस रथ पर नीतीश कुमार और उनकी पार्टी जेडीयू का चुनाव चिन्ह है। भाजपा को रथ पर कोई जगह नहीं मिली है।

नीतीश के निश्चय रथ में आरामदायक और एडजस्टेबल सीटें हैं, जो लंबी यात्रा में थकान का एहसास नहीं होने देंगी। एसी और हीटर की भी सुविधा है। साथ ही हाइड्रोलिक सिस्टम भी लगा है, जिसके जरिये बस की छत पर पहुंचा जा सकता है। छत को चारों तरफ से रेलिंग के जरिये घेराबंदी है। छत पर फ्लड लाइट भी लगी है, ताकि रात में भी चुनावी कार्यक्रम किये जा सकें। रथ में प्राइवेसी का भी ख्याल रखा गया है।

जानकारी के मुताबिक निश्चय रथ का इस्तेमाल सिर्फ मुख्यमंत्री नीतीश कुमार रोड शो के दौरान करेंगे। आने वाले वक्त में चुनाव प्रचार के दौरान यह रथ बिहार के अलग-अलग विधानसभा क्षेत्रों में घूमता दिखेगा। दरअसल इस रथ के जरिये बिहार सरकार की महत्वाकांक्षी सात निश्चय योजना की उपलब्धियों को जनता के बीच पहुंचाया जायेगा। सात निश्चय में जिसमें हर घर नल का जल, हर घर शौचालय निर्माण, हर घर बिजली पहुंचाना, गली-नाली पक्कीकरण और आर्थिक हल, युवाओं को बल, महिलाओं को सशक्त करना, शहरी विकास की योजना शामिल है।

इससे पहले वीआइपी चीफ मुकेश सहनी के रथ की काफी चर्चा हुई थी। इस रथ से उन्होंने साल 2023 में निषाद आरक्षण यात्रा निकाली थी। सहनी के रथ की कीमत तीन से चार करोड़ आंकी गयी थी। इसमें राजशाही डिजाइन वाले कुर्सी-टेबल, गोल्डन प्लेट जड़ी दीवारें, महंगी लाइटिंग समेत महलों जैसी सुविधा थी।

मंगल पांडेय को मुख्यमंत्री बनायेगी भाजपा : तेजस्वी

आजाद सिपाही संवाददाता

पटना। बिहार विधानसभा चुनाव से पहले सरकार और विपक्ष के बीच माइंडगेम शुरू हो गया है। राष्ट्रीय जनता दल के नेता और विपक्षी महागठबंधन के अघोषित सीएम कैंडिडेट तेजस्वी यादव ने दावा किया है कि भारतीय जनता पार्टी समय आने पर अपने पूर्व प्रदेश अध्यक्ष और स्वास्थ्य मंत्री मंगल पांडेय को मुख्यमंत्री बनायेगी। तेजस्वी यादव ने कहा है कि डिप्टी सीएम सम्राट चौधरी और विजय कुमार सिन्हा धोखे में हैं कि भाजपा उनको सीएम पद पर बिठा देगी। बता दें कि भाजपा एनडीए का हिस्सा है और एनडीए ने अब तक मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के नेतृत्व में चुनाव लड़ने और अगली सरकार बनाने की बात कही है। तेजस्वी यादव ने सोमवार को पटना में पत्रकारों से बातचीत में दावा किया है कि भाजपा सम्राट चौधरी या विजय सिन्हा को नहीं, बल्कि पूर्व उप-मुख्यमंत्री सुशील कुमार मोदी के शिष्य मंगल पांडेय को अपना मुख्यमंत्री उम्मीदवार बनायेगी। तेजस्वी ने कहा कि उन्हें भरोसेमंद सूत्रों से पता चला है कि भाजपा की योजना मंगल पांडेय को आगे करने की है। उन्होंने इसे एनडीए की लीक हुई योजना बताया और कहा कि सम्राट चौधरी और विजय सिन्हा सिर्फ धोखा खा रहे हैं। बता दें कि चुनाव से पहले मौजूदा विधानसभा के आखिरी सत्र में तेजस्वी यादव और सम्राट चौधरी के बीच काफी तीखी नोंकझोंक हो गयी थी। तेजस्वी यादव जब एक पत्रकार द्वारा मतदाता सूची गहन पुनरीक्षण में उजागर गड़बड़ी पर बोल रहे थे, तो सम्राट चौधरी ने उस रिपोर्ट को फर्जी बताया था। इसके बाद सम्राट चौधरी ने लालू यादव का बिना नाम लिये तेजस्वी पर निशाना साधा था और कहा था कि अपराधी और लुटेरा का बेटा क्या बोलेगा।

आजाद सिपाही | झारखंड में सबसे ज्यादा देखा जाने वाला चैनल
200000 Subscribers
VIEWERSHIP 5 Crore 90 lakh+
12 Crore + Watch Time (min)
YouTube Channel
1 Channel
आजाद सिपाही Subscribe NOW

वेदर

शहर	अधिकतम	न्यूनतम
रांची	27.6 °C	23.2 °C
सूर्यास्त (आज) :		18.33 बजे
सूर्योदय (कल) :		05.17 बजे

विनोद पांडेय ने दिशोम गुरु के जल्द स्वस्थ होने के लिए किया जलाभिषेक

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। झारखंड मुक्ति मोर्चा (झामुमो) रांची जिला समिति की ओर से दिशोम गुरु शिबू सोरेन के स्वास्थ्य लाभ के लिए सोमवार को रांची के पहाड़ी मंदिर में पूजा-अर्चना और जलाभिषेक किया गया। इस अवसर पर भक्तों और श्रद्धालुओं के बीच फल-फूल और दूध का वितरण भी किया गया गया।

झारखंड मुक्ति मोर्चा के केंद्रीय महासचिव सह प्रवक्ता विनोद कुमार पांडेय की अगुवाई में पार्टी नेताओं और कार्यकर्ताओं ने पहाड़ी मंदिर में भगवान शिव का जलाभिषेक किया। संपूर्ण विधि-विधान के साथ पूजा-अर्चना की और शिबू सोरेन के स्वास्थ्य लाभ की मंगलकामना की।

झामुमो प्रवक्ता विनोद पांडेय ने कहा कि सावन की तीसरी सोमवारी पर भगवान शंकर का जलाभिषेक कर हम सभी ने गुरुजी के जल्द स्वस्थ होने के की कामना की। उन्होंने कहा कि भगवान शिव के आशीर्वाद से दिशोम गुरु शिबू सोरेन स्वस्थ होकर झारखंड लौटें और पहले की तरह ही उनका आशीर्वाद और स्नेह हम सभी झारखंडवासियों को मिले।

आयोजन को सफल बनाने में दीपक झा, विक्की यादव और अन्य कार्यकर्ताओं का अहम योगदान रहा। अनुष्ठान में मुख्य रूप से केंद्रीय सदस्य सह जिला संयोजक मंडली सदस्य पवन जेडीया, केंद्रीय सदस्य सह जिला संयोजक सदस्य अश्विनी शर्मा, जिला संयोजक मंडली सदस्य सोनू मुंडा, बीरू साहू, अरुण वर्मा, विक्की यादव, मृत्युंजय सिंह, शिवनंदन मिश्रा, प्रदीप मिर्धा, आशुतोष वर्मा, रोमा सरकार, अंकिता वर्मा, दीपक झा, विजय रविदास, निखिल, अवधेश यादव, हरीश महतो, राकेश, कुलदीपक कुमार, संतोष राणा, रवि कुमार, गौरव कुमार एवं अन्य कार्यकर्ता मौजूद थे।

भाकृअनुप- केंद्रीय चावल अनुसंधान संस्थान
कटक-753006, ओड़िशा, भारत
ICAR-CENTRAL RICE RESEARCH INSTITUTE
CUTTACK-753 006, (ODISHA), INDIA
CRRI
विज्ञापन संख्या / Advertisement No. 18/GA/AFO/2025-26 दिनांक/Date: 29.07.2025
प्रत्यक्ष साक्षात्कार हेतु सूचना/Notice for Walk-In-Interview
प्रधान अन्वेषक, **ईएपी-451** योजना के तहत सभी योग्य उम्मीदवारों को **एक (01) ग्रेजुएट असिस्टेंट** एवं **पाँच (05) कृषि क्षेत्र ऑपरेटर** के चयन हेतु को भाकृअनुप-कें.चा.अनु.सं., कटक, उड़ीसा में वॉक-इन-इंटरव्यू हेतु आमंत्रित करते है। अधिक जानकारी के लिए कृपया भाकृअनुप-कें.चा.अनु.सं., की वेबसाइट **https://icar-crri.in/walk-in-interview-3/** पर जाएं।
PI of the project **EAP-451**, invites all the eligible candidates for walk-in-interview for the post of **one (01) Graduate Assistant (GA) and five (05) Agricultural Field Operator (AFO)** at ICAR-CRRI, Cuttack, Odisha. For further details please visit to ICAR-CRRI website: **https://icar-crri.in/walk-in-interview-3/.**
प्रधान अन्वेषक/Principal Investigator

ग्रामीण विकास मंत्री ने सुनी 52 फरियादियों की समस्याएं

जनता दरबार में सिर्फ सुनवाई नहीं कार्रवाई भी होती है : दीपिका पांडेय

शिक्षा जगत में सरकार सुधार की कोशिश कर रही है तो विपक्ष को इसमें सहयोग करना चाहिए

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। प्रदेश कांग्रेस कार्यालय में ग्रामीण विकास मंत्री दीपिका पांडेय सिंह ने सोमवार को जनता दरबार का आयोजन किया। जनता दरबार में मंत्री ने लोगों की समस्याओं को सुना और समाधान के लिए संबद्ध अधिकारियों को तीव्र गति से आवश्यक कार्रवाई करने का निर्देश दिया। इस संबंध में जानकारी देते हुए प्रदेश कांग्रेस प्रवक्ता सोनाल शांति ने बताया कि मंत्री दीपिका पांडेय सिंह के समक्ष लगभग 52 फरियादियों ने अपनी समस्याओं को रखा। इसमें प्रमुख रूप से सड़क निर्माण, नियुक्ति, मंईयां सम्मान योजना, जमीन संबंधी, अबुआ आवास, हजारीबाग में पूर्व मुख्यमंत्री केबी सहाय की क्षतिग्रस्त प्रतिमा के निर्माण शामिल है। मौके पर मंत्री ने मामलों को लेकर संबंधित अधिकारियों को त्वरित संज्ञान लेकर कार्रवाई करने का निर्देश दिया।

जेपीएससी से जुड़े आये मामले

जनता दरबार के बाद मंत्री ने मीडिया से बात करते हुए कहा कि जनता दरबार में सिर्फ सुनवाई नहीं होती बल्कि कार्रवाई भी होती है। उन्होंने बताया कि पिछले जनता दरबार में एक मामला आया था जिसमें इरम परवीन नामक महिला की तीन माह की बच्ची को पति की ओर से कश्मीर ले जाने का मामला आया था। इसपर पुलिस से संज्ञान लेने का निर्देश दिया गया था। इसके बाद पुलिस ने कार्रवाई करते हुए महिला को उसकी बच्ची को वापस दिलाया। उन्होंने कहा कि जनता दरबार में कई मामले ऐसे आते हैं जिनका तत्काल निपटारा हो जाता है और कई मामले ऐसे होते जो लंबी प्रक्रिया वाले होते हैं। इसके त्वरित प्रक्रिया के लिए निर्देशित किया जाता है और उनकी निगरानी भी की जाती है। उन्होंने कहा कि कई छात्रों के मामले ऐसे आये जिसमें जेएसएससी की परीक्षाओं में अभ्यर्थी सफल हो गये, लेकिन उनके प्रमाण पत्र का सत्यापन नहीं किया जा सका है। इस संबंध में निर्देशित किया जायेगा और यह जल्द हो इसकी कोशिश की जायेगी। विधानसभा सत्र के दौरान झारखंड विश्वविद्यालय विधेयक के बारे में उन्होंने कहा कि बिल तैयार है और सदन के पटल पर रखा जाना है। इस विधेयक से क्रांतिकारी बदलाव उच्च शिक्षा में आयेगा। मंत्री ने कहा कि यदि सरकार शिक्षा जगत में सुधार की कोशिश कर रही है तो विपक्ष को इसमें सहयोग करना चाहिए। जनता दरबार में प्रदेश कांग्रेस के कार्यालय प्रभारी अभिलाष साहू, राजन वर्मा, अजय सिंह, नरेंद्र लाल गोपी, राजीव चौधरी चिंटू सहित अन्य उपस्थित थे।

कांग्रेस का पाकिस्तानी प्रेम उजागर : दीपक प्रकाश

चिदंबरम का बयान सेनाओं के बलिदान का अपमान है

कांग्रेस नेता भारत के विपक्ष की तुलना में इस्लामाबाद के वकील ज्यादा नजर आते हैं

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। झारखंड से राज्यसभा सांसद एवं भारतीय जनता पार्टी के वरिष्ठ नेता दीपक प्रकाश ने कांग्रेस नेता पी चिदंबरम द्वारा पहलगाम आतंकवादी घटना और ऑपरेशन सिंदूर पर दिये गये विवादित बयान की तीखी आलोचना करते हुए इसे राष्ट्रविरोधी मानसिकता का परिचायक बताया है।

दीपक प्रकाश ने कहा कि ऑपरेशन सिंदूर जैसे ऐतिहासिक सैन्य अभियान के तीन महीने बाद जब पूरा देश भारतीय सेना के साहस और पराक्रम का सम्मान कर रहा है, ऐसे समय में कांग्रेस नेता का बयान न केवल शर्मनाक है बल्कि सैनिकों के बलिदान के प्रति अपमानजनक भी है।

उन्होंने कहा कि पी चिदंबरम ने इंटरव्यू में कहा कि हम कैसे मान लें कि पहलगाम में मारे गये आतंकी पाकिस्तानी थे? वे भारतीय भी हो सकते हैं। यह बयान स्पष्ट रूप से पाकिस्तान के पक्ष में दिया गया है। दीपक प्रकाश ने तीखे शब्दों में कहा कि कांग्रेस अब भारत के विपक्ष से ज्यादा इस्लामाबाद की वकालत करती नजर आती है। चिदंबरम का बयान अंतरराष्ट्रीय मंचों पर पाकिस्तान का बचाव करने की सोची-समझी रणनीति का हिस्सा है। उन्होंने कहा कि जिस टीआरएफ आतंकी संगठन ने इस हमले की जिम्मेदारी ली, वह पाकिस्तान से संचालित होता है, और जांच एजेंसियों ने भी इसे पाक प्रायोजित आतंकी हमला बताया है। दीपक प्रकाश ने कहा कि जब भारतीय सेना आतंक के अड्डों को तबाह करती है, तो कांग्रेस उस पर सवाल उठाकर सैनिकों का मनोबल गिराने का कार्य करती है। यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि कांग्रेस के नेता बार-बार आतंकियों के लिए नरमी दिखाकर देश की सुरक्षा से खिलवाड़ कर रहे हैं। दीपक प्रकाश ने दो टूक कहा कि अब यह साफ हो गया है कि कांग्रेस का डीएनए राष्ट्रहित का नहीं, बल्कि राष्ट्रविरोधी ताकतों को खुश करने का है। कांग्रेस का हाथ अब खुले तौर पर आतंकवादियों के साथ नजर आ रहा है। अंत में, प्रकाश ने कहा कि भारतीय जनता पार्टी राष्ट्रवाद की राजनीति करती है और देश की सुरक्षा, सम्मान एवं संप्रभुता के लिए सदैव प्रतिबद्ध है। कांग्रेस का इतिहास और वर्तमान दोनों ही तुष्टिकरण की राजनीति और राष्ट्रविरोधी विचारधारा से प्रेरित हैं, जिसे देश अब और सहन नहीं करेगा।

राशिफल

डॉ एनके बेरा | 9431114351

मेष चिंताओं से मुक्ति, आर्थिक समस्याओं का समाधान, घर-गृहस्थी में सुख-शांति का वातावरण रहेगा।

वृष वांछित उन्नति का मार्ग प्रशस्त होगा, दीर्घकालीन योजनाओं पर धनव्यय होगा।

मिथुन नवीन योजनाएं कार्यान्वित होंगी, कर्मक्षेत्र में संतोषजनक प्रगति, चतुराई से बिगड़े हुए काम पूरे होंगे।

कर्क अपनी संकल्प शक्ति मजबूत बनाकर ही कोई काम करें, विपरीत स्थितियों में सुधार होगा।

सिंह आर्थिक-व्यावसायिक स्थितियां सामान्य रहेंगी, परिश्रम-प्रयत्न से प्रतिकूल परिस्थिति अनुकूल बनेगी।

कन्या अप्रिय स्थिति का सामना होगा, कर्मक्षेत्र में अवरोध-विरोध, विशेष परिश्रम के बाद आंशिक सफलता।

तुला कर्मक्षेत्र में परिश्रम-संघर्ष अधिक करना पड़ेगा, सामाजिक-राजनीतिक प्रभाव बढ़ेगा।

वृश्चिक हर क्षेत्र में सफलता,नवीन व्यापारिक योजना सफल, आर्थिक लाभ होगा।

धनु निराशा दूर होगी, विद्या-बुद्धि-प्रतिभा का विकास, वांछित उन्नति का मार्ग प्रशस्त होगा।

मकर नये व्यवसाय का आरंभ हो सकता है, परिवार में मांगलिक कार्य संपन्न होगा।

कुंभ राजकीय सेवा से जुड़े लोगों का स्थानातंरण होने की संभव हो सकेगा।

मीन घरेलू आवश्यकताओं पर अधिक व्यय करना पड़ेगा, मानसिक चिंता बढ़ेगी।

प्रवीण प्रभाकर बने आजसू के केंद्रीय उपाध्यक्ष, दीपक और संजय महासचिव

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। आजसू के वरिष्ठ नेता प्रवीण प्रभाकर को आजसू पार्टी का केंद्रीय उपाध्यक्ष बनाया गया है, जबकि दीपक महतो को केंद्रीय महासचिव और संजय मेहता को केंद्रीय महासचिव सह प्रवक्ता नियुक्त किया गया है। आजसू पार्टी के केंद्रीय सुदेश महतो ने संगठन विस्तार करते हुए सोमवार को पार्टी के युवा आजसू और छात्र आजसू के कई पदों पर नये पदाधिकारियों की नियुक्ति की। इस मौके पर सुदेश ने नये पदाधिकारियों को शुभकामनाएं भी दी। पार्टी के प्रधान महासचिव रामचंद्र सहिस ने नये पदाधिकारियों की नियुक्ति की घोषणा करते हुए बताया कि बसंत महतो, कुमुद वर्मा और चंद्रशेखर सिंह छोटू को केंद्रीय सचिव बनाया गया है। मुन्नू अख्तर को हजारीबाग जिला सचिव बनाया गया है। वहीं ऋतुराज शाहदेव को आजसू छात्र संघ का केंद्रीय वरीय उपाध्यक्ष बनाया गया है, जबकि मो कैफ को युवा आजसू का दक्षिणी छोटानागपुर सह प्रभारी एवं संजय साहू को रांची जिला सचिव के पद पर नियुक्त किया गया है। सहिस ने आशा व्यक्त की कि उपरोक्त नियुक्तियों से संगठन को मजबूती मिलेगी और नये पदाधिकारी पार्टी को नयी दिशा में ले जाने में अपना प्रगतिशील नेतृत्व प्रदान करेंगे। प्रवीण प्रभाकर सहित सभी नवनियुक्त पदाधिकारियों को पार्टी के सांसद चंद्रप्रकाश चौधरी, विधायक निर्मल महतो, पूर्व विधायक डॉ लंबोदर महतो, केंद्रीय उपाध्यक्ष हसन अंसारी, मुख्य प्रवक्ता डॉ देवशरण भगत, बुद्धिजीवी मंच के अध्यक्ष डोमन सिंह मुंडा, प्रधान महासचिव मुकुंद मेहता, हरेलाल महतो, संतोष महतो सहित अन्य नेताओं ने बधाई दी है।

राज्य में महिला अत्याचार पर घड़ियाली आंसू बहा रही कांग्रेस : राफिया नाज

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। भाजपा प्रदेश प्रवक्ता राफिया नाज ने कहा कि झारखंड प्रदेश कांग्रेस की महिला अध्यक्ष द्वारा राज्यपाल से जाकर महिला आयोग के गठन की मांग करना पूरी तरह से घड़ियाली आंसू बहाने जैसा है। यह आश्चर्यजनक है कि राज्य में कांग्रेस खुद सत्ता में भागीदार है झारखंड मुक्ति मोर्चा, कांग्रेस और इंडिया एलायंस की सरकार चल रही है। इसके बावजूद महिला आयोग जैसे महत्वपूर्ण संवैधानिक निकाय का गठन अब तक नहीं किया गया है।

प्रदेश प्रवक्ता राफिया नाज ने कड़ी निंदा करते हुए कहा कि यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि महिलाओं की सुरक्षा, उनके अधिकारों और न्याय की झूठी बात करने वाली कांग्रेस पार्टी अपनी सरकार में ही महिलाओं को उनका हक दिलाने में विफल रही है। आज जब राज्य में महिलाओं के खिलाफ अपराध बढ़ते जा रहे हैं, आये दिन दुष्कर्म,अपहरण और छेड़खानी हो रही तब महिला आयोग का गठन न होना सरकार की असंवेदनशीलता को दर्शाता है।

राफिया नाज ने कहा कि कांग्रेस को यह स्पष्ट करना चाहिए कि सत्ता में रहते हुए महिला आयोग के गठन में देरी क्यों हो रही है। क्या यह सिर्फ एक दिखावा है या फिर महिलाओं के मुद्दों पर पार्टी की कोई वास्तविक प्रतिबद्धता नहीं है?

उन्होंने सवाल उठाया कि जब कांग्रेस की महिला अध्यक्ष को ही अपनी सरकार से उम्मीद नहीं है और उन्हें राज्यपाल के पास गुहार लगानी पड़ रही है, तो आम महिलाओं की आवाज कौन सुनेगा?

रांची सिविल कोर्ट ने भैरव सिंह को नहीं दी बेल, जमानत याचिका खारिज

रांची (आजाद सिपाही)। रांची सिविल कोर्ट ने हिंदूवादी नेता भैरव सिंह को जमानत देने से इनकार कर दिया है। सोमवार को भैरव सिंह की जमानत याचिका पर सुनवाई हुई। सुनवाई के दौरान भैरव सिंह की ओर से उपस्थित अधिवक्ता कीर्ति सिंह ने जमानत दिये जाने का आग्रह किया और अपनी बहस में कहा कि उनके मुवक्किल को बेवजह आरोपी बनाया गया है, वहीं सूचक की ओर से उपस्थित अधिवक्ता अमन कुमार राहुल ने यह दलील दी कि भैरव सिंह के विरुद्ध रांची के कई थानों में मुकदमा दर्ज है और इस मामले में उसकी भूमिका है, इसलिए उसे जमानत नहीं दी जानी चाहिए। दोनों पक्षों की दलील सुनने के बाद कोर्ट ने भैरव सिंह की जमानत याचिका खारिज कर दी। दरअसल पिछले दिनों चुटिया थाना क्षेत्र के सुजाता चौक स्थित बिग बाजार इलाके में पार्किंग ठेकेदारी को लेकर हुए विवाद और सड़क पर हुई मारपीट के मामले में हिंदूवादी नेता भैरव सिंह को गिरफ्तार किया गया है। इस संबंध में रांची के चुटिया थाना में कांड संख्या 125/2025 दर्ज है।

इस बार श्रीकृष्ण जन्माष्टमी महोत्सव ऐतिहासिक होगा : संजय सेठ

16 और 17 अगस्त को अल्बर्ट एक्का चौक पर होगा श्री कृष्ण जन्माष्टमी उत्सव

श्री कृष्ण जन्मोत्सव समिति के महोत्सव कमेटी का गठन

कमेटियों के संयोजक और सहयोगियों को दी गयी कार्यों की जिम्मेवारी

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। श्री कृष्ण जन्मोत्सव समिति के सानिध्य में 16 आ 17 अगस्त को अल्बर्ट एक्का चौक में श्री कृष्ण जन्माष्टमी महोत्सव बड़े धूम धाम से मनाया जायेगा। श्री कृष्ण जन्मोत्सव समिति के संरक्षक सह रक्षा राज्य मंत्री संजय सेठ व संरक्षक अजय मारू और समिति के अध्यक्ष मुकेश काबरा ने बताया कि आयोजन को बड़े ही धूमधाम से मनाने का निर्णय लिया गया है, साथ ही सोमवार को बैठक कर कमेटी का विस्तार भी किया गया। आयोजन की सफलता के लिए सदस्यों के बीच कार्यों का वितरण कर उनको विभागीय जिम्मेवारी दी गयी। संरक्षक रक्षा राज्य मंत्री संजय सेठ, संरक्षक विधायक सीपी सिंह, पूर्व सांसद अजय मारू हैं। वहीं आयोजन समिति के अध्यक्ष मुकेश काबरा रहेंगे। स्वागत समिति में पुनीत पोद्दार, छवि विरमानी, राजीव चटर्जी, ललित केजरीवाल, प्रकाश धेलिया, प्रतीक मोर, पवन बजाज, मनीष साहू, राम कुमार कुंवर, राजा घोष, शंकर दुबे, परामर्श समिति में चंद्रकांत रायपत, ऐश्वर्या सेठ, जवाहर तनेजा, संजीव विजयवर्गीय, आशीष भाटिया, संयोजक कुणाल आजमानी, महासचिव रविंद्र मोदी, सचिव रमेंद्र कुमार, कोषाध्यक्ष राम बांगड़, दही हांडी फोडो प्रतियोगिता राज वर्मा, नीरज चौधरी, भीष्म सिंह, ललन श्रीवास्तव, प्रमोद सारस्वत, मनोज कुमार, विजय ओझा, मनोज तिवारी, रवि मुंडा, सबलू मुंडा बबलू चौधरी, आनंद वर्मा, सतीश कुमार, रामलखन राम, मंच व पुष्प सज्जा रामाशंकर बागड़िया, संतोष सेठ, प्रेस मीडिया प्रमोद सारस्वत, संजय पोद्दार, मंच सुरक्षा सतेंद्र सिंह (गुड्डू), विकास कुमार (रवि), अमित सिंह, झांकी और साज सज्जा नीरज कुमार, राज वर्मा, बबलू चौधरी, संजीव साहू, विजय यादव, अजय वर्मा, विवेक गुप्ता, पुरस्कार संग्रह अमित चौधरी, यश पोद्दार, प्रचार-प्रसार व एलइडी आनंद श्रीवास्तव, संजय जायसवाल, प्रज्ञा मणि, वीरेंद्र कुमार, दीपक कुमार, प्रशासक व प्रशासन राम बांगड़, ललित ओझा, प्रदीप कुमार, राहुल सिंहा (चंकी), चिकित्सा और आवास नीरज कुमार(रिम्पी),राजेश गुप्ता, नरेंद्र लाखोटिया, विवेक गुप्ता, मंच संचालक राजश्री, सेवा प्रकल्प मनीष लोधा, वीरेंद्र गुप्ता, अरुण कपूर (कालू) विनय मंत्री, प्रेमचंद श्रीवास्तव (लाला जी), अमर प्रसाद, विकास कुमार, साउंड रमेंद्र कुमार, राजीव वर्मा, भजन प्रभारी जुगल दरगड़, गौरव काबरा लाइट व जेनरेटर संजय सिंह, बैजू सोनी, राजू रजक, बाल गोपाल प्रतियोगिता पूनम आनंद, कुमुद झा, नीलम चौधरी, नीतू सिंह, गोविंदा टीम और बाल गोपाल रजिस्ट्रेशन सतीश सिन्हा, राजेंद्र केडिया, स्टाप वाच और मटकी संचालन विपिन वर्मा, राजीव सहाय, निर्णायक मंडली, समाचार पत्रों के संपादक, आयोजन स्थल और टेंट व्यवस्था नीरज कुमार, कवलजीत सिंह (शंटी) मनोज कुमार, अशोक पुरोहित, संजय गोयल, सोनू भारद्वाज, गौत्तम देव बनाये गये।

पूर्व नक्सली कुंदन पाहन साक्ष्य के अभाव में अदालत से बरी

कुंदन पर अपहरण, लूट, हत्याकांड जैसे 100 से अधिक मामले हैं दर्ज

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। रांची सिविल कोर्ट ने सोमवार को पूर्व नक्सली कुंदन को पाहन को साक्ष्य अभाव में बरी कर दिया है। कुंदन पाहन पर पुलिस टीम पर हमला करने का आरोप था। 24 अक्टूबर 2009 को यह घटना हुई थी। रांची सिविल कोर्ट ने सरेंडर के बाद जेल में बंद पूर्व नक्सली कुंदन पाहन को पुलिस की टीम पर हमला करने के मामले में साक्ष्य के अभाव में बरी कर दिया है। सिविल कोर्ट के अपर न्यायायुक्त संजीव झा की कोर्ट में सुनवाई हुई। सुनाई के बाद अलातल ने कुंदन को बरी कर दिया। अभियोजन पक्ष की ओर से अदालत में 2 गवाह पेश किये गये, जबकि कुंदन पाहन की ओर से अधिवक्ता ईश्वर दयाल ने पक्ष रखा। पुलिस में दर्ज प्राथमिकी के मुताबिक पुलिस टीम पर जानलेवा हमले की यह घटना 24 अक्टूबर 2009 की है। पुलिस को सूचना मिली थी कि जोन्हा फॉल के पास उग्रवादी किसी बड़ी घटना को अंजाम देने वाले हैं। सूचना पर मूरी ओपी और अनगड़ा थाना की पुलिस वहां पहुंची। इसी दौरान पुलिस और नक्सलियों के बीच फायरिंग शुरू हो गयी। पुलिस को भारी पड़ता देख लक्सली भाग गये। पुलिस ने मौके से विस्फोटक और हथियार बरामद किया था। इस संबंध में रांची के अनगड़ा थाना में कुंदन पाहन सहित अन्य के विरुद्ध कांड संख्या 61/2009 दर्ज की गयी थी।

उल्लेखनीय है कि मामले में कई नक्सली पहले ही बरी हो चुके हैं। कुंदन पाहन 14 मई 2017 से जेल में बंद है। उसने झारखंड पुलिस के समक्ष खुद को सरेंडर किया था। कुंदन पर अपहरण, लूट, हत्याकांड जैसे 100 से अधिक मामले विभिन्न थानों में दर्ज हैं। उस वक्त बुंडू,

दक्षिण पूर्व रेलवे - निविदा
निविदा सं. एडीईई-जी-कन्सील्ड-25-04-आर1, दिनांक 25.07.2025, भारत के राष्ट्रपति की ओर से एवं उनके लिए, उप मुख्य विद्युत सेवा अभियंता, दक्षिण पूर्व रेलवे, गार्डन रीच, कोलकाता-700043 द्वारा निम्नलिखित कार्य के लिए दिनांक 18.08.2025 को 15.00 बजे से पूर्व ई-निविदा आमंत्रित की जाती है। **कार्य का विवरण :** सब स्टेशन नं. 6 और 8 गार्डन रीच, दक्षिण पूर्व रेलवे में अग्नि सुरक्षा अनुशंसा को लागू करने के लिए विभिन्न प्रशासनिक भवनों और सेंट्रल हॉस्पिटल में सहायक उपकरणों के साथ कन्सील्ड वायरिंग के प्रावधान के लिए विद्युत कार्य और बिजली आपूर्ति व्यवस्था में वृद्धि। **निविदा मूल्य:** रु. 7,06,07,277.24 लागू अनुसार जीएसटी सहित। **बयाना राशि:** रु. 5,03,000/-, **निविदा कागजात का मूल्य :** शून्य। **अंतिम तिथि:** दिनांक 18.08.2025 को 15.00 बजे। **कार्य की समापन अवधि:** एलओए जारी करने की तिथि से 12 माह। इच्छुक निविदाकार निविदा के संपूर्ण विवरण, वर्णन और विनिर्देश के लिए वेबसाइट www.ireps.gov.in देख सकते हैं एवं अपनी बोली ऑनलाइन जमा कर सकते हैं। किसी भी स्थिति में इन कार्यों के लिए मैनुअल निविदाएँ स्वीकार नहीं की जाएंगी। **द्रष्टव्य:** प्रत्याशित बोलीदाता सभी निविदाओं में भाग लेने के लिए www.ireps.gov.in नियमित रूप से देख सकते हैं। (PR-446)

शोणित फाउंडेशन के अध्यक्ष अरविंद कुमार झा को यूएसए की यूनिवर्सिटी से मिली डॉक्टरेट की उपाधि

बरलिंगटन स्टेट यूनिवर्सिटी, यूएसए ने डॉक्टरेट ऑफ फिलॉसफी इन हेल्थ केयर एंड सोशल सर्विस की उपाधि से किया सम्मानित

25 वर्षों में स्वास्थ्य सेवा, रक्तदान अभियान और समाज की सेवा में किये गये अनुकरणीय योगदान के लिए मिला सम्मान

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। रक्तदान एवं सामाजिक सेवा के क्षेत्र में दो दशकों से अधिक समय से सक्रिय शोणित फाउंडेशन के अध्यक्ष एवं वरिष्ठ समाजसेवी अरविंद कुमार झा को बरलिंगटन स्टेट यूनिवर्सिटी, यूएसए द्वारा डॉक्टरेट ऑफ फिलॉसफी इन हेल्थ केयर एंड सोशल सर्विस की मानद उपाधि से सम्मानित किया गया है। यह सम्मान उन्हें 27 जुलाई को नयी दिल्ली स्थित इंडिया हैबिटेट सेंटर में आयोजित इंटेलेक्चुअल कॉन्क्लेव - 2025 के तहत एक गरिमामय समारोह में प्रदान किया गया। यह सम्मान उनके द्वारा पिछले 25 वर्षों में स्वास्थ्य सेवा, रक्तदान अभियान और समाज के वंचित वर्गों की सेवा में किये गये अनुकरणीय योगदान के लिए प्रदान किया गया है। समारोह में देश-विदेश से आये शिक्षाविदों, समाजसेवियों, नीति विशेषज्ञों और युवाओं की उपस्थिति में यह घोषणा हुई, जिसे उपस्थित जनसमूह ने खड़े होकर सम्मानित किया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में प्रो डॉ दिनेश शर्मा संसद सदस्य (राज्यसभा) पूर्व उपमुख्यमंत्री, पूर्व उच्च शिक्षा मंत्री उत्तर प्रदेश। कार्यक्रम अध्यक्ष : जेसन हॉल, उच्चायुक्त भारत में जमैका दूतावास। गेशान दिसानायके मंत्री परामर्शदाता (वाणिज्यिक) नयी दिल्ली स्थित श्रीलंका उच्चायोग। अतिथि के रूप में राजीव शर्मा, आइएएस (सेवानिवृत्त) पूर्व आयुक्त, सहडोल, सीबी तिवारी, उप सचिव गृह मंत्रालय भारत सरकार, प्रमोद सोनकर, अतिरिक्त उप पुलिस आयुक्त, इंदौर मध्य प्रदेश, अलका सोनकर, अधीक्षक इंदौर केंद्रीय कारागार, डॉ पीके राजपूत पूर्व वरिष्ठ उपाध्यक्ष, कैडिला फार्मा लिमिटेड, एलेना बर्मन, संस्थापक एवं अध्यक्ष भारतीय रूसी हमवतन संघ (आइएआरसी) डॉ. विक गैफनी विधि विद्वान, ऑस्ट्रेलिया (विश्वविद्यालय प्रतिनिधि), डॉ पुनीत कुमार द्विवेदी समूह निदेशक इंदौर/ऑक्सफोर्ड अंतरराष्ट्रीय महाविद्यालय। डॉ नेहा शर्मा, प्राचार्य इंदौर/ऑक्सफोर्ड अंतरराष्ट्रीय महाविद्यालय, कगुना फिलिप प्रबंध निदेशक एनवायरोप्लस प्राइवेट लिमिटेड, ज़िम्बाब्वे शामिल थे।

स्वास्थ्य और समाज सेवा का समर्पित सफर

अरविंद कुमार झा ने 1990 के दशक के उत्तरार्ध में रक्तदान को एक सामाजिक आंदोलन का रूप देने की दिशा में काम शुरू किया था। उन्होंने शोणित फाउंडेशन के माध्यम से देश के कई हिस्सों में निःशुल्क रक्तदान शिविरों का आयोजन किया। इन शिविरों ने न केवल हजारों जरूरतमंदों को जीवनदायी रक्त उपलब्ध कराया, अनगिनत लोगों की जान बचाने में मदद की। समाज में रक्तदान को लेकर फैली गलत धारणा को दूर करने का भी कार्य किया। उन्होंने विद्यालयों, महाविद्यालयों और ग्रामीण क्षेत्रों में जागरूकता अभियान चलाकर युवाओं को रक्तदान की ओर प्रेरित किया। उनका मानना रहा है कि रक्तदान केवल दान नहीं, एक जिम्मेदारी है। इस दृष्टिकोण से उन्होंने सामाजिक मानसिकता में सकारात्मक बदलाव लाने का प्रयास किया। एक ब्लड बैंक संचालक के रूप में श्री झा ने आधुनिक चिकित्सा उपकरणों और डिजिटल प्रबंधन प्रणाली को अपनाकर रक्त की गुणवत्ता जांच, संग्रहण और वितरण प्रणाली को पारदर्शी और भरोसेमंद बनाया। इसके परिणामस्वरूप अस्पतालों और मरीजों को विश्वसनीय रक्त आपूर्ति सुनिश्चित हुई है। उनकी अगुवाई में शोणित फाउंडेशन ने दुर्गम क्षेत्रों में रक्त की उपलब्धता बढ़ाने के लिए मोबाइल ब्लड यूनिट्स की शुरूआत की, जिससे समय पर रक्त पहुंचाया जा सके।

सामाजिक चेतना और युवाओं को प्रेरणा

श्री झा का जीवन और कार्यशैली आज युवाओं के लिए प्रेरणा का स्रोत बन चुकी है। उन्होंने यह सिद्ध किया कि सामाजिक परिवर्तन सरकारी तंत्र का मोहताज नहीं, बल्कि नागरिकों की पहल से भी संभव है। उनकी संस्था ने न सिर्फ रक्तदान बल्कि स्वास्थ्य जांच, अंगदान जागरूकता, महिला स्वास्थ्य और पोषण जैसे विषयों पर भी प्रभावी कार्यक्रम संचालित किये हैं। उनकी इसी सामाजिक प्रतिबद्धता और नवाचारों को देखते हुए बरलिंगटन स्टेट यूनिवर्सिटी ने उन्हें यह प्रतिष्ठित मानद उपाधि प्रदान की।

अरविंद कुमार झा को मिली यह मान्यता केवल उनकी उपलब्धियों की स्वीकृति नहीं, बल्कि उन हजारों स्वयंसेवकों और रक्तदाताओं की भी सराहना है जो शोणित फाउंडेशन के साथ जुड़े हैं। यह सम्मान देश के लिए गर्व का विषय है और यह दर्शाता है कि स्थानीय स्तर पर किया गया सकारात्मक कार्य वैश्विक मान्यता पा सकता है।

महत्वपूर्ण खबरें

मिराये एसेट एग्रेसिव हाइब्रिड फंड के दस वर्ष पूरे होने का मना जश्न

रांची (आजाद सिपाही)। मिराये एसेट म्यूचुअल फंड की प्रमुख योजना-मिराये एसेट एग्रेसिव हाइब्रिड फंड ने अपने 10 वर्ष सफलतापूर्वक पूरे कर लिये हैं। यह योजना अपने शानदार प्रदर्शन के लिए निवेशकों के बीच अत्यंत लोकप्रिय रही है। इस अवसर पर सोमवार को बरियातू मेडिकल चौक स्थित पीएमपीके वेल्थ प्राइवेट लिमिटेड के नये कार्यालय में केक काटा गया। इस अवसर को सेलिब्रेट करते हुए पीएमपीके वेल्थ प्राइवेट लिमिटेड के निदेशक प्रदीप जैन ने बताया कि इस योजना में दस हजार प्रतिमाह की एसआइपी करने वाले निवेशकों का इस योजना से पिछले पांच वर्षों में 8.52 लाख और 10 वर्ष में 24.15 लाख की रकम बन गयी है। इसी प्रकार एक लाख एक मुश्त रकम का निवेश करने वाले निवेशकों ने पिछले पांच वर्ष में 2.15 लाख और दस वर्ष में 3.25 लाख के धन का निर्माण किया है। मिराये एसेट म्युचुअल फंड के रीजनल मैनेजर राजेश कुमार ने कहा कि इस योजना के तहत 65 से 80 प्रतिशत रकम को इक्विटी में निवेश किया जाता है और 20-35 प्रतिशत रकम को फिक्स्ड इनकम वाली प्रतिभूतियों में निवेशित किया जाता है। पीएमपीके वेल्थ के निदेशक देवेश जैन ने बताया कि यदि दस साल पहले किसी निवेशक ने इस योजना में 15 लाख रुपये का निवेश करके दस हजार रुपये प्रतिमाह सिस्टमेटिक निकासी का लाभ 120 महीनों से लेता चला आ रहा है। आज कुल 12 लाख की निकासी करने के बाद भी उसका निवेश बढ़ कर 24.50 लाख रुपया हो गया है। ऐसी अनेक लाभदायी योजनाओं का लाभ ज्यादा से ज्यादा निवेशकों तक पहुंचाने के लिए पीएमपीके वेल्थ ने अपनी एक शाखा बरियातू रोड के मेडिकल चौक पर खोली है। यहां म्युचुअल फंड के जोखिम और लाभ के बारे में प्रशिक्षण देने के साथ-साथ बीमा निवेश के माध्यम से कैसे आर्थिक नियोजन किया जाता है। इसका भी उचित प्रशिक्षण दिया जायेगा। पीएमपीके वेल्थ के कमलेश कुमार ने बताया कि मिराये एसेट म्युचुअल फंड निवेशकों का दो लाख करोड़ से अधिक के धन का प्रबंधन कर रही है, और पिछले 15 वर्षों में स्वरूप मोहंती के नेतृत्व में और निलेश सुराना के कुशल धन प्रबंधन के कारण कंपनी दिन दूनी रात चौगुनी तरक्की कर रही है।

डीपीएस और डीएवी नंदराज को मिला प्रथम पुरस्कार

रांची (आजाद सिपाही)। भारत विकास परिषद के तत्वावधान में सोमवार को राष्ट्रीय समूहगान प्रतियोगिता का आयोजन जेवीएम श्यामली में संपन्न हुआ। इस आयोजन का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों में राष्ट्रभक्ति, सांस्कृतिक एकता, अनुशासन और सामाजिक समरसता की भावना को संगीत के माध्यम से प्रोत्साहित करना था। प्रतियोगिता में रांची के विभिन्न प्रतिष्ठित विद्यालयों ने भाग लिया। दिल्ली पब्लिक स्कूल और डीएवी नंदराज ने संयुक्त रूप से प्रथम स्थान प्राप्त किया। सरला बिरला पब्लिक स्कूल को द्वितीय तथा जेवीएम श्यामली को तृतीय स्थान प्राप्त हुआ। कार्यक्रम के दौरान छात्रों ने पूरे उत्साह, अनुशासन और भावनात्मकता के साथ राष्ट्रभक्ति गीतों की प्रस्तुति दी। इससे संपूर्ण वातावरण देशभक्ति से सराबोर हो गया। मुख्य अतिथि स्वामी भावेशानंद, सचिव रामकृष्ण मिशन रांची और विशिष्ट अतिथि जटाशंकर चौधरी पूर्व प्रमंडलीय आयुक्त पलामू मौजूद थे। भारत विकास परिषद के पदाधिकारियों ने सभी विजयी प्रतिभागियों को बधाई देते हुये कहा कि इस प्रकार की प्रतियोगितायें न केवल विद्यार्थियों की संगीत प्रतिभा को मंच देती हैं, बल्कि उन्हें भारतीय संस्कृति, राष्ट्रप्रेम और सामाजिक उत्तरदायित्व से भी जोड़ती हैं। इस प्रतियोगिता का दीर्घकालिक उद्देश्य नई पीढ़ी में राष्ट्रीय एकता, सांस्कृतिक गौरव और राष्ट्रनिर्माण की भावना को प्रोत्साहित करना है। परिषद का मानना है कि युवा ही राष्ट्र की रीढ़ हैं और ऐसे आयोजनों से उनमें कर्तव्यबोध, अनुशासन और जागरूक नागरिकता के गुण विकसित होते हैं।

परीक्षा समाप्त होते ही एक महीने में रिजल्ट जारी हो : राज्यपाल

राज्यपाल-सह-कुलाधिपति ने राज्य के विभिन्न विश्वविद्यालयों के कुलपतियों के साथ उच्चस्तरीय समीक्षा बैठक की

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। राज्यपाल- सह-कुलाधिपति संतोष कुमार गंगवार ने सोमवार को राजभवन में राज्य के विभिन्न विश्वविद्यालयों के कुलपतियों के साथ उच्चस्तरीय समीक्षा बैठक की। राज्य की उच्च शिक्षा व्यवस्था को सुदृढ़ और गुणवत्तापूर्ण बनाने के लिए कई निर्देश दिये गये। राज्यपाल ने कहा कि विश्वविद्यालयों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, समयबद्ध परीक्षा आयोजन, परिणाम प्रकाशन एवं शैक्षणिक कैलेंडर के कठोर अनुपालन को सुनिश्चित करना होगा। परीक्षा समाप्ति के एक माह के भीतर परिणाम घोषित कर देना अनिवार्य हो। उन्होंने प्रत्येक विश्वविद्यालय को समयबद्ध दीक्षा समारोह आयोजित करने का निर्देश भी दिया। राज्य में सकल नामांकन अनुपात वर्तमान में राष्ट्रीय औसत से लगभग 10 प्रतिशत कम है। इसके लिए विशेष रूप से ग्रामीण और दूरदराज क्षेत्रों में नामांकन बढ़ाने की दिशा में ठोस प्रयास करने की जरूरत है। राज्यपाल ने कहा कि कुलपति केवल प्रशासक नहीं, बल्कि शैक्षणिक नेतृत्वकर्ता होते हैं। उनके दृष्टिकोण और प्रयास राज्य की उच्च शिक्षा को नयी दिशा दे सकते हैं। कुछ शिक्षकों की कक्षा न लेने की मिलती हैं शिकायतें उन्होंने पीएचडी शोध की गुणवत्ता, मौलिकता एवं नवाचार पर विशेष ध्यान देने का निर्देश दिया। उन्होंने कहा कि कुछ शिक्षकों की कक्षा न लेने की शिकायतें प्राप्त हुई हैं, ये गंभीर विषय है। सभी शिक्षक नियमित रूप से कक्षाएं लें और कुलपति स्वयं भी कक्षा लेकर प्रेरणा का कार्य करें। उन्होंने विश्वविद्यालयों से रैंकिंग में सुधार हेतु ठोस प्रयास करने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि अब समस्या नहीं, समाधान पर चर्चा करें और झारखंड को उच्च शिक्षा में देश के अग्रणी राज्यों में स्थान दिलाएं। वित्तीय अनुशासन, पारदर्शिता एवं उत्तरदायित्व सुनिश्चित करने के लिए सभी विश्वविद्यालयों को समय पर वित्तीय अंकेक्षण कर उसकी प्रति राज भवन को भेजने के निर्देश दिये। बैठक में क्रय-विक्रय एवं प्रशासनिक कार्यों में पारदर्शिता और भ्रष्टाचार के प्रति पूर्ण जीरो टोलरेंस अपनाने की बात कही गयी। उन्होंने ऑनलाइन फीडबैक प्रणाली लागू कर विद्यार्थियों से नियमित प्रतिक्रिया लेने की बात भी कही। आवश्यकता आधारित शिक्षकों का स्थानांतरण नहीं किया जाना चाहिए, जो जहां के लिए नियुक्त हुए हैं, वहीं रहेंगे। राज्यपाल ने कहा कि सेवानिवृत्त शिक्षकों एवं कर्मियों को हर माह की 5 तारीख तक पेंशन हर हाल में मिल जानी चाहिए। राज्यपाल ने कुलपतियों से आह्वान किया कि वे दूरदर्शिता, सक्रियता और विवेकपूर्ण निर्णयों के माध्यम से झारखंड की उच्च शिक्षा व्यवस्था को राष्ट्रीय मानकों के अनुरूप विकसित करें। उन्होंने स्पष्ट कहा कि लगभग तीन माह बाद पुनः समीक्षा बैठक आयोजित की जायेगी। जिसमें इन कार्यों की प्रगति का मूल्यांकन किया जायेगा।

चाणक्या आइएएस एकेडमी का तीन वर्षीय प्रोग्राम, युवाओं के लिए एक सुनहरा अवसर

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। चाणक्या आइएएस अकादमी ने झारखंड के युवाओं के लिए सिविल सेवा की तैयारी के लिए तीन वर्षीय विशेष प्रोग्राम शुरू किया है। यह कार्यक्रम विशेष रूप से उन छात्रों के लिए तैयार किया गया है। जिन्होंने हाल ही में 10+2 की परीक्षा पास की है और कॉलेज में दाखिला लिया है। इसका उद्देश्य युवाओं को कम उम्र में सिविल सेवा परीक्षा के लिए तैयार करना है, ताकि वे 21-22 वर्ष की आयु में ही आइएएस, आइपीएस, आइआरएस जैसे प्रतिष्ठित पदों पर चयनित हो सकें। इस कार्यक्रम की शुरुआत 31 जुलाई से होगी। छात्र कॉलेज की पढ़ाई के साथ-साथ चाणक्या अकादमी से सिविल सेवा की तैयारी कर सकेंगे, जिससे उन्हें दोहरा लाभ मिलेगा। एक ओर वे समय से अपने करियर की दिशा तय कर पायेंगे, वहीं दूसरी ओर उन्हें कॉलेज के विषयों में भी बेहतर समझ और अंक प्राप्त होंगे। चाणक्या आइएएस अकादमी पिछले 23 वर्षों से झारखंड के रांची, हजारीबाग और धनबाद शाखाओं के माध्यम से सैकड़ों सफल सिविल सेवक तैयार कर चुकी है। झारखंड के युवा यदि सिविल सेवाओं में चयनित होकर अपने ही राज्य में कार्य करें, तो राज्य के विकास में उल्लेखनीय योगदान दे सकते हैं। अकादमी के वाइस प्रेसिडेंट विनय मिश्रा ने मीडिया से बातचीत में इस प्रोग्राम को युवाओं के भविष्य का निर्धारण करने वाला कदम बताया और उन्हें शुभकामनाएं दीं। उन्होंने कहा कि छात्रों को बेहतर मार्गदर्शन और योजना के साथ करियर की शुरूआत करनी चाहिए। इच्छुक अभ्यर्थी अकादमी से संपर्क कर परामर्श प्राप्त कर सकते हैं।

महत्वपूर्ण खबरें

वाइबीएन यूनिवर्सिटी में पौधरोपण कार्यक्रम

रांची (आजाद सिपाही)। वाइबीएन यूनिवर्सिटी, रांची के परिसर में एक पेड़ मां के नाम अभियान के तहत एक अनूठे, भावनात्मक और प्रेरणादायक पौधरोपण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस विशेष आयोजन का उद्देश्य मां के प्रति सम्मान और प्रकृति के प्रति कृतज्ञता को एक साथ जोड़ते हुए पोधरोपण के माध्यम से एक गहरा सामाजिक और सांस्कृतिक संदेश देना था। विश्वविद्यालय के फार्मेसी भवन के निकट औषधीय एवं छायादार पौधों का रोपण किया गया। इस कार्यक्रम का उद्देश्य मां के प्रति सम्मान और प्रकृति के प्रति कृतज्ञता को एक साथ जोड़ते हुए पौधरोपण के माध्यम से एक गहरा सामाजिक और सांस्कृतिक संदेश देना था। वाइबीएन यूनिवर्सिटी के चेयरमैन रामजी यादव ने कहा कि एक वृक्ष केवल जीवन का प्रतीक नहीं होता, बल्कि यह हमारी आने वाली पीढ़ियों के लिए एक अमूल्य उपहार है। मां का प्रेम और वृक्ष की छाया, दोनों ही निःस्वार्थ होते हैं। कुलपति डॉ सत्यदेव पोद्दार ने कहा कि प्रकृति से जुड़ाव ही सच्चा मानव धर्म है। यह अभियान उस दिशा में एक महत्वपूर्ण और सार्थक पहल है। चीफ मैनेजिंग डायरेक्टर डॉ अंकिता यादव ने औषधीय पौधों की वैज्ञानिक विशेषताओं पर प्रकाश डालते हुए बताया कि इन पौधों का संरक्षण न केवल पर्यावरण के लिए, बल्कि समाज के संपूर्ण स्वास्थ्य के लिए भी लाभकारी है। इस अवसर पर मीनू महतो ने सभी को पर्यावरण संरक्षण की शपथ दिलायी, जिसमें विद्यार्थियों, शिक्षकगण एवं अधिकारियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। इस आयोजन में विश्वविद्यालय के वरिष्ठ प्रशासनिक एवं शैक्षणिक अधिकारी डॉ. अर्पणा शर्मा, डॉ. आशीष सरकार, डॉ. संजय तिवारी, इंजीनियर कौशल किशोर, डॉ. आभा नूतन कुजूर, आशा पुरन, मुक्ति सरकार, निकीता तिवारी, अजीत कुमार गोंड, सुसोवन अधिकारी, अभिलाषा कुमारी, नेहा रंजन सहित अन्य शामिल थे।

बाबा विद्यापति स्मारक समिति ने रुद्राभिषेक किया

रांची (आजाद सिपाही)। बाबा विद्यापति स्मारक समिति के कार्यालय में सोमवार को रुद्राभिषेक यज्ञ का आयोजन किया गया। पवित्र माह सावन के तीसरे सोमवारी के उपलक्ष्य में बाबा भोलेनाथ की पूजा अर्चना की गयी। इस मौके पर हवन यज्ञ किया गया, जिसमें समिति के सदस्यों व शिव भक्तों ने आहुतियां डाल विश्व कल्याण के लिए कामना की। रांची विधानसभा के विधायक सीपी सिंह को फूलमाला, अंगवस्त्र एवं मिथिला पाग पहनाकर सम्मानित किया गया। समिति के उपाध्यक्ष आशु झा ने बताया कि भगवान शिव शीघ्र प्रसन्न होने वाले तथा कठिन से कठिन वरदान देने वाले हैं। जयंत झा ने बताया कि श्रावण मास भगवान भोलेनाथ का प्रिय मास है और देवों में भगवान शिव से बड़ा कोई देव नहीं है। रुद्राभिषेक की पूजा से जीवन के नकारात्मक हालात भी बदल जाते हैं और पौराणिक कथाओं के अनुसार रुद्राभिषेक करने से पूर्व जन्मों के पापों से भी मुक्ति मिल जाती है। पूजा के उपरांत महाभंडारा का आयोजन किया गया, जिसके अंतर्गत भक्तों में महाप्रसाद के रूप में पूरी, सब्जी, खीर और बुंदिया वितरित किया गया।

बीजेपी ने पहाड़ी मंदिर में किया प्रसाद का वितरण

रांची (आजाद सिपाही)। बीजेपी रांची महानगर के सुखदेव नगर मंडल के अध्यक्ष अशोक कुमार मिश्रा के नेतृत्व में 301 लीटर दूध, फूल, बेलपत्र, अगरबत्ती और प्रसाद का वितरण पहाड़ी मंदिर के प्रांगण में किया गया। इस अवसर पर मुख्य रूप से रांची के विधायक सीपी सिंह, झारखंड प्रदेश के उपाध्यक्ष बालमुकुंद सहाय, रांची जिला के पूर्व अध्यक्ष, खूंटी जिला के प्रभारी सत्यनारायण सिंह, प्रदेश कार्य समिति सदस्य रमेश सिंह, रांची जिला के पूर्व अध्यक्ष केके गुप्ता, प्रदेश के नेता नीरज पासवान, प्रदेश कार्य समिति सदस्य मुकेश साहू, प्रदेश युवा मोर्चा के उपाध्यक्ष राहुल चौधरी, नीवर्तमान पार्षद सुनील मामा, प्रदेश के नेता सुनील साहू, हेम सिंह, राजेश प्रजापति, फिरंगी साहू, दक्षिण मंडल के महामंत्री अशोक पांडेय, युवा मोर्चा अध्यक्ष उज्ज्वल कुमार मिश्रा, राजेश कुमार, सुनील यादव, आनंद तिवारी, अरविंद, आशीष शर्मा, महिला मोर्चा की रूपा मुखर्जी, कृष्णा विश्वकर्मा, अभिषेक कुमार मिश्रा, सन्नी कुमार माथुर, सुशांत मिश्रा, आर्यन मिश्रा, मधुकर सिंह, निशांत पांडेय, और दक्षिणी मंडल के पदाधिकारी का भरपूर सहयोग रहा।

भारत विकास परिषद् की ओर से आयोजित इस प्रतियोगिता में नौ विद्यालयों ने भाग लिया था

सरला बिरला पब्लिक स्कूल को राष्ट्रीय समूह गान प्रतियोगिता में द्वितीय स्थान मिला

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। सरला बिरला पब्लिक स्कूल, रांची के विद्यार्थियों ने एक बार फिर अपने उत्कृष्ट प्रदर्शन से विद्यालय का नाम रोशन किया है। भारत विकास परिषद् द्वारा आयोजित शाखा स्तरीय राष्ट्रीय समूह गान प्रतियोगिता-2025 में विद्यालय की टीम ने द्वितीय स्थान अर्जित कर समस्त विद्यालय परिवार को गर्व का अनुभव कराया। इस प्रतियोगिता में रांची शहर के कुल नौ प्रतिष्ठित विद्यालयों ने भाग लिया, जहां सरला बिरला पब्लिक स्कूल के प्रतिभागियों ने अपनी भाव-प्रवण एवं हृदयस्पर्शी प्रस्तुति से न केवल निर्णायकों का, अपितु पूरे सभागार का मन मोह लिया। विद्यार्थियों ने देशभक्ति से ओत-प्रोत रक्त शिराओं में राणा का गीत और सांस्कृतिक गौरव को दर्शाता जय-जय हे भगवती गीत अत्यंत सुर-लय और भावपूर्ण ढंग से प्रस्तुत किया। यह उपलब्धि विद्यालय के उन समर्पित विद्यार्थियों की कड़ी मेहनत और उनके मार्गदर्शक शिक्षक की निःस्वार्थ साधना का प्रतिफल है, जिन्होंने पूरी निष्ठा से टीम को अभ्यास कराया और मंच पर प्रस्तुत होने हेतु आत्मविश्वास से पूर्ण रूप में तैयार किया। यह सफलता न केवल विद्यार्थियों की संगीतात्मक प्रतिभा को उजागर करती है, अपितु विद्यालय द्वारा सृजनात्मकता, सामूहिकता और सांस्कृतिक मूल्यों के संवर्धन की दिशा में किये जा रहे सतत प्रयासों की भी परिचायक है। प्राचार्या परमजीत कौर ने विजयी टीम को हार्दिक बधाई दी और संगीत को शिक्षा का अभिन्न अंग बताते हुए कहा कि यह विद्यार्थियों के समग्र विकास के साथ-साथ उन्हें अपनी सांस्कृतिक विरासत से जोड़ने का एक सशक्त माध्यम है।

9 अगस्त को विश्व आदिवासी दिवस मनाया जायेगा

मोरहाबादी मैदान में दिखेगा भव्य नजारा

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। ऐतिहासिक मोरहाबादी मैदान इन दिनों बदला-बदला से दिख रहा है। यहां पर विश्व आदिवासी दिवस को लेकर काफी तैयारी चल रही है। भव्य पंडाल बनाये जा रहे हैं। 9 अगस्त को विश्व आदिवासी दिवस मनाया जायेगा। 32 जनजातीय समाज के लोग अपनी भाषा, संस्कृति को प्रस्तुति देंगे। लंबे समय तक भव्य स्टेज पर बैठे राजनीतिक पार्टियों के नेताओं, सामाजिक कार्यकार्ताओं, बुद्धिजीवी समेत अन्य चेहरे दिख जाते थे, लेकिन इस बार यह स्टेज पर नही दिखेंगे। क्योंकि जो स्टेज बनाये गये थे। लोगों का चेहरा साफ-साफ दूर से भी दिख जाता था। अब स्टेज में बैठे लोगों का चेहरा दिखना मुश्किल हो सकता है। क्योंकि इस भव्य एव ऊंची स्टेज पूरी तरह से मैदान बन चुका है। इसे तोड़ दिया गया है। इसके बदले में आदिवासी दिवस पर अस्थायी स्टेज बनाये जायेंगे। इस पर मुख्य अतिथि, वीआइपी, नेता को बैठाने के लिए अलग से स्टेज बनाये जायेंगे। विश्व आदिवासी दिवस के अवसर पर मेला का आयोजन होगा। इसमें रंग-बिरंगे आदिवासी समाज से जुडे खाद्य सामग्री। पारंपरिक वेशभूषा। नये स्टॉल लगाये जायेंगे। इसके अलावा अलग-अलग महिला समूह द्वारा बनाये गये झारखंडी परंपरा की अनूठी वस्तुएं भी देखने को मिलेंगी।

स्वामी देवचंद्रजी महाराज ने आत्मज्ञान, शुद्ध आचरण और प्रभु भक्ति की प्रेरणा दी : विदुषी साध्वी महाराज

श्री कृष्ण बीतक कथा के दूसरे दिन भक्ति, श्रद्धा और आध्यात्म का संगम

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। श्री राधा कृष्ण प्रणामी मंदिर पुंदाग रांची में आयोजित पांच दिवसीय संगीतमय श्री कृष्ण बीतक कथा के दूसरे दिन का आयोजन अत्यंत श्रद्धा और भक्तिभाव के साथ संपन्न हुआ। इस अवसर पर सुप्रसिद्ध कथा वाचिका विदुषी साध्वी मीणा महाराज एवं विदुषी पूर्णा महाराज ने भक्तों को भक्ति रस में सराबोर कर दिया।

दूसरे दिन की कथा का आरंभ निजानंद संप्रदाय के महान संस्थापक स्वामी देवचन्द्रजी महाराज के पावन जन्मोत्सव की मंगलमयी कथा से हुआ। विदुषी साध्वी मीणा महाराज ने उनके जीवन, तपस्या और आध्यात्मिक उपलब्धियों का विस्तृत वर्णन करते हुए बताया कि किस प्रकार स्वामी देवचंद्रजी महाराज ने निजानंद की स्थापना कर मानवता को सत्य, भक्ति और प्रेम के मार्ग पर अग्रसर किया। उन्होंने जीवन भर समाज को आत्मज्ञान, शुद्ध आचरण और प्रभु भक्ति की प्रेरणा दी।

विदुषी साध्वी पूर्णा महाराज ने श्रीकृष्ण के ब्रज दर्शन के दिव्य प्रसंग को अत्यंत मार्मिक एवं भावपूर्ण शैली में प्रस्तुत किया। उन्होंने बताया कि कैसे ब्रजवासियों के जीवन में श्रीकृष्ण के दर्शन एक अनोखा आध्यात्मिक अनुभव बनकर आये।

इस अवसर पर डूंगरमल अग्रवाल, राजेंद्र प्रसाद अग्रवाल, मनोज चौधरी, सज्जन पाड़िया, पूरणमल सर्राफ, विशाल जालान, विष्णु सोनी, पवन पोद्दार, विद्या देवी अग्रवाल, विमला जालान, शोभा जालान, सरिता अग्रवाल, सुनीता अग्रवाल, उर्मिला पाड़िया, निकिता जालान, उमा नारसरिया, अनीता जालान और सुलोचना देवी चौधरी के अलावा बड़ी संख्या में भक्त उपस्थित थे।

पहाड़ी बाबा की भव्य संध्या महाआरती

रांची (आजाद सिपाही)। श्रावण मास की तीसरी सोमवारी के दिन पहाड़ी मंदिर के मुख्य द्वार के पास श्रावण सोमवारी संध्या महाआरती आयोजित की गयी। इस अवसर पर सभी भक्त ॐ आकार में खड़े होकर संध्या में महाआरती की। कार्यक्रम में बतौर मुख्य अतिथि गो सेवा आयोग के अध्यक्ष राजीव रंजन प्रसाद ने कार्यक्रम में भाग लिया। आयोजक नंद किशोर सिंह चंदेल ने कहा कि यह आयोजन पहाड़ी बाबा के भक्तों के लिए एक महत्वपूर्ण अवसर है।

भाकृअनुप-केन्द्रीय चावल अनुसंधान संस्थान
कटक (ओडिशा)-753006, भारत
ICAR-CENTRAL RICE RESEARCH INSTITUTE
CUTTACK (ODISHA)-753006, INDIA

विज्ञापन संख्या / Advertisement No.: 13/YP-II/2025-26 दिनांक / Date: 29.07.2025

साक्षात्कार हेतु सूचना / Notice for Interview

प्रधान अन्वेषक, ईएपी-422 योजना के तहत सभी योग्य उम्मीदवारों को एक (01) यंग प्रोफेशनल-II के चयन हेतु को भाकृअनुप-कें.चा.अनु.सं., कटक, ओड़िशा में इंटरव्यु हेतु आमंत्रित करते है। अधिक जानकारी के लिए कृपया भाकृअनुप-कें.चा.अनु.सं., की वेबसाइट: https://icar-crri.in/walk-in-interview-3/ पर जाएं।

PI of the project **EAP-422**, invites all the eligible candidates for Interview for the post of **One (01) Young Professional-II (YP-II)** at ICAR-CRRI, Cuttack, Odisha. For further details please visit to ICAR-CRRI website: https://icar-crri.in/walk-in-interview-3/.

प्रधान अन्वेषक / PRINCIPAL INVESTIGATOR

इंडी गठबंधन अब तुष्टिकरण गठबंधन बना : अजय साह

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश प्रवक्ता अजय साह ने सोमवार को इंडी गठबंधन पर तीखा हमला करते हुए कहा कि यह गठबंधन मुस्लिम तुष्टिकरण की राजनीति में इतना डूब चुका है कि अब उसे न महिला सम्मान की चिंता है, न ही न्याय की मर्यादा की। उन्होंने आरोप लगाया कि दिल्ली से लेकर झारखंड तक इंडी गठबंधन के नेता वोटबैंक की राजनीति के लिए हर सीमाएं लांघ रहे हैं। उन्होंने समाजवादी पार्टी की सांसद डिंपल यादव का उदाहरण देते हुए कहा कि नयी दिल्ली की एक मस्जिद में राजनीतिक बैठक के दौरान ऑल इंडिया मुस्लिम जमात के प्रमुख मौलाना शहाबुद्दीन रिजवी ने उनके पहनावे पर बेहद अभद्र और आपत्तिजनक टिप्पणी की, जिसे बाद में मौलाना साजिद रशीदी ने और भी शर्मनाक भाषा में दोहराया। अजय साह ने सवाल उठाया कि जब एक हिंदू महिला सांसद के पारंपरिक पहनावे पर इस तरह की घिनौनी टिप्पणी की जाती है, तब अखिलेश यादव और पूरा इंडी गठबंधन मौन क्यों रहता है? क्या तुष्टिकरण की राजनीति उनके लिए महिला गरिमा से भी अधिक मूल्यवान हो चुकी है? झारखंड के संदर्भ में अजय साह ने कहा कि कांग्रेस की वही सरकार, जो अंकिता सिंह को जिंदा जलाने पर, रुबिका पहाड़िया के पचास टुकड़े किये जाने पर और रूपेश पांडेय की मॉब लिंचिंग पर चुप्पी साधे रही, आज एक दुष्कर्म के आरोपी आफताब अंसारी की मौत पर जांच कमेटी बना रही है। उन्होंने कांग्रेस के एक मंत्री पर भी तंज कसते हुए कहा कि न वह अल्पसंख्यक कल्याण मंत्री हैं, न गृह मंत्री, और न ही रामगढ़ से विधायक, लेकिन जैसे ही किसी मामले में मुस्लिम नाम आता है, वह सबसे पहले प्रतिक्रिया देने पहुंच जाते हैं। यह मंत्री झारखंड वासियों की नहीं बल्कि सिर्फ.एक समुदाय की चिंता करते हैं। आज का इंडी गठबंधन एक तुष्टिकरण गठबंधन बन चुका है जो एक समुदाय विशेष के तुष्टिकरण में न्याय, संविधान और सामाजिक संतुलन तक को कुर्बान करने पर तुला है।

भाजपा सेना के पराक्रम की आड़ में राजनीति बंद करे : आलोक दुबे

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। झारखंड प्रदेश कांग्रेस कमेटी के महासचिव आलोक कुमार दूबे ने भाजपा सांसद दीपक प्रकाश द्वारा कांग्रेस और पूर्व गृहमंत्री पी. चिदंबरम पर लगाए गए आरोपों को बौखलाहट भरा और तथ्यों से परे बताया है। उन्होंने कहा कि भाजपा नेताओं को सेना के पराक्रम पर गर्व कम और उस पर राजनीति करने की ज्यादा चिंता रहती है। आलोक कुमार दूबे ने तीखे शब्दों में कहा कि भाजपा हर बार देशभक्ति का प्रमाण पत्र बांटने लगती है, जबकि उसका खुद का इतिहास राष्ट्रविरोधी संगठनों से सांठगांठ का रहा है। उन्होंने कहा कि कांग्रेस पार्टी ने हमेशा सेना के सम्मान की बात की है और आतंकवाद के खिलाफ कठोरतम कार्रवाई की है, लेकिन सवाल पूछना लोकतंत्र का हिस्सा है झ जिसे दबाने का काम भाजपा करती रही है। उन्होंने कहा कि भाजपा नेताओं को यह समझ लेना चाहिए कि सवाल पूछना राष्ट्रविरोध नहीं होता, बल्कि लोकतंत्र की नींव होता है। चिदंबरम का बयान संवैधानिक प्रक्रिया और जांच के संदर्भ में था, न कि पाकिस्तान का समर्थन करने के लिए। लेकिन भाजपा झूठे विमर्श खड़ा कर जनता को गुमराह करने की कोशिश कर रही है।

एसएसपी ने लापरवाही बरतने पर नौ सब इंस्पेक्टर को किया निलंबित

रांची (आजाद सिपाही)। रांची में डीआइजी सह एसएसपी चंदन सिन्हा ने कर्तव्य में लापरवाही बरतने के आरोप में सोमवार को नौ पुलिस पदाधिकारियों (सब इंस्पेक्टर) को निलंबित कर दिया है। ये सभी रांची के अलग-अलग पुलिस थानों में तैनात थे। निलंबित होने वालों में उमाशंकर सिंह : बुढ़मू थाना, अशोकनाथ सिंह : सदर थाना, संतोष कुमार रजक : डोरंडा थाना, नीतीश कुमार : खरसीदाग ओपी, सूर्यवंशी उरांवः सुखदेव नगर थाना, श्याम बिहारी रजक : जगन्नाथपुर थाना, अरविंद कुमार त्रिपाठी : जगन्नाथपुर थाना, अजय कुमार दास : लालपुर थाना, राजकुमार टाना भगत : जगन्नाथपुर थाना शामिल है। डीआईजी सह एसएसपी की ओर से आयोजित एक अपराध समीक्षा बैठक में रांची में लंबित पड़े मामलों को जल्द से जल्द निपटाने के निर्देश दिये गये थे। लेकिन, कई अनुसंधानकर्ताओं ने इन निर्देशों पर कोई खास ध्यान नहीं दिया, जिसके कारण बड़ी संख्या में मामले लंबित ही रह गये। इस लापरवाही को गंभीरता से लेते हुए ऐसे अनुसंधानकर्ताओं को कारण बताओ नोटिस (शोकॉज) जारी कर उनसे जवाब मांगा गया था। जवाब संतोषजनक न पाये जाने पर और मामले की गंभीरता को देखते हुए यह कार्रवाई की गयी है।

उपायुक्त का कार्यालय, हजारीबाग
(जिला भू-अर्जन शाखा)
प्रपत्र VII
समाहर्त्ता या समुचित सरकार

अधिघोषणा

(अधिनियम–30/2013 की धारा–19(1) के अधीन)

अधिघोषणा सं0:– 09 (मु0)/भू0अ0, हजारीबाग। **दिनांकः– 14.07.2025**

चूंकि झारखण्ड सरकार/समाहर्त्ता को यह प्रतीत होता है कि सार्वजनिक प्रयोजनार्थ यथा अडानी इन्टरप्राईजेज लि0, गोन्दुलपारा कोयला खनन् परियोजना अन्तर्गत विस्थापित होने वाले परिवारों के लिए पुनर्वास कॉलोनी निर्माण हेतु ग्राम चन्दौल, थाना बडकागॉव, थाना संख्या 129, अंचल बडकागॉव, जिला हजारीबाग में कुल 162.56 एकड़ यानि 65.78 हेक्टेयर भूमि अपेक्षित है।

इसलिए अधिघोषणा किया जाता है कि उपर्युक्त परियोजना के लिए अर्जन के अधीन एक भू–खण्ड है, जो मानक माप से कमोवेश 162.56 एकड़ यानि 65.78 हेक्टेयर है और जो ग्राम चन्दौल, थाना बड़कागॉव, थाना संख्या 129, अंचल बड़कागॉव, जिला हजारीबाग में है, जिसका विवरण निम्नलिखित है–

कम सं0	खाता सं0	सर्वे प्लॉट संख्या	स्वामित्व का प्रकार	भूमि का प्रकार	अर्जन के अधीन क्षेत्रफल (एकड़ में)	हितबद्ध व्यक्ति का नाम व पता
51	305	599/I	नीज	धान–III	0.16	ललीत महतो पिता द्वारिका महतो जाति कोयरी निवासी ग्रम चन्दौल
52	305	599/II	नीज	धान–III	0.33	पारसनाथ महतो पिता मनबोध महतो जाति कुरमी निवासी होरम शीवाडीह
53	305	599/III	नीज	धान–III	0.195	किरण देवी पति रामदर्शी महतो सा0 बडकागॉव टोला गुरूचटटी बड़कागॉव
54	149	600	नीज	धान–III	1.01	कार्तिक महतो वो सुरेश महतो वो सुरेन्द्र महतो पिता स्व0 दयाल महतो वो तुलसी महतो पिता स्व0 अमीर महतो वो बालदेव महतो पिता रहुल महतो वो धुठा महतो वो बढन महतो पिता स्व0 गुडन महतो वो जदु महतो वो नान्दो महतो पिता स्व0 विशुन महतो वो बुधन महतो वो बंधन महतो वो रामधन महतो वो केला महतो वो छतर महतो पिता स्व0 चरकु महतो वो सोमर महतो नावल्द पिता मानकी कुरमी वो खेदना कुरमी पिता स्व0 धनु महतो कौम महतो सा0 होरम
55	148	601	नीज	धान–III	0.51	अवधेश कुमार सिंह पिता गयादत सिंह वो अशोक कुमार सिंह पिता जदुनन्दन सिंह सा0 देह
56	151	602	नीज	धान–III	0.25	मिंकु महतो पिता स्व0 अन्दु महतो वो खैटा महतो पिता हरखु महतो वो प्रसादी महतो वो बिजली महतो वो नरेश महतो पिता स्व0 दुखन महतो वो टिकेश्वर महतो पिता स्व0 मोहन महतो वो रघुनाथ महतो वो गणेश महतो वो अघन महतो वो राजेन्द्र महतो माता मो0 मरची देवी वो टिकेश्वर महतो वो विशेश्वर महतो वो विशाल महतो पिता स्व0 तोकल महतो वो चेतलाल महतो पिता फिरांगी महतो कौम कुरमी सा0 होरम
57	111	603	नीज	धान–III	0.14	खैटा महतो पिता हरखु महतो मो0 देवन्ती देवी पति स्व0 अन्दु महतो वो महेश महतो वो नरेश महतो पिता स्व0 दुखन महतो, डालेश्वर महतो वो सिकेन्द्र कुमार पिता स्व0 प्रसाधी महतो
58	111	603/I	नीज	धान–III	0.07	रघुनाथ महतो वो गणेश महतो वो तिलक महतो वो अघन महतो वो राजेन्द्र महतो पिता मुन्शी महतो जाति कुरमी निवासी ग्राम–चन्दौल होरम
59	111	604	नीज	धान–III	0.065	खैटा महतो पिता हरखु महतो मो0 देवन्ती देवी पति स्व0 अन्दु महतो वो महेश महतो वो नरेश महतो पिता स्व0 दुखन महतो, डालेश्वर महतो वो सिकेन्द्र कुमार पिता स्व0 प्रसाधी महतो
60	111	604/I	नीज	धान–III	0.285	रघुनाथ महतो वो गणेश महतो वो तिलक महतो वो अघन महतो वो राजेन्द्र महतो पिता मुन्शी महतो जाति कुरमी निवासी ग्राम–चन्दौल होरम
61	111	605	नीज	धान–III	0.2833	खैटा महतो पिता हरखु महतो मो0 देवन्ती देवी पति स्व0 अन्दु महतो वो महेश महतो वो नरेश महतो पिता स्व0 दुखन महतो, डालेश्वर महतो वो सिकेन्द्र कुमार पिता स्व0 प्रसाधी महतो
62	111	605/I	नीज	धान–III	0.1267	रघुनाथ महतो वो गणेश महतो वो तिलक महतो वो अघन महतो वो राजेन्द्र महतो पिता मुन्शी महतो जाति कुरमी निवासी ग्राम–चन्दौल होरम
63	111	606	नीज	धान–III	0.185	खैटा महतो पिता हरखु महतो मो0 देवन्ती देवी पति स्व0 अन्दु महतो वो महेश महतो वो नरेश महतो पिता स्व0 दुखन महतो, डालेश्वर महतो वो सिकेन्द्र कुमार पिता स्व0 प्रसाधी महतो
64	111	606/I	नीज	धान–III	0.095	रघुनाथ महतो वो गणेश महतो वो तिलक महतो वो अघन महतो वो राजेन्द्र महतो पिता मुन्शी महतो जाति कुरमी निवासी ग्राम–चन्दौल होरम
65	111	607	नीज	धान–III	0.65	खैटा महतो पिता हरखु महतो मो0 देवन्ती देवी पति स्व0 अन्दु महतो वो महेश महतो वो नरेश महतो पिता स्व0 दुखन महतो, डालेश्वर महतो वो सिकेन्द्र कुमार पिता स्व0 प्रसाधी महतो
66	111	607/I	नीज	धान–III	0.33	रघुनाथ महतो वो गणेश महतो वो तिलक महतो वो अघन महतो वो राजेन्द्र महतो पिता मुन्शी महतो जाति कुरमी निवासी ग्राम–चन्दौल होरम
67	188	608	नीज	धान–III	2.13	पनु कुम्हार वल्द हीरामन कुम्हार कौम कुम्हार सा0 महुगाई खुर्द
68	343	609	नीज	धान–III	0.185	बकास्त लागान पाने वाला
69	343	609/I	नीज	धान–III	0.875	झब्बु रजवार वगै0 पिता रांगो रजवार
70	73	610	नीज	टांड–III	0.06	किशोर रजवार वो सहदेव रजवार वो महेश रजवार पिता स्व0 केला रजवार वो बाबुलाल रजवार वो भोला रजवार वो मुकेश रजवार वो अरविन्द रजवार पिता स्व0 पुरन रजवार वो नेमचन्द रजवार पिता स्व0 झबु रजवार वो विदेशी रजवर वो राजु रजवार वो रामवृक्ष रजवार पिता दुलो रजवार वो बेचन रजवार वो लोचन रजवार वो कंचन रजवार वो किसुन रजवार पिता स्व0 मकुन्दर रजवार कौम रजवार सा0 देह
71	73	610/I	नीज	टांड–III	0.05	महेश रजवार पिता कैलु रजवार वो किशोर रजवार पिता सहदेव रजवार जाति रजवार निवासी नीज ग्राम
72	189	611	नीज	धान–III	3.73	खेमलाल महतो वो छत्रधारी महतो वो गालो महतो वो अशोक कुमार मेहता उर्फ भकलु महतो पिता स्व0 शंकर महतो कौम कोईरी सा0 हरली
73	297	612	नीज	धान–III	0.24	नारायण ठाकुर वो प्रभु ठाकुर पिता स्व0 शंभु ठाकुर वो रूदन ठाकुर वो रामदेव ठाकुर पिता स्व0 अनहक्ष हजाम कौम हजमा सा0 पुन्दौल
74	297	612/I	नीज	धान–III	0.12	मसोमात खेदनी पति लुम्बा महतो
75	297	612/II	नीज	धान–III	0.12	कौलेश्वर महतो पिता हुसैनी महतो
76	296	613	नीज	धान–III	0.58	अकल ग्वाला वो कुंजल ग्वाला वो अमृत ग्वाला वो जीतन ग्वाला वो रितलाल ग्वाला पिता स्व0 मुंडील गोप कौम ग्वाला सा0 पुन्दौल
77	296	613/I	नीज	धान–III	0.1967	भुनेश्वर महतो वो दाहो महताे वो राथो महतो माता सोहनी देवी पति जेठु महतो जाति कुरमी निवासी ग्राम–चन्दौल
78	296	613/II	नीज	धान–III	0.11	भुनेश्वर महतो वो दाहो महताे वो राथो महतो माता सोहनी देवी पति जेठु महतो जाति कुरमी निवासी ग्राम–चन्दौल
79	296	613/III	नीज	धान–III	0.10	रोगन महतो पिता दसई महतो जाति कुरमी निवासी नीज ग्राम
80	296	613/IV	नीज	धान–III	0.1333	सुगीया देवी पति धुठा महतो जाति कुरमी निवासी ग्राम–चन्दौल
81	306	614	नीज	धान–III	0.85	भुवनेश्वर यादव वो लोकनाथ यादव पिता किसुन याव वो जगदीश यादव पिता स्व0 बंधन यादव वो जीतन यादव नावल्द पिता लटुआ गोप सा0 पुन्दौल
82	307	615	नीज	धान–III	0.62	ललुआ चमार वो दसवा चमार वो जिगना चमार पिता स्व0 हरी चमार कौम चमार सा0 देह
83	307	615/I	नीज	धान–III	0.14	जयलाल महतो वो तुलसी महतो वो गणपति महतो पिता बुधन महतो जाति कुरमी निवासी ग्राम–चन्दौल
84	299	616	नीज	धान–III	0.60	हलवा जोल्हा वल्द कनी जोल्हा कौम जोल्हा सा0 पुन्दौल
85	301	618	नीज	धान–III	0.9575	सहदेव महतो वो लुटवरण महतो पिता बेचु महतो वो मुंशी महतो पिता जगदेव महतो वो दशरथ महतो वो होरील महतो पिता अर्जुन महतो वो नथुदयाल महतो कैलाश महतो वो लालदेव महतो वो युगेश्वर महतो पिता बंशी महतो वो संजय महतो पिता नागेश्वर महतो वो भुवनेश्वर महतो पिता मनु महतो सा0 देह
86	301	618/I	नीज	धान–III	0.0525	तुलसी महतो पिता बुचु महतो जाति कोईरी निवासी होरम शिवाडीह
87	180	619	नीज	धान–III	0.87	छटु प्रजापति वो लटल प्रजापति माता स्व0 तेजन देवी वो सोहर प्रजापति माता स्व0 दहनी देवी वो कुलेश्वर प्रजापति वो धनेश्वर प्रजापति वो दिनेश्वर प्रजापति वो बासुदेव प्रजापति वो महावीर प्रजापति पिता स्व0 वितन प्रजापति वो चरकी देवी पति स्व0 भुवनेश्वर प्रजापति वो बासुदेव प्रजापति वो तुलसी प्रजापति वो रामेश्वर प्रजापति वो कृष्णा प्रजापति पिता स्व0 बुधन प्रजापति वो लटल प्रजापति पिता स्व0 चुटन प्रजापति वा मोहन प्रजापति वो रविन्द्र प्रजापति पिता स्व0 बुटा प्रजापति
88	180	619/I	नीज	धान–III	0.86	खेदन कुम्हार वो सोमर कुम्हार वो कैलाश कुम्हार वो भगन कुम्हार वो उतीम कुम्हार वो झरी कुम्हार वो चोहन कुम्हार पिता किशुन कुम्हार
89	193	620	नीज	धान–III	0.07	विश्वनाथ चमार वो रती चमार वो विगना चमार पिता स्व0 भीखा चमार कौम चमार सा0 देह
90	193	620/I	नीज	धान–III	0.32	हरि महतो वो बैजनाथ महतो वो फागु महतो वो दशरथ महतो पिता बढन महतो जाति कुरमी निवासी होरम
91	302	622	नीज	धान–III	0.59	रविन्द कुमार दास वो देवेन्द्र राम वो छोटेलाल राम पिता भुखलाल राम वो बृजलाल राम वो नन्दलाल राम पिता स्व0 चौधरी राम वो योगेन्द्र राम वो गोर्वधन राम पिता स्व0 रामलाल राम वो अनिल कुमार दास वो अरूण कुमार दासा वो सुनिल कुमार दास वो सुबोध कुमार दास वो सुधीर कुमार दास पिता स्व0 बैजनाथ राम पिता स्व0 झलकु राम वो भीम राम वो नकुल राम वो सहदेव राम वो तारकेश्वर राम वो रघुबीर राम पिता स्व0 लटन राम वो भुवनेश्वर वो सुरेश वो महेन्द्र राम पिता स्व0 सोहर राम वो संतोष कुमार दास पिता सहजीवन राम वो लखन राम वो जग्रनाथ राम वो रमेश राम पिता स्व0 गुडन राम वो गणेश राम पिता स्व0 कोल्हा राम पिता स्व0 मलकु राम वो श्रीपति राम वो रामचन्द्र राम वो बासदेव राम पिता स्व0 पदुम राम जाति चमार सा0 देह
92	302	622/I	नीज	धान–III	0.04	काजो देवी पति चरक कुरमी निवासी ग्राम चन्दौल
93	302	622/II	नीज	धान–III	0.22	काजो देवी पति चरक कुरमी निवासी ग्राम चन्दौल
94	307	624	नीज	धान–III	0.36	ललुआ चमार वो दसवा चमार वो जिगना चमार पिता स्व0 हरी चमार कौम चमार सा0 देह
95	307	624/I	नीज	धान–III	0.12	हरि महतो वो बैजनाथ महतो वो फागु महतो वो दशरथ महतो पिता बढन महतो जाति कुरमी निवासी होरम
96	284	625	नीज	धान–III	0.16	हरि महतो वो बैजनाथ महतो वो फागु महतो वो दशरथ महतो पिता बढन महतो जाति कुरमी निवासी होरम
97	309	627	नीज	धान–III	0.78	बंधु हजाम वो मोहन हजाम पिता स्व0 गुल्ला हजाम कौम हजाम सा0 पुन्दौल
98	4	628	नीज	धान–III	0.02	कोल्हा महतो पिता स्व0 हुसैनी महतो वो लटलु महतो पिता स्व0 धनु महतो वो बैजनाथ नाम पिता स्व0 लालमन महतो कौम कुरमी सा0 होरम
99	4	628/I	नीज	धान–III	0.33	केशो प्रजापति वो दिनेश प्रजापति पिता विगन प्रजापति निवासी ग्राम भदुली पिपराडीह बड़कागॉव हजारीबाग
100	150	629	नीज	धान–III	1.16	रविन्द्र राम वो देवेन्द्र राम वो छोटेलाल राम पिता भुखलाल राम वो बृजलाल राम वो नन्दलाल राम पिता स्व0 चौधरी राम वो रामलाल राम वो बैजनाथ राम पिता स्व0 झलकु राम वो भीम राम वो नकुल राम वो सहदेव राम वो तारकेश्वर राम वो रघुबीर राम पिता स्व0 लटन राम वो भुवनेश्वर वो सुरेश वो महेन्द्र राम पिता स्व0 सोहर राम वो संतोष कुमार दास पिता सहजीवन राम वो लखन राम वो जग्रनाथ राम वो रमेश राम पिता स्व0 गुडन राम वो कोल्हा राम पिता स्व0 मलकु राम वो श्रीपति राम वो रामचन्द्र राम वो बासदेव राम पिता स्व0 पदुम राम जाति चमार सा0 देह

सीमा

भूखण्ड सं0–I

उत्तर :– सर्वे प्लॉट सं0–760 अंश, 756 अंश, 755 अंश, 754 अंश, 749 अंश, 747 अंश, 744 अंश, 741 अंश, 738 अंश, 732 अंश, 731 अंश, 729 अंश, 728 अंश, 727 अंश, 726 अंश, 725 अंश, 722 अंश, 715 अंश, 703 अंश, 702 अंश, 699 अंश, 698 अंश, 697 अंश, 684 अंश, 683 एवं 682

दक्षिण :– सीमा ग्राम होरम शिवाडीह एवं बेला बेलतौल

पुरब :– सर्वे प्लॉट सं0–929 (रास्ता), 643 अंश, 647 अंश, 648 अंश, 630 अशं, 929 अंश, 628 अंश, 612 अंश, 611 अंश, 609 अंश, 608 अंश, 604 अंश एवं 602 अंश

पश्चिम:– सर्वे प्लॉट सं0–554, 555, 557, 564, 565, 552 अंश, 753 (परती कदीम), 750 (परती कदीम), 739, 592 (परती कदीम) एवं 762

भूखण्ड सं0–II

उत्तरः – सर्वे प्लॉट सं0– 940 एवं 941

दक्षिण :– सर्वे प्लॉट सं0– 1206, 1207, 1208, 1209, 1212, 1213, 1215, 1216, 1217, 1218 एवं 1219

पुरब :– सर्वे प्लॉट सं0–991, 994 अंश, 996 अंश, 1001 अंश, 1003 अंश, 1008 अंश, 1013 अंश, 1021 अंश, 1022 अंश, 1023 अंश, 1024 अंश, 1063 अंश, 1062 अंश, 1060 अंश, 1059 अंश, 1044 अंश, 1048 अंश, 1049 अशं, 1098 अंश, 1099 अंश, 1101 अशं, 1102 अशं, 1110 अशं, 1112 अंश, 1108 अंश, 1162 अंश, 1158 अंश, 1160 अंश, 1159 अंश, 1151 अंश, 1150 अंश, 1250 अंश, 1179 अंश, 1191 अंश, 1192 अंश, 1246 अंश, 1239 अंश, 1142 अंश, 1241 अंश, 1237 अंश, 1234 अंश, 1233 अंश,1230 अंश, 1228 अंश

पश्चिम:– सर्वे प्लॉट सं0–929 (रास्ता), 1171 अंश, 1173 अंश, 1174 अंश, 1182 अंश, 1183 अंश, 1184 अंश एवं 929 (रास्ता)

यह अधिघोषणा हितबद्ध व्यक्तियों की आपत्तियों को सुनने और अधिनियम सं0 30/2013 की धारा 15 में प्रदत्त यथा उपबंधित सम्यक जॉच के पश्चात् किया गया है। भूमि अर्जन के कारण विस्थापित होने वाले परिवारों की संख्या शून्य है।

पुनर्वासन और पुनर्व्यवस्थापन योजना के सार नीचे दिये गये है:–

1. भूमि अर्जन, पुनर्वासन और पुनर्व्यवस्थापन में उचित प्रतिकर और पारदर्शिता का अधिकार अधिनियम 2013 के द्वीतिय अनुसूची के अनुसार पुनर्वासन और पुनर्व्यवस्थापन संबधी उपबंध/हकदारियॉ–

कंडिका	पुनर्वासन और पुनर्व्यवस्थापन संबधी के तत्व	उपलब्ध कराये जाने वाले हकदारियॉ
1.	विस्थापन की दशा में आवासन इकाईयों की व्यवस्था	लागू नहीं।
2.	भूमि के लिए भूमि	लागू नहीं।
3.	विकसित भूमि के लिए प्रस्थापना	लागू नहीं।
4.	रोजगार/वार्षिक वृति	प्रभावित परिवार के एक सदस्य को समुचित प्रशिक्षण एवं कौशल विकास करने के पश्चात् योग्यता, अहर्ता एवं कम्पनी की आवश्यकता अनुसार नियोजित किया जायेगा। अथवा प्रभावित परिवार को एक मुश्त 5,00,000/- (पांच लाख रूपये) देय होगा। अथवा प्रभावित परिवार को नियमानुसार 2,000/- (दो हजार रूपये) प्रतिमाह 20 वर्ष तक वार्षिक वृति देय होगा।
5.	विस्थापित कुटुंबों के लिए एक वर्ष की अवधि तक जीवन–निर्वाह अनुदान	लागू नहीं।
6.	विस्थापित कुटुंबों के लिए परिवहन खर्च	लागू नहीं।
7.	पशुबाड़ा/ छोटी दुकान खर्च	लागू नहीं।
8.	कारीगरों, छोटे व्यापारियों और कतिपय अन्य को एक बारगी अनुदान	लागू नहीं।
9.	मछली पकड़ने का अधिकार	लागू नहीं।
10.	एक बारगी पुनर्व्यवस्थापन भत्ता	प्रत्येक प्रभावित परिवार को एक बारगी पुनर्व्यवस्थापन भत्ता के रूप में 50,000/- (पचास हजार रूपये) एक मुश्त भुगतान किया जायेगा।
11.	स्टांप शुल्क और रजिस्ट्रीकरण फीस	लागू नहीं।

2. भूमि अर्जन, पुनर्वासन और पुनर्व्यवस्थापन में उचित प्रतिकर और पारदर्शिता का अधिकार अधिनियम 2013 के तृतीय अनुसूची के अनुसार परियोजना के लिए भू–अर्जन से विस्थापित जनसमुदाय के लिए पुनर्वासन और पुनर्व्यवस्थापन कॉलोनी में उपलब्ध कराये जाने वाले अवसंरचनात्मक सुविधाऐं/सहुलियतें एवं संसाधान संबंधी उपबंध– विस्थापन शुन्य होने के कारण लागू नहीं।

अन्य लाभ/प्रावधानः– उपर्युक्त हकदारियों/सुविधाओं के अलावा अन्य देय कोई भी लाभ/विवरण भूमि अर्जन, पुनर्वासन और पुनर्व्यवस्थापन में उचित प्रतिकर और पारदर्शिता का अधिकार अधिनियम 2013 के आलोक में किया जायेगा। पुनर्वासन और पुनर्व्यवस्थापन पात्रता हेतु सर्वेक्षण सूची में दर्ज लाभूकों के नाम के आधार पर अंतिम पात्रता साबित नहीं होगें, वास्तविक दावे के समर्थन में प्रस्तुत किये गये कागजात के आधार पर वास्तविक पहचान के उपरांत पुनवार्स एवं पुनर्व्यवस्थापन लाभ प्रदान किया जायेगा। गलत दावे एवं गलत भुगतान की पुष्टि होने अथवा प्राधिकार/न्यायालय के द्वारा विपरीत आदेश पारित होने पर प्राप्त की गई राशि लाभूक को एक मुश्त वापस करना होगा अन्यथा उनकी वसूली नियमानुसार की जायेगी।

ह0/–

उपायुक्त सह समुचित सरकार, हजारीबाग।

PR.NO.358345 Land Reforms(25-26):D

एक और भगदड़

हरिद्वार के प्रसिद्ध मनसा देवी मंदिर में एक अफवाह ने कई जानें ले लीं। किसी धार्मिक स्थल पर भगदड़ की यह पहली घटना नहीं, लेकिन अफसोस है कि पुरानी गलतियों से सबक नहीं लिया जा रहा।

एक साल में कई हादसे : पिछले एक साल पर नजर दौड़ायें, तो इस तरह के कई दुखद हादसे हो चुके हैं। पिछले साल जुलाई में ही हाथरस में एक धार्मिक आयोजन में मची भगदड़ में 121 लोगों की मौत हो गयी थी। वहां आयोजक भीड़ को नहीं संभाल पाये। इस साल जनवरी की शुरुआत में तिरुपति मंदिर में टोकन लेने के लिए हद से ज्यादा श्रद्धालु पहुंच गये और पुलिस उनको काबू नहीं कर सकी। भगदड़ मची, तो 6 लोगों की जान चली गयी। इसी साल, मौनी अमावस्या पर महाकुंभ में और उसके बाद नयी दिल्ली रेलवे स्टेशन पर भी हादसा हुआ।

क्राउड मैनेजमेंट : धार्मिक आयोजनों में भीड़ प्रबंधन हमेशा से बड़ी चुनौती रहा है। अनुमान से ज्यादा लोग जब एक जगह जुट जाते हैं, तब हल्की-सी भी चूक जानलेवा बन सकती है। इन सारे मामलों में यही वजह रही - कोई अफवाह, भीड़ का अनियंत्रित हो जाना और निकलने की जगह न मिलना। किसी भी बड़े आयोजन का सबसे अहम हिस्सा है क्राउड मैनेजमेंट। जरूरी नहीं है कि भीड़ के बारे में लगाया गया अनुमान हमेशा सही साबित हो। ऐसे में रियल टाइम मॉनिटरिंग अहम हो जाती है, जिससे स्थिति के हिसाब से तुरंत निर्णय लिया जा सके।

धार्मिक आयोजनों में भीड़ प्रबंधन हमेशा से बड़ी चुनौती रहा है। अनुमान से ज्यादा लोग जब एक जगह जुट जाते हैं, तब हल्की-सी भी चूक जानलेवा बन सकती है। इन सारे मामलों में यही वजह रही - कोई अफवाह, भीड़ का अनियंत्रित हो जाना और निकलने की जगह न मिलना।

धार्मिक स्थलों पर अव्यवस्था : इस तरह की कोई दुर्घटना होने की सूरत में बचाव की योजना पहले से तैयार रहनी चाहिए। लेकिन, देखा गया है कि ज्यादातर मौकों पर पहले से की गयी प्लानिंग बेकार हो गयी, क्योंकि इंतजाम नाकाफी थे। तमाम धार्मिक स्थलों पर फैली अव्यवस्था को भी नजरअंदाज नहीं किया जा सकता। फिसलन भरे रास्ते, संकरी जगह, आने-जाने का एक ही मार्ग जैसी बातें लगभग हर जगह देखने को मिल जायेंगी। ऐसे में जब किसी खास मौके पर भीड़ बढ़ती है, तो स्वाभाविक ही हादसे की आशंका बढ़ जाती है, जैसा सावन पर मनसा देवी में हुआ।

समन्वय और जागरूकता : बेंगलुरु में आरसीबी के इवेंट में हुए हादसे के बाद कर्नाटक सरकार क्राउड कंट्रोल पर एक बिल लेकर आयी है, जिसमें जिम्मेदारियां तय की गयी हैं। ऐसे कानून की हर जगह जरूरत है। साथ ही, ऐसी दुर्घटनाओं से बचने के लिए आयोजकों, पुलिस-प्रशासन और जनता को समन्वय में काम करना होगा। बड़े पैमाने पर जन-जागरूकता की जरूरत है, जिससे लोगों को बताया जा सके कि भीड़ के बीच उन्हें किस तरह का व्यवहार करना है।

अभिमत
आजाद सिपाही

भू-लोक से नीचे के लोकों में क्रम विकास एक प्राकृतिक प्रक्रिया है, लेकिन उच्च लोकों में हमारी ऊर्ध्वाधर वृद्धि हमारे कर्मों पर आधारित है। इसकी एक ही कुंजी है कि अधिक से अधिक जिम्मेदारियों को स्वेच्छा से लेना। उदाहरण के तौर पर एक फैक्ट्री में एक कार्यकर्ता पदानुक्रम विकास तभी पा सकता है, जब वह स्वेच्छा से अतिरिक्त जिम्मेदारियों का भार अपने ऊपर लेता है। जब ऐसा होता है, वह तुरंत वरिष्ठ प्रबंधन की नजरों में आ जाता है और उसे उच्च पद दे दिया जाता है।

क्यों इतने भिन्न हैं जीव और हमारे आस-पास की दुनिया

अश्विनी गुरुजी

क्या आपने कभी सोचा है कि इस ग्रह पर कीड़े-मकौड़े, रेंगने वाले जंतु, पशु-पक्षी, मानव और यहां तक कि दिव्य प्राणी भी आदि इतने भिन्न प्रकार के क्यों हैं? यहां तक कि मनुष्यों में भी इतनी श्रेणियां हैं, जो धर्म, जाति, आर्थिक स्थिति आदि के आधार पर विभाजित हैं। क्या इससे स्पष्टतः यह प्रतीत नहीं होता कि सभी कुछ, ज्ञात या अज्ञात परतों में विद्यमान है। क्या यह आश्चर्यजनक नहीं है कि विभिन्न ग्रहों और आकाश गंगाओं की यात्रा करने के पश्चात भी जीवन का कोई चिह्न नहीं मिला और न ही कभी मिलेगा। कभी सोचा है क्यों?

क्या कभी इस बात से आश्चर्य हुआ है कि कई बार हम कमरे में अकेले होते हैं, फिर भी किसी की उपस्थिति का एहसास होता है। भले ही हमारी पांच इंद्रियां उसको न अनुभव कर पायें। सृष्टि विभिन्न स्तरों की ऊर्जा का संयोजन है। प्रत्येक स्तर की ऊर्जा दूसरे से भिन्न है। क्रम-विकास पर आधारित हर एक स्तर अपने आप में पूर्ण भी है और अन्य स्तरों का पूरक भी हैं। इस प्रकार सृष्टि में एक संतुलन कायम है। ऊर्जा, एक परत से दूसरी परत में प्रस्थान करती है, किंतु तभी जब दोनों परतों में अधिक अंतर न हो। यदि ऊर्जा का आदान-प्रदान दो ऐसे स्त्रोतों में किया जाये, जो एक दूसरे से बिलकुल भिन्न हैं, तो असंतुलन उत्पन्न हो सकता है, जो विनाश का कारण हो सकता है। किसी भी समय पर होने वाले हमारे अस्तित्व के स्तर को आयाम या लोक कहते हैं। जिस स्तर या लोक में मनुष्य विद्यमान हैं, भू लोक कहलाता है। भू लोक से नीचे के लोक ताल कहलाते हैं, सुताल, रसताल, पाताल आदि जबकि भुवः, स्वः, मह, जनः, तपः और सत्य लोक, भूलोक से ऊपर के लोक हैं तथा हर एक लोक के अपने भी विशेष उप स्तर हैं। भू लोक के स्तर पर यानि हम मनुष्य भी कितने भिन्न प्रकार के हैं, मजदूर, पेशेवर, व्यापारी, सीइओ आदि हर कोई अपनी विशेषताओं और अनुभवों के आधार पर एक-दूसरे से भिन्न है।

ऊर्जा, एक परत से दूसरी परत में प्रस्थान करती है, किंतु तभी जब दोनों परतों में अधिक अंतर न हो।

विकास एक निरंतर प्रक्रिया है, किंतु अनेक जन्मों के बाद ही आत्मिक उत्थान का अवसर दिया जाता है, जिसमें गलती करने की हम कोई गुंजाइश नहीं छोड़ सकते। जब हम ध्यान के लिए बैठते हैं तो विभिन्न अनुभवों का आभास होता है, कुछ तो दृष्टिगोचर भी होते है। देवी-देवताओं के प्रिय दर्शन भी होते हैं और कई बार पशुओं और भयानक प्राणियों के अप्रिय दर्शन भी।

भू-लोक से नीचे के लोकों में क्रम विकास एक प्राकृतिक प्रक्रिया है, लेकिन उच्च लोकों में हमारी ऊर्ध्वाधर वृद्धि हमारे कर्मों पर आधारित है। इसकी एक ही कुंजी है कि अधिक से अधिक जिम्मेदारियों को स्वेच्छा से लेना। उदाहरण के तौर पर एक फैक्ट्री में एक कार्यकर्ता पदानुक्रम विकास तभी पा सकता है, जब वह स्वेच्छा से अतिरिक्त जिम्मेदारियों का भार अपने ऊपर लेता है। जब ऐसा होता है, वह तुरंत वरिष्ठ प्रबंधन की नजरों में आ जाता है और उसे उच्च पद दे दिया जाता है। प्रबंधन सदैव इस तरह के उत्तरदायी लोगों की तलाश में रहती है। स्वैच्छिक कार्य कभी भी अनदेखे नहीं रहते। उच्च पद के साथ-साथ कार्यकर्ता को अधिक शक्तियां भी दी जाती हैं, जो कि उसे उसका वर्चस्व साबित करने के लिए नहीं, बल्कि प्रभावी ढंग से कार्य निष्पादित करने में मदद करने के लिए दी जाती हैं।

इस प्रकार से उस कार्यकर्ता का स्तर फैक्ट्री में ऊंचा हो जाता है। इसी प्रकार अध्यात्म की दुनिया में भी उत्थान तभी होता है, जब साधक स्वार्थ से बाहर निकलकर सृष्टि के दूसरे प्राणियों का उत्तरदायित्व उठाता है। अगर हम अपने आसपास नजर डालें तो देखते हैं कि हर समय, हर कोई परमात्मा से कुछ न कुछ मांग ही रहा होता है। ईश्वर, भिखारियों के इस सागर में क्यों किसी को विशेष समझेंगे। केवल वही प्राणी जो निःस्वार्थ कार्य कर रहे हैं और दूसरों की मदद कर रहें हैं। ईश्वर की नजरों में आते हैं और फैक्ट्री कार्यकर्ता के समान ही इस स्तर से ऊपर उठ जाते हैं और दूसरों की मदद के लिए उनकी मुहीम में ईश्वर उन्हें अधिक शक्तियां प्रदान करते हैं। इस प्रकार यह प्राणी, ईश्वर और गुरु कृपा द्वारा अपने पूर्व स्तर से ऊपर उठ जाता है। लेकिन यह प्रक्रिया यहीं बंद नहीं हो जाती।

जब कोई पदानुक्रम अनुसार उन्नति करता है, तो और अधिक लोगों लोगों की जिम्मेदारी का भार उस पर आ जाता है, जिस कारण उत्तरदायित्व भी उतना ही बड़ा हो जाता है, जहां हल्की सी लापरवाही भी गंभीर दंड का भागी बना देती है। उदाहरण के तौर पर, एक कमीज बनाने की फैक्ट्री में यदि एक कार्यकर्ता कोई गलती करता है, तो हद से हद एक कमीज खराब होता है, किंतु उस फ्लोर का मैनेजर गलती करता है, तो कमीजों का एक बैच खराब हो सकता है, वहीं जनरल मैनेजर की एक गलती से पूरे दिन का उत्पादन खराब होगा और यदि गलती मैनेजिंग डायरेक्टर के स्तर पर हो जाये, तो फैक्ट्री बंद हो सकती है और हजारों श्रमिक बेरोजगार हो सकते हैं। इसी प्रकार सजा की गंभीरता भी एक कार्यकर्ता के स्तर से मैनेजिंग डायरेक्टर के स्तर पर गंभीर हो जाती है।

इसी प्रकार अध्यात्म के संसार में भी जब एक उन्नत प्राणी को अधिक शक्तियां प्रदान की जाती हैं, तो उत्तरदायित्व भी उतने ही बड़े होते हैं और लापरवाही से जुड़े दंड भी उतने ही अधिक गंभीर। क्योंकि शक्ति का हल्का सा भी दुरुपयोग आसपास के बहुत सारे लोगों या जीवों को प्रभावित कर सकता है जिससे सृष्टि के संतुलन पर असर पड़ता है और दैविक शक्ति इसकी अनुमति कभी नहीं देती।

विकास एक निरंतर प्रक्रिया है, किंतु अनेक जन्मों के बाद ही आत्मिक उत्थान का अवसर दिया जाता है, जिसमें गलती करने की हम कोई गुंजाइश नहीं छोड़ सकते। जब हम ध्यान के लिए बैठते हैं तो विभिन्न अनुभवों का आभास होता है, कुछ तो दृष्टिगोचर भी होते है। देवी-देवताओं के प्रिय दर्शन भी होते हैं और कई बार पशुओं और भयानक प्राणियों के अप्रिय दर्शन भी।

यह सब ध्यान के समय हमारी बढ़ी हुई चेतना की स्थिति में होता है, जहां हमारी उच्च इंद्रियां थोड़ी देर के लिए सक्रिय हो जाती हैं और हम अन्य लोकों के प्राणियों के साथ संपर्क कर उनका अनुभव कर पाते हैं। यदि हमारे पास अन्य लोकों का अनुभव करने के यंत्र या उन तक पहुंचने की जागृत सूक्ष्म इंद्रियां नहीं हैं, तो इसका अर्थ यह बिलकुल नहीं है कि यह लोक मौजूद नहीं हैं। अगर आप पृथ्वी लोक में हैं, तो आप गुरुत्वाकर्षण से अवश्य प्रभावित हैं, चाहे आप इस बात को माने या न माने।

कोल्हान की खबरें

युवा कांग्रेस की संगठनात्मक चुनाव को लेकर बैठक, सैकड़ों युवा शामिल

जमशेदपुर (आजाद सिपाही)। जमशेदपुर परिसदन में युवा कांग्रेस के संगठनात्मक चुनाव–2025 को लेकर एक महत्वपूर्ण बैठक प्रदेश महासचिव मोहम्मद नौशाद की अध्यक्षता में आयोजित हुई। सोमवार को बैठक में जिले भर सैकड़ों युवा शामिल होकर एकमत से अपने प्रत्याशियों को समर्थन दिया। बैठक का संचालन जिला अध्यक्ष पद के प्रत्याशी नवनीत मिश्रा ने की। मौके पर जिला एवं विधानसभा स्तर के प्रत्याशी की घोषित की गई।जिनमें नवनीत मिश्रा (जिला अध्यक्ष), शेख साजिद (जुगसलाई), मोहम्मद मोहसीन (जुगसलाई ब्लॉक), सुभम झा (पोटका), कुमार उधव (बाबगेड़ा), मोहम्मद हसन उर्फ बाबू (जमशेदपुर पश्चिम), ऋषभ श्रीवास्तव (जमशेदपुर पूर्वी), जकरिया सालिब (घाटशिला) शामिल हैं। मौके पर युवाओं में जबरदस्त उत्साह देखने को मिला। सभी ने आगामी चुनाव में नए नेतृत्व को सामने लाने की प्रतिबद्धता जताई। इस अवसर पर मो. इरशाद हैदर, माज अहमद, राशिद करीम, हाजी सलमान पठान, सैफ अली, आमिर गद्दी, पिन्टु कुमार, वरुण खनोरिया, राज वारसी सहित कई युवा कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

इन्नर व्हील क्लब जमशेदपुर इस्ट का 15वां स्थापना दिवस संपन्न, डॉ मीना मुखर्जी बनीं नयी अध्यक्ष

जमशेदपुर (आजाद सिपाही)। शहर के गोलमुरी क्लब में इन्नर व्हील क्लब ऑफ जमशेदपुर ईस्ट का 15वां स्थापना दिवस समारोह उत्साह और गरिमा के साथ मनाया गया। मौके पर डिस्ट्रिक्ट 325 की कई गणमान्य महिलाएं, जमशेदपुर के विभिन्न इन्नर व्हील क्लबों की अध्यक्ष और सचिव उपस्थित रहे। इस अवसर पर डॉ. मीना मुखर्जी ने क्लब की नई अध्यक्ष (2025–26) के रूप में पदभार ग्रहण की। कार्यक्रम की शुरूआत में वर्ष 2024–25 की सचिव संचिता डे ने क्लब द्वारा सालभर किए गए सामाजिक एवं जनकल्याणकारी कार्यों का विवरण प्रस्तुत की। क्लब की पूर्व अध्यक्ष मधुमिता सान्याल ने अपनी टीम और सदस्यों का आभार व्यक्त करते हुए डॉ. मीना मुखर्जी को औपचारिक रूप से अध्यक्ष पद सौंपा। कार्यक्रम का संचालन डॉ. नीलम सिन्हा ने की। नवगठित कार्यकारिणी सदस्य उपाध्यक्ष संचिता डे,सचिव अंजुबाला,कोषाध्यक्ष निलीमा प्रकाश,आईएसओ मंजरि भट्टाचार्य,संपादक मधुमिता रॉय को पदभार सौपा गया। इस अवसर पर क्लब की सभी सदस्याएं उपस्थित रहीं और नवगठित टीम को शुभकामनाएं दीं।

घाटशिला के आनंदलोक अपार्टमेंट में लाखों की चोरी

घाटशिला (आजाद सिपाही)। दाहीगोड़ा स्थित आनंदलोक अपार्टमेंट के गंगा व यमुना ब्लॉक में रविवार देर रात चोरों ने तीन फ्लैट में ताले तोड़कर लाखों के जेवरात और नकदी की चोरी कर ली। चोरी की वारदात सीसीटीवी में कैद हो गयी।

कस्तूरबा विद्यालय की चार छात्राएं फूड प्वाइजनिंग का शिकार, एमजीएम रेफर

एमजीएम में कस्तुरबा की बीमार बच्चियों से मिले विधायक मंगल कालिंदी, बेहतर इलाज का दिया निर्देश

आजाद सिपाही संवाददाता

पटमदा। पटमदा प्रखंड के बांगुड़दा स्थित कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय की चार छात्राएं बीते रात फूड प्वाइजनिंग की चपेट में आ गईं। सोमवार को हालत बिगड़ने पर विद्यालय प्रशासन ने सभी छात्राओं को तत्काल पटमदा के माचा स्थित सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र (सीएचसी) में भर्ती कराया। लगातार उल्टियां होने पर उन्हें जमशेदपुर के एमजीएम अस्पताल रेफर किया गया। बीमार छात्राओं की पहचान पूर्णिमा महतो, दयावती प्रमाणिक, अष्टमी महतो और प्रियंका महतो के रूप में हुई। चारों छात्राओं की हालत चिंताजनक बताई जा रही है। विद्यालय की वार्डन द्वारा घटना की सूचना तत्काल सभी अभिभावकों को दी गई। उधर घटना की सूचना मिलते ही विधायक मंगल कालिंदी एमजीएम अस्पताल पहुचे। विधायक ने अधीक्षक डॉ. आरके मंधान से मामले की जानकारी ली। मौके पर छात्रों की हाल जाना और बेहतर इलाज के लिए निर्देश दिया। विधायक प्रतिनिधि चन्द्रशेखर टुडू ने कहा चारों बच्चियों को आईसीयू में भर्ती कराया गया। फिलहाल सभी खतरे से बाहर हैं। मौके पर विधायक प्रतिनिधि चन्द्रशेखर टुडू, झामुमो नेता सुभाष कर्मकार, प्रखंड अध्यक्ष अश्विनी महतो और बीमार बच्चियों के परिजन मौजूद रहे।

मुथूट फाइनेंस पर स्वर्ण हड़पने का आरोप

आदित्यपुर (आजाद सिपाही)। सरायकेला खरसावां जिले के आदित्यपुर थाना क्षेत्र से एक चौंकाने वाला मामला प्रकास में आया है। एक व्यक्ति ने मुथूट फाइनेंस कंपनी पर उसकी दिवंगत पत्नी द्वारा जमा किए गए सोने को हड़पने का आरोप लगाया। सोमवार को आदित्यपुर रोड नंबर-1 निवासी ओम प्रकाश ने आदित्यपुर थाना में शिकायत दर्ज कराया। उन्होंने कहा उनकी पत्नी रीमा देवी ने मुथूट फाइनेंस में सोने की चेन गिरवी रखकर ऋण लिया था। रीमा देवी की मृत्यु 4 अप्रैल को हो गई थी। नोमिनी के रूप में ओम प्रकाश का नाम दर्ज था। इसके बावजूद कंपनी ने सोना ट्रांसफर नहीं किया। शिकायतकर्ता का आरोप है सभी दस्तावेज जमा करने के बावजूद कंपनी टालमटोल कर रही। इस संबंध में मुथूट फाइनेंस के कर्मचारी सौरभ दास गुप्ता ने बताया आरबीआई के नियमों की पूर्ति न होने के कारण प्रक्रिया अटकी हुई है।

खासमहल से गोविंदपुर तक सड़क निर्माण का विधायक ने किया निरीक्षण

जमशेदपुर (आजाद सिपाही)। जमशेदपुर प्रखंड के खासमहल चौक से गोविंदपुर तक 18.41 करोड़ की लागत से बन रही सड़क और पुलिया निर्माण कार्य का स्थानीय विधायक मंगल कालिंदी ने निरीक्षण किया। सोमवार को निरीक्षण के दौरान विधायक ने चांदनी चौक के पास बन रहे कलवर्ट (पुलिया) का जायजा लिया। मौके पर उपस्थित पथ निर्माण विभाग के एसडीओ को निर्माण कार्य में तेजी लाने और गुणवत्ता में कोई समझौता नही करने का निर्देश दिया। विधायक श्री कालिंदी ने कहा बहुप्रतीक्षित सड़क निर्माण कार्य में कुछ विलंब तो हुआ लेकिन इसके पूरा होने के बाद इस मार्ग से प्रतिदिन गुजरने वाले 50 हजार से अधिक लोगों को आवागमन में राहत मिलेगी।वर्षों से चली आ रही समस्या का स्थायी समाधान भी होगा।मौके पर विभागीय अधिकारियों के साथ स्थानीय ग्रामीण और जनप्रतिनिधि भी उपस्थित रहे। विधायक ने भरोसा दिलाया सभी बाधाओं को दूर कर जल्द से जल्द मुख्य सड़क जनता को समर्पित किया जाएगा।

जंबू अखाड़ा का भव्य जलाभिषेक यात्रा 4 को

जमशेदपुर (आजाद सिपाही)। श्रावण मास के चतुर्थ सोमवारी (4 अगस्त 2025) को जंबू अखाड़ा के द्वारा भव्य कलश यात्रा का आयोजन किया जाएगा। कलश यात्रा में 5001 महिला श्रद्धालु भाग लेकर बाबा लिंगेश्वरनाथ का जलाभिषेक करेंगे। सोमवार को जंबू अखाड़ा महिला इकाई की रितिका श्रीवास्तव ने बताया यह यात्रा मुख्य संरक्षक अमरप्रीत सिंह काले, संरक्षक बंटी सिंह एवं लाइसेंसी रणवीर मंडल के नेतृत्व में निकाली जाएगी। यात्रा की शुरूआत भालुबासा स्थित जंबू अखाड़ा मंदिर से होगी। जहां महिलाओं को कलश, बेलपत्र और पुष्प वितरित किए जाएंगे। इसके बाद उन्हें बस से स्वर्णरेखा नदी घाट लाया जाएगा, जहां जल भरने के बाद यात्रा मानगो, एमजीएम, बाराद्वारी होते हुए पुनः मंदिर परिसर पहुंचेगी।यात्रा में डंका–बाजा, सिंग बाजा, डीजे, झांकी और भजन गायिका की प्रस्तुति शामिल रहेगी। मौके पर आरती मुखी, रंजीत राय, सुलोचना मुंडा और संध्या दास मौजूद रहे।

अखिल एकता उद्योग व्यापार मंडल ने डीसी से की मुलाकत

आजाद सिपाही संवाददाता

जमशेदपुर। अखिल एकता उद्योग व्यापार मंडल जमशेदपुर के एक प्रतिनिधि मंडल डीसी कर्ण सत्यार्थी से मुलाकात कर उन्हें शॉल व स्मृति चिह्न भेंटकर सम्मानित किया। प्रदेश अध्यक्ष पवन अग्रहरि ने डीसी को दुकानदारों की समस्याओं से अवगत कराया और शीघ्र समाधान की मांग की। उपाध्यक्ष चंचल भाटिया ने सड़क अतिक्रमण और अवैध पार्किंग पर सख्त कार्रवाई के लिए आग्रह किया। उन्होंने पूर्व डीसी विजया जाधव के कार्यकाल की तरह व्यवस्था बहाल के लिए आग्रह किया। मौके पर डीसी ने प्रतिनिधिमंडल को समस्याओं का समाधान के लिए आश्वस्त किया। मौके पर सुनीता जायसवाल, एकता जायसवाल, सागर झा, यश साव, पीयूष जैन, गौतम आखुली समेत अन्य सदस्य मौजूद रहे।

आरटीआइ कार्यकर्ता को मिली धमकी, विधायक को सौंपा मांगपत्र

आजाद सिपाही संवाददाता

ईचागढ़। आरटीआई कार्यकर्ता कृतिवास मंडल को अज्ञात व्यक्ति द्वारा फोन पर जान से मारने की धमकी मिलने के मामले में नागरिकों व सामाजिक संगठनों के एक प्रतिनिधि मंडल विधायक सविता महतो को एक मांग पत्र सौंपा।सोमवार को सौंपें गए मांग पत्र के माध्यम से धमकी देने वाले के विरुद्ध तत्काल कानूनी कार्रवाई व आरटीआई कार्यकताओं को प्रशासनिक सुरक्षा प्रदान करने की मांग की।उन्होंने कहा ऐसे हमले लोकतांत्रिक पारदर्शिता के मूल्यों पर सीधा प्रहार हैं। विधायक सविता महतो ने मामले को गंभीरता से लेते हुए जल्द उचित कार्रवाई का आश्वासन दिया। मौके पर सुसेन गोप, नीलकमल गोप, अनंत महतो, राधेश्याम कर्मकार व तस्लीमा मल्लिक मौजूद रहे।

विधायक सरयू राय से मिले फेयर प्राइस शॉप डीलर्स एसोसिएशन के प्रतिनिधिमंडल

जमशेदपुर (आजाद सिपाही)। फेयर प्राइस शॉप डीलर्स एसोसिएशन झारखंड के एक प्रतिनिधिमंडल ने जमशेदपुर पश्चिमी के विधायक सरयू राय से मुलाकात की। सोमवार को मुलाकात के दौरान बीते 9 माह से लंबित कमीशन और ग्रीन कार्ड का दो वर्षों के बकाया सहित अन्य समस्याओं को लेकर मांग पत्र सौपा। प्रतिनिधियों ने कहा कमीशन नहीं मिलने से जीविकोपार्जन कठिन हो गया है। उन्होंने एनआईसी के जरिए राशन वितरण में गड़बड़ी का भी आरोप लगाया। मौके पर विधायक सरयू राय ने समस्याओं को गंभीरता से लेते हुए खाद्य सचिव से वार्ता कर समाधान का भरोसा दिलाया।

बाइक और साइकिल की टक्कर में तीन घायल

भवनाथपुर (आजाद सिपाही)। थाना क्षेत्र के कैलान गांव में मुख्य पथ पर बाईक और साइकिल की सीधी टक्कर में तीन लोग गंभीर रूप से घायल हो गये। इस दुर्घटना में बाईक सवार कमलेश यादव, पिता भोला यादव और साइकिल सवार दो स्कूली छात्र चंदन बैठा पिता बबन बैठा व सूरज कुमार पिता ललन बैठा सभी कैलान निवासी घायल हो गये। स्थानीय लोगों की मदद से सभी घायलों को तत्काल भवनाथपुर सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में भर्ती कराया गया, जहां उनका प्राथमिक उपचार किया गया। जानकारी के अनुसार कमलेश यादव नशे की हालत में मंगरदह से तेज रफ्तार में बाईक चलाते हुए अपने गांव कैलान लौट रहा था, इसी दौरान मुख्य मुख्य पथ पर साइकिल चला रहे दोनों छात्र सामने आ गये और अनियंत्रित बाईक ने उन्हें टक्कर मार दी। घटना की जानकारी मिलते ही थाना पुलिस अस्पताल पहुंच कर घटना की जानकारी ली।

एसडीएम ने सदर अस्पताल का देर रात किया औचक निरीक्षण

रोस्टर के अनुसार अनुपस्थित महिला चिकित्सक को कारण पृच्छा का निर्देश

आजाद सिपाही संवाददाता

गढ़वा। उपायुक्त गढ़वा के निर्देश पर सदर एसडीएम संजय कुमार ने बीती देर रात गढ़वा सदर अस्पताल का औचक निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान उन्होंने अस्पताल में चिकित्सकों और स्वास्थ्यकर्मियों की उपस्थिति की समीक्षा की तथा मरीजों को दी जा रही चिकित्सा सेवाओं की वस्तुस्थिति का जायजा लिया। निरीक्षण के क्रम में आपातकालीन सेवाएं बेहतर और सुचारू ढंग से संचालनात्मक पायी गईं। परिसर की स्वच्छता, प्रकाश व्यवस्था, विधि व्यवस्था आदि संतोषजनक मिली। किंतु निरीक्षण के क्रम में डॉक्टर प्रतिमा कुमारी रोस्टर ड्यूटी के समय अनुपस्थित पायी गईं, जिस पर एसडीएम ने गंभीर नाराजगी व्यक्त करते हुए अस्पताल उपाधीक्षक को उनसे स्पष्टीकरण मांगने का निर्देश दिया है।

निरीक्षण के उपरांत एसडीएम संजय कुमार ने अस्पताल उपाधीक्षक को एक पत्र लिखकर निर्देश दिया है कि अस्पताल के संचालन में नियमित उपस्थिति, अनुशासन एवं उत्तरदायित्व सुनिश्चित किया जाये। उन्होंने चिकित्सकों की ड्यूटी रोस्टर के अनुरूप अनिवार्य उपस्थिति सुनिश्चित करने तथा इसकी नियमित मॉनिटरिंग करने के लिए उनसे गंभीर प्रयास करने को कहा है। एसडीएम ने स्पष्ट किया कि स्वास्थ्य सेवाओं में किसी भी प्रकार की जानबूझकर लापरवाही अस्वीकार्य होगी। आमजन को बेहतर चिकित्सा सुविधा सुनिश्चित कराना जिला प्रशासन की प्राथमिकता है। एसडीएम द्वारा दवा भंडारण एवं वितरण और विभिन्न वार्डों में मरीजों को दी जा रही सेवाओं की भी सरसरी तौर पर जांच की।

विभिन्न चिकित्सा महाविद्यालयों/ संस्थानों के प्रशिक्षु स्वास्थ्य कर्मियों को अपने संस्थान का पहचान पत्र पहनकर ही सदर अस्पताल में ड्यूटी करने का निर्देश दिया गया। निरीक्षण के दौरान पायी गयी मामूली कमियों के आधार पर मौके पर मौजूद चिकित्सकों एवं पैरा स्वास्थ्य कर्मियों को आवश्यक सुझाव और निर्देश दिये गये।

मेदिनीनगर-रामगढ़-रमकंडा भंडरिया मुख्य सड़क बदहाल

ग्रामीणों ने सड़क पर धान की रोपाई कर जताया विरोध

आजाद सिपाही संवाददाता

भंडरिया (फकीराडीह)। मेदिनीनगर-रामगढ़-रमकंडा भंडरिया मुख्य सड़क की जर्जर हालत को लेकर ग्रामीणों का गुस्सा आखिरकार फूट पड़ा। सोमवार को फकीराडीह पंचायत के फकीराडीह घोड़मरी मोड़ के पास सड़क पर धान की रोपनी कर ग्रामीणों ने सरकार और प्रशासन के खिलाफ अनोखा विरोध दर्ज कराया। इस विरोध प्रदर्शन की अगुवाई पंचायत के मुखिया सोहर सिंह ने की।

ग्रामीणों का कहना था कि फकीराडीह रामगढ़ डालटनगंज मुख सड़क हो या पाट से तिहारो ग्रामीण सड़क वर्षों से यह मुख्य सड़क बदहाल पड़ी है। बारिश होते ही सड़क तालाब में तब्दील हो जाती है। जगह-जगह बड़े-बड़े गड्ढे, कीचड़ और जलजमाव के कारण राहगीरों और वाहन चालकों को भारी परेशानी का सामना करना पड़ता है। दुर्घटनाओं की संभावना हमेशा बनी रहती है।

प्रदर्शन में शामिल ग्रामीण अनूप पासवान, राजेंद्र पासवान, हबीब अंसारी, ओमप्रकाश पासवान, शर्मा सिंह, पंकज पासवान, निराला पासवान समेत अन्य लोगों ने बताया कि कई बार सांसद बिधायक और आस्थानीय जनप्रतिनिधियों और संबंधित विभाग से सड़क की मरम्मत कराने की मांग की गयी, लेकिन हर बार सिर्फ आश्वासन ही मिला। अब लोगों का धैर्य जवाब दे चुका है। ग्रामीणों ने सड़क पर ही धान रोपते हुए तंज कसा कि अगर सरकार सड़क नहीं बना सकती, तो हम इसे खेत ही बना देते हैं। ग्रामीणों का कहना है कि जब तक सड़क निर्माण की प्रक्रिया शुरू नहीं होती, तब तक आंदोलन जारी रहेगा। उन्होंने चेतावनी दी कि यदि शीघ्र ठोस कार्रवाई नहीं हुई, तो आंदोलन को और उग्र किया जायेगा।

इधर स्थानीय विधायक आलोक कुमार चौरसिया ने कहा कि हमने सरकार के सचिव के पास सूची दिया है। प्रयास रहेगा कि दीपावली छठ तक टेंडर की प्रक्रिया हो। भंडरिया प्रखंड में चार रोड़ प्रक्रिया पूरा कर दिया गया है, जिसमें पाट से तिहारो मंडल से भंडरिया, फकीराडीह से रामगढ़ तिहारो से कुरुण रोड प्रक्रिया हो गया है।

रंका में सांसद प्रतिनिधि कक्ष का उद्घाटन

रंका (आजाद सिपाही)। सांसद प्रतिनिधि कमलेश नंदन सिन्हा एवं भाजपा रंका मंडल अध्यक्ष ओमप्रकाश दास की अध्यक्षता में प्रखंड कार्यालय में सांसद प्रतिनिधि कक्ष का उद्घाटन मुख्य अतिथि भाजपा के गढ़वा जिलाध्यक्ष ठाकुर प्रसाद महतो ने फीता काट एवं दीप प्रज्ज्वलित कर किया। इस अवसर पर ठाकुर प्रसाद महतो ने कहा कि गरीब, असहाय वैसे लोग जो शासनिक-प्रशासनिक अधिकारियों के द्वारा परेशान हैं, सांसद प्रतिनिधि से मिलें उन्हें सहयोग किया जायेगा। इस मौके पर जिले के सांसद प्रतिनिधि प्रमोद चौबे, पूर्व प्रदेश युवा मोर्चा अध्यक्ष विनय चौबे, प्रखंड महामंत्री दिनेश प्रसाद चंद्रवंशी, पूर्व सांसद प्रतिनिधि सुनिल माली, अजय रविदास, जगदीश सिंह,भरदुल सिंह, रविंद्र साह, राकेश रवानी सहित काफी संख्या में भाजपा कार्यकर्ता उपस्थित थे।

7 वर्षों से फरार चल रहे दो वारंटी गिरफ्तार

बंशीधर नगर (आजाद सिपाही)। नगर उंटारी थाने की पुलिस ने समकालीन अभियान के तहत छापेमारी अभियान चला कर 7 वर्षों से फरार चल रहे दो वारंटी को गिरफ्तार कर न्यायिक हिरासत में भेज दिया है। गिरफ्तार वारंटियों में संतोष राम एवं संजय प्रसाद उर्फ टुकून के नाम शामिल हैं। संतोष मर्चवार एवं संजय धुरकी मोड़ का रहने वाला है। थाना प्रभारी उपेंद्र कुमार ने बताया कि एसपी साहब के निर्देशानुसार समकालीन अभियान चलाकर दोनों वारंटियों को गिरफ्तार किया गया है। उन्होंने बताया कि दोनों सात वर्षों से फरार चल रहे थे। दोनों के खिलाफ कोर्ट से वारंट निर्गत किया गया था। थाना प्रभारी ने बताया कि गिरफ्तारी के डर से भागे फिर रहे अपराधी या वारंटी अविलंब आत्मसमर्पण करें, उन्हें किसी भी हाल में बक्शा नहीं जायेगा।

नये सत्र में नामांकन के लिए एनसीसी कैडेट्स की जांच परीक्षा संपन्न

गढ़वा (आजाद सिपाही)। स्थानीय सूरत पांडेय डिग्री कॉलेज के एनसीसी इकाई में सत्र 2025-28 के लिए कुल 18 सीटों पर कैडेट्स के नामांकन के लिए 50 छात्र-छात्राओं का फिजीकल एवं लिखित परीक्षा ली गयी। उक्त आशय की जानकारी महाविद्यालय के एनसीसी के एएनओ प्रो धीरेंद्र कुमार मिश्रा ने बताया कि वर्तमान सत्र में कैडेट्स के नामांकन के लिए 44 झारखंड एनसीसी बटालियन से सुबेदार गोकुल तिग्गा एवं हवलदार अमित आलोक एक्का की उपस्थिति में कुल 50 प्रतिभागियों का फिजिकल टेस्ट एवं लिखित परीक्षा ली गयी। इस दौरान दौड़, परेड आदि कराये गये। इसके पश्चात उनका लिखित परीक्षा लिया गया। उन्होंने बताया कि यह सत्र तीन वर्षों का होगा। चयनित कैडेटस का नामांकन महाविद्यालय के एनसीसी विंग में किया जायेगा जिन्हें एनसीसी के निर्धारित नियमानुसार सभी सुविधाएं एवं प्रमाण पत्र उपलब्ध कराये जायेंगे।

बालू उत्खनन की आशंका पर एसडीएम ने नदी तटीय इलाकों में लागू की निषेधाज्ञा

- भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता की धारा 163 के तहत की गयी कार्रवाई
- एनजीटी की रोक तक इन इलाकों में बालू उत्खनन, भंडारण, परिवहन पर है पूर्ण पाबंदी
- निषेधाज्ञा का अनुपालन कराना थाना प्रभारियों की होगी जिम्मेदारी

आजाद सिपाही संवाददाता

गढ़वा। राष्ट्रीय हरित अधिकरण (एनजीटी) द्वारा पारित दिशा-निर्देशों के अनुपालन में एवं मानसून के दौरान जलस्तर वृद्धि, भूमि कटाव, अवैध बालू उत्खनन परिवहन और भंडारण के चलते पर्यावरणीय नुकसान की आशंकाओं को देखते हुए अनुमंडल दंडाधिकारी संजय कुमार ने गढ़वा अनुमंडल क्षेत्र के सभी नदी घाटों, जल निकायों एवं उनके आसपास के क्षेत्रों में धारा 163 बीएनएसएस के अंतर्गत अगले आदेश तक या एनजीटी द्वारा प्रतिबंध की तिथि तक (जो भी पहले हो) निषेधाज्ञा लागू कर दी है। एसडीएम का यह निषेधाज्ञा आदेश तत्काल प्रभाव से यानि 28 जुलाई से प्रभावी होकर अगले आदेश तक या एनजीटी द्वारा प्रतिबंध की तिथि तक लागू रहेगा।

इस निषेधाज्ञा के दायरे में सोन, कोयल, बांकी, दानरो, यूरिया, सरस्वतिया आदि उन सभी नदियों के घाट आयेंगे, जो सदर अनुमंडल क्षेत्र में अवस्थित हैं। इन क्षेत्रों में किसी भी प्रकार का बालू खनन, चाहे वह मशीन द्वारा हो या मैनुअल इस अवधि में प्रतिबंधित रहेगा। इन क्षेत्रों में बालू लदे ट्रैक्टर, हाइवा या अन्य वाहनों की आवाजाही पर मनाही रहेगी।

उक्त निषेधाज्ञा के अनुपालन कराने की जिम्मेदारी सभी संबंधित थाना प्रभारियों की रहेगी, इसलिए स्थानीय थाना प्रभारियों को आदेशित किया जा रहा है कि वे क्षेत्र में सतत गश्ती सुनिश्चित करते हुए संदेहास्पद खनन गतिविधियों पर निगरानी रखेंगे।

नागरिकों से सूचना देने की अपील : एसडीएम संजय कुमार ने क्षेत्र के आम नागरिकों से अपील की है कि वे पर्यावरण की रक्षा में प्रशासन का सहयोग करें। यदि किसी को अवैध खनन या परिवहन की सूचना प्राप्त हो तो वे निकटतम थाना, अंचल कार्यालय या एसडीएम कार्यालय को सूचित करें।

युवती ने फांसी लगाकर की आत्महत्या

धुरकी थाना प्रभारी जनार्दन राउत ने कहा कि मामला संदिग्ध है, इसकी गहन रूप से जांच की जा रही है

आजाद सिपाही संवाददाता

धुरकी। धुरकी थाना क्षेत्र के कुंबा कला गांव में युवती द्वारा फांसी लगाकर आत्महत्या करने का सनसनीखेज मामला प्रकाश में आया है। जिसकी पहचान रवीना खातून पिता स्वर्गीय नसीब अंसारी के रूप में किया गया है। इस संबंध में मिली जानकारी के अनुसार कुंबा कला गांव निवासी पिता स्वर्गीय नसीब अंसारी की पुत्री रवीना खातून की शादी कुछ दिन पूर्व गांव के ही आजाद अंसारी पिता सरफुदिन अंसारी के साथ होना तय था। आजाद रवीना खातून से हर समय फोन के माध्यम से बातचीत करता था, जबकि आजाद का संबंध किसी अन्य लड़की के साथ भी होना बताया जा रहा है। इस क्रम में रविवार की रात्रि में दोनो के बीच बात चीत के क्रम में आजाद के द्वारा दूसरी लड़की को कॉन्फ्रेंस पर लिया, इसके बाद रवीना तथा अन्य लड़की से कहा सुनी होने लगा। इसके बाद गुस्सायी रवीना ने घर के नजदीक आम के पेड़ पर फांसी पर झूल गयी। सूचना पर धुरकी पुलिस अपने दलबल के साथ घटना स्थल पहुंचकर शव को पोस्टमार्टम के लिए गढ़वा भेज दिया है। इधर धुरकी थाना प्रभारी जनार्दन राउत का कहना है कि मामला संदिग्ध है, इसकी गहन रूप से जांच किया जायेगा। दोषी को किसी भी कीमत पर बक्सा नहीं जायेगा। इसके लिए एक टीम का गठन किया गया है।

भव्य कलश यात्रा में उमड़ी आस्था की भीड़

आजाद सिपाही संवाददाता

मेराल। प्रखंड मुख्यालय के मुडल टोला शिव मंदिर से श्रावण मास के तीसरे सोमवारी पर नवयुवक फ्रेण्ड्स क्लब के तत्वावधान में भव्य कलश यात्रा निकाली गयी, जिसमें सैकड़ों श्रद्धालुओं शामिल हुए। कलश यात्रा का शुभारंभ मुखिया रामसागर महतो, भाजपा नेता रुपु महतो, मनोज जायसवाल, प्रियंका कुमारी, संजय भगत, विजय प्रसाद, सुषमा कुशवाहा, विनोद प्रसाद, मो. अलिशेर अंसारी, विनेश कुमार मेहता आदि ने संयुक्त रूप से श्रद्धालुओं को ध्वज, चुनरी, और कलश देकर हर हर महादेव के गगन भेदी नारों के साथ किया। लगभग तीन किलोमीटर की यात्रा तय कर उरिया नदी संगम तट से जल लेकर पुनः मंदिर में पहुंच कर भगवान शंकर पर जलाभिषेक किया। कार्यक्रम को सफल बनाने में विनोद चौधरी, धनंजय चौधरी, वीरेन्द्र चौधरी, कामेश्वर चौधरी सहित फ्रेंड्स क्लब के सभी सदस्यों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभायी।

गढ़वा रेड क्रॉस सोसाइटी की बैठक संपन्न, कई निर्णय लिये गये

आजाद सिपाही संवाददाता

गढ़वा। गढ़वा जिला रेड क्रॉस के कार्यसमिति की बैठक स्थानीय सदर अस्पताल के सभागार में संपन्न हुई। बैठक की अध्यक्षता रेड क्रॉस के चेयरमैन डॉक्टर एम पी गुप्ता ने एवं संचालन रेड क्रॉस के सचिव डॉक्टर जेपी सिंह ने की। बैठक में गत बैठक की पुष्टि के बाद सचिव ने बताया कि झारखंड स्टेट रेड क्रॉस की बैठक राज्यपाल के यहां 30 जुलाई को होने वाला है। उसमें गढ़वा से दो प्रतिनिधि भेजने का निर्णय लिया गया। बैठक में पुराना समाहरणालय स्थित रेडक्रॉस कार्यालय का विधिवत शुरूआत जल्द से जल्द करने पर सहमति बनी। बैठक में अगले तीन महीना के दौरान किये जाने वाले मुख्य कार्य पर विचार विमर्श किया गया। जिसमें निर्णय लिया गया कि बरसात का मौसम है, इसलिए अगस्त महीने में मलेरिया, डेंगू आदि मच्छर जनित रोगों से जागरूकता के लिए हैंडबिल बांटा जाये तथा जागरूकता कार्यक्रम किया जाये। बैठक में पेट्रोन मेंबर डॉ यासीन अंसारी, वरिष्ट सदस्य अलख नाथ पांडेय, चेयरमैन डॉ एमपी गुप्ता, वाइस चेयरमेन विनोद कमलापुरी, सचिव डॉ जेपी सिंह, सह सचिव नंदकुमार गुप्ता, कोषाध्यक्ष रामनारायण प्रसाद, कार्यसमिति सदस्य राजमणि प्रसाद, दया शंकर गुप्ता, उमेश अग्रवाल, विनोद गुप्ता, रौशन दुबे आदि मुख्य रूप से उपस्थित थे।

AFFIDAVIT

As per Affidavit Ref. No. 05 date 26.07.2025. I, SANTOSH KUMAR @ SANTOSH KOMAR PANDEY S/o Late Ram Chandra Pandey aged about 48 years old by faith-Hindu, Nationality-Indian, R/o Village-CHANDWARA, PO CHANDWARA, PS.- Koderma, -Dist.- CHANDWARA, Jharkhand-825409 do hereby solemnly affirm and declare as follows:- 1. That I am permanent resident of above mentioned place.
2. That My Daughter Birth Certificate No. B-2024:20-02748-000016 in the name of SANTOSH KUMAR PANDEY S/O RAM CHANDRA PANDEY.
3. That in my Aadhar Card No. 4974 0995 6262, my name is recorded as SANTOSH KUMAR S/O RAM CHANDRA PANDEY.
4. That in MY DAUGHTER BIRTH CERTIFICATE No. B2024:2002748000016 my name is recorded as also SANTOSH KUMAR PANDEY S/O RAM CHANDRA PANDEY.
5. That I am known and named by two names SANTOSH KUMAR@ SANTOSH KUMAR PANDEY. I am one and same person above both names.
6. That the above contents of affidavit are true and correct, if found false, I shall be liable.

डंडई प्रखंड कार्यालय परिसर में साइकिल सह परिसंपत्ति वितरण कार्यक्रम का आयोजन

गरीबों के हक में काम कर रही सरकार : विधायक अनंत

आजाद सिपाही संवाददाता

डंडई। डंडई प्रखंड कार्यालय परिसर में सोमवार को साइकिल सह परिसंपत्ति वितरण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस दौरान विभिन्न सरकारी योजनाओं के लाभुकों को स्वीकृति पत्र तथा आठवीं कक्षा में अध्ययनरत छात्रों को साइकिल वितरण किया गया। कार्यक्रम में उपस्थित लोगों को संबोधित करते हुए विधायक अनंत प्रताप देव ने कहा कि मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन के नेतृत्व में राज्य सरकार गरीब, पिछड़े और वंचित तबकों के उत्थान के लिए निरंतर जनकल्याणकारी योजनाएं चला रही है। इन योजनाओं का उद्देश्य है कि समाज के अंतिम व्यक्ति तक लाभ सुनिश्चित रूप से पहुंचे। उन्होंने कहा कि सामाजिक सुरक्षा पेंशन योजना, शिक्षा प्रोत्साहन के लिए साइकिल वितरण योजना सहित कई कार्यक्रमों के माध्यम से गांव-गांव तक विकास का रौशनी पहुचाने का काम किया जा रहा है। विधायक ने अधिकारियों को स्पष्ट संदेश देते हुए कहा कि इन योजनाओं का लाभ हर जरूरतमंद तक पहुंचे, यह सुनिश्चित करना प्रखंड स्तरीय पदाधिकारियों की जिम्मेदारी है। उन्होंने चेतावनी देते हुए कहा कि यदि कोई पदाधिकारी या कर्मचारी योजनाओं के क्रियान्वयन में लापरवाही करता है या जनता को जानबूझकर परेशान करता है, तो उसके विरुद्ध सख्त कार्रवाई की जायेगी। उन्होंने कहा कि जनता जिस विश्वास और आशा के साथ प्रखंड कार्यालय आती है, उन्हें समाधान और संतोष के साथ लौटाना सभी अधिकारियों का नैतिक दायित्व है।

अंत में उन्होंने आश्वस्त किया कि आने वाले दिनों में डंडई प्रखंड की मूलभूत समस्याओं जैसे सड़क, सिंचाई, स्वास्थ्य और शिक्षा के क्षेत्र में विशेष पहल करते हुए व्यापक स्तर पर विकास कार्य करने का भरोसा दिया। कार्यक्रम के बतौर अतिथि विधायक के अलावा झामुमो केंद्रीय कार्य समिति सदस्य ताहिर अंसारी, बीडीओ देवलाल करमाली,जिप सदस्य मोहन पासवान, प्रमुख कांति देवी, उप प्रमुख अंजलि देवी सहित अन्य ने सामूहिक रुक से छात्र छात्राओं को साइकिल और लाभुकों के स्वीकृति पत्र वितरण किया। मौके पर झामुमो जिला उपाध्यक्ष मुक्तेश्वर पांडे, तेजबहादुर सिंह, रामाशीष प्रसाद, जितेंद्र ठाकुर, चंद्रशेखर, राजेश सहित अन्य लोग उपस्थित थे।

कटहर कला मुखिया ने विधायक अनंत को पंचायत से संबंधित बारह सूत्री मांग पत्र सौंपा

सगमा (आजाद सिपाही)। प्रखंड के कहर कला पंचायत के मुखिया कलावती देवी ने विधायक अनंत प्रताप देव से मिलकर अपने पंचायत के विभिन्न समस्याओं से अवगत कराते हुए बारह बिंदुओं पर मांग पत्र दिया है, जिसमें पंचायत के उत्महि पहाड़ी स्थित शिव मंदिर को पर्यटन का दर्जा देने कटहर कला में झगड़ू उराव के घर से पुतूर बांध तक पीसीसी पथ का निर्माण करने ग्राम सारदा में टूटा नदी नाग स्थल का सुंदरीकरण, लोलकी गांव में हड़वड़िया डैम का जीर्णोद्धार करने, कटहर कला उत्माही नदी पर पुल का निर्माण कटहर कला मध्य विद्यालय से मनकी टोला तक पीसीसी निर्माण ग्राम सारदा में आरईओ पथ से दुधमनिया छठ घाट तक कालीकरण करने, कट हर कला में लालन उरांव के घर से आंगनबाड़ी केंद्र तक कालीकरन करने, लोलाकी गांव में आसमान घाट से महुलानिया टोला तक कलीकरण करने, कट हर कला गांव में बौली से विनोद यादव के घर तक पीसीसी पथ का निर्माण शामिल है। मुखिया कलावती देवी ने विधायक से अनुरोध किया है कि सभी मांग जनहित को ध्यान में रखकर किया गया है। उक्त योजनाओं का क्रियान्वयन हो जाने से पंचायत का सेहत बदल कर रख देगा।

कार्यालय, परियोजना निदेशक समेकित जनजाति विकास अभिरकण, सिमडेगा (ITDA)

अति अल्पकालीन निविदा

सिमडेगा जिलान्तर्गत कल्याण विभाग द्वारा संचालित एकलव्य मॉडल आवासीय विद्यालय, गरजा सिमडेगा, कुलामारा बाँसजोर, सोगड़ा पाकरटांड एवं अनुसूचित जनजाति, आवासीय बालक मध्य विद्यालय, हाटिंगहोड़े (बानो), अनुसूचित जनजाति आवासीय बालिका मध्य विद्यालय, सेवई (सिमडेगा) एवं आश्रम आवासीय विद्यालय, मतरामेटा, ठेठईटांगर में वित्तीय वर्ष 2025–26 में पोशाक आपूर्ति हेतु इच्छुक संवेदक से दिनांक 26.07.2025 को पूर्वाहन् 11.00 बजे तक आमंत्रित मुहरबन्द निविदा जिसका PR No 357620 Simdega (25-26) D प्रकाशित की गई थी।

निर्धारित तिथि को किसी भी निविदादाता द्वारा निविदा प्राप्त नहीं होने के कारण पुनः दिनांक 06.08.2025 को पूर्वाहन् 11.00 बजे तक जिला कल्याण कार्यालय, सिमडेगा में संबंधित मुहरबन्द निविदा आमंत्रित किये जाते हैं। निविदा दिनांक 06.08.2025 को अपराहन् 12.00 बजे परियोजना निदेशक, आई0टी0डी0ए0 सिमडेगा की अध्यक्षता में उनके कार्यालय कक्ष में खोली जाएगी। जिसमें संवेदक या उनके द्वारा प्राधिकृत प्रतिनिधि उपस्थित रह सकते हैं। निविदा की अन्य शर्त्तें यथावत् रहेंगे।

निविदा संबंधी शर्त्त एवं नियम तथा सामग्रियों की सूची जनसर्म्पक विभाग, झारखण्ड के वेबसाईट www. Prdjharkhand.gov.in एवं कार्यालय दिवस में जिला कल्याण कार्यालय, सिमडेगा के सूचना पट्ट पर देखा जा सकता है।

परियोजना निदेशक, आई0टी0डी0ए0,
–सह– जिला कल्याण पदाधिकारी,
सिमडेगा

PR 358327 (Simdega)25-26*D

भाजपा कार्यकर्ताओं ने रेलवे ओवरब्रिज निर्माण को लेकर राज्यसभा सांसद को सौंपा ज्ञापन

राज्यसभा सांसद को ज्ञापन सौंपते भाजपा कार्यकर्ता।

आजाद सिपाही संवाददाता

पिपरवार। भाजपा पिपरवार मंडल के कार्यकर्ताओं ने पूर्व मंडल अध्यक्ष बिजय लाल एवं पूर्व सांसद प्रतिनिधि अश्विनी दाराद के नेतृत्व में एक प्रतिनिधिमंडल राज्यसभा सांसद सह भाजपा प्रदेश महामंत्री आदित्य प्रसाद साहू से मिलकर उन्हे ज्ञापन सौंपा है। ज्ञापन के माध्यम से बरकाकाना-बरवाडीह रेल खंड के राय रेलवे स्टेशन स्थित रेल वजन घर के बगल में रेलवे ओवरब्रिज बनाने की मांग की गयी है। ज्ञापन के माध्यम से कार्यकर्ताओं ने बताया कि रेलवे ओवरब्रिज नहीं रहने के कारण वर्तमान में लोग रेलवे अंडरपास की जर्जर पुल से जान जोखिम में डालकर आवागमन करने को विवश है, जिससे कभी भी बड़ी दुर्घटना हो सकती है। यहां पर पिछले कई वर्षों से रेलवे ओवरब्रिज बनाने की मांग की जारी है, लेकिन अभी तक इस पर कोई पहल नहीं की गयी है, जिसके कारण स्थानीय लोगों में निराशा देखी जा रही है। वहीं समस्या सुनने के बाद राज्यसभा सांसद आदित्य प्रसाद साहू ने प्रतिनिधिमंडल को आश्वस्त किया कि जल्द ही रेल मंत्री अश्विनी वैश्नव से मिलकर ओवरब्रिज बनाने का मार्ग प्रशस्त किया जायेगा। प्रतिनिधिमंडल मे बिजय लाल, अश्विनी दाराद, दिलीप अंबष्ट, महेश प्रसाद साहू सहित अन्य लोग शामिल थे।

महिलाओं ने पारंपरिक उल्लास के साथ मनाया सावन महोत्सव, रंगना दत्ता बनीं सावन क्वीन

सोनाहातू (आजाद सिपाही)। बुंडू में महिलाओं के एक समूह ने सावन महोत्सव का आयोजन किया। यह रंगारंग कार्यक्रम होटल हेवेन्स ब्लू रेस्टोरेंट में पारंपरिक अंदाज में मनाया गया। महिलाएं हरे रंग की साड़ियों, चूड़ियों, मेंहदी और गजरे से सजधज कर कार्यक्रम में शामिल हुईं। सावन की रिमझिम फुहारों के बीच गीत-संगीत, नृत्य और पारंपरिक खेलों ने पूरे माहौल को उल्लासमय बना दिया। विभिन्न प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं, जिसमें सभी महिलाओं ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया।कार्यक्रम की विशेष आकर्षण रही सावन क्वीन प्रतियोगिता, जिसमें रंगना दत्ता को 'सावन क्वीन' का ताज पहनाया गया। आयोजन के दौरान सभी ने स्वरूचि व्यंजनों का भी आनंद लिया। इस आयोजन को सफल और यादगार बनाने में लक्ष्मी जयसवाल, रेशमा गुप्ता और सुप्रिया साहू की महत्वपूर्ण भूमिका रही।

रोहिणी परियोजना की खराब हॉल रॉड के गड्ढे में दस घंटे फंसी रही हॉलैक डंपर

खलारी (आजाद सिपाही)। रोहिणी परियोजना की हॉल रॉड एवं सड़क दोनों पूरी तरह खराब हो गया। हालत यह है कि रविवार को खराब सड़क पर गढ्ढे में दस घण्टे हॉलपैक डम्पर फसी रही। सोमवार को 11 बजे मशीन की मदद से डंपर को गढ्ढे से निकाला गया। घटना के संबंध में मिली जानकारी के अनुसार रविवार की दोपहर नये वर्कशॉप से हॉलपेक डंपर को हाजरी घर के समीप लाया जा रहा था कि हॉल रॉड पर एक पहिया धंस गया जिसके कारण गाड़ी उसी कीचड़ नुमा गढ्ढे में फंसी रही। बताया गया कि जिस जगह पर हॉलपैक फंसा था उस जगह ओबी गिराकर एक कलवट लगाया गया है लेकिन बारिश के कारण होलपैक एक पहिया फंस गया। जिसके कारण दस घण्टे डम्पर फंस गया। वही उसे बाहर निकालने के लिए एक क्रेन और एक हिटाची मशीन को लगाया था जो काफी मशक्कत के बाद सोमवार की दोपहर 11 बजे निकाला गया।

भाकपा माले ने खलारी में मनाया कॉमरेड चारु मजूमदार और एके राय का शहादत दिवस

खलारी (आजाद सिपाही)। खलारी बाजारटांड में सोमवार को भाकपा माले की बैठक अशोक राम की अध्यक्षता में किया गया। इस दौरान कॉमरेड चारु मजूमदार और ए.के. राय का शहादत दिवस मनाया गया। बैठक में उपस्थित भाकपा माले के दक्षिणी छोटानागपुर प्रमंडल के प्रदेश प्रभारी मोहन दत्त ने कहा कि देश की मौजूदा विषम परिस्थितियों में कॉमरेड चारु मजूमदार के विचार आज भी प्रासंगिक हैं। उन्होंने कॉर्पोरेट परस्त और सांप्रदायिक ताकतों के खिलाफ संघर्ष को तेज करने का आह्वान किया। बैठक में संगठन को मजबूती देने के लिए एक टीम का गठन किया गया, जिसका सचिव अशोक राम को मनोनीत किया गया। इस अवसर पर कन्हाई पांडे, अख्तर खान, फारुक खान, इरफान अंसारी, प्रदीप यादव, मुकेश दास, लखन यादव, कुंती देवी सहित कई कार्यकर्ता मौजूद रहे।

पिपरवार में सीसीएल प्रबंधन और छोटे वाहन चालक के बीच वार्ता, एक सप्ताह का अल्टीमेटम

पिपरवार (आजाद सिपाही)। पिपरवार क्षेत्र के महाप्रबंधक कार्यालय में सोमवार को जनता मजदूर संघ के नेतृत्व में वाहन चालकों की वार्ता स्थानीय सीसीएल पिपरवार एरिया प्रबंधन के साथ हुई। इस वार्ता में स्थानीय वाहन चालकों के द्वारा जनता मजदूर संघ के नेतृत्व में सीसीएल पिपरवार एरिया प्रबंधन को सौंपे गये मांग पत्र पर विचार विमर्श किया गया। काफी विचार विमर्श के बावजूद मांगों पर कोई निष्कर्ष नहीं निकल सका। यूनियन के द्वारा कहा गया कि यदि एक सप्ताह के अंदर चालकों की मांगे पूरी नहीं होती है तो यूनियन के बैनर चले धरना प्रदर्शन एवं आंदोलन किया जायेगा। बैठक में मुख्य रूप से स्टॉफ ऑफिसर विद्युत और यांत्रिक पीके सिंह, कार्मिक एवं प्रशासनिक अधिकारी नागेश कुमार गोपाल, रवि कुजुर के अलावा यूनियन की ओर से सीसीएल सेफ्टी बोर्ड के मेंबर रविंद्रनाथ सिंह, प्रताप यादव, बीपी सिंह, बबलू राम, रिंकू खान, गुड्डु शर्मा, अशोक कुमार, दिलीप बैठा, सोनू लोहार सहित काफी संख्या में वाहन चालक मौजूद थे।

पिछड़ा वर्ग आयोग ने किया खूंटी का दौरा, सदस्यों ने कहा

योजनाओं का लाभ पिछड़ा वर्ग को मिले, यही हमारा लक्ष्य है

आजाद सिपाही संवाददाता

खूंटी। पिछड़ा वर्ग आयोग के अध्यक्ष जानकी प्रसाद यादव की अध्यक्षता में आयोग की टीम ने सोमवार को खूंटी जिला का दौरा किया। दौरे में आयोग के सदस्य नंद किशोर मेहता, लक्ष्मण यादव एवं नरेश वर्मा शामिल थे।

आयोग की टीम द्वारा नगर निकायों में पिछड़े वर्गों को दिये जाने वाले आरक्षण की पात्रता निर्धारण के लिए परिसदन खूंटी में पिछड़ा वर्ग से संबंधित विभिन्न मामलों को लेकर समीक्षा बैठक का आयोजन किया गया। बैठक के दौरान अध्यक्ष ने कहा कि जिले में पिछड़े वर्गों की आर्थिक, सामाजिक, शैक्षणिक व राजनीतिक स्थिति का आकलन करने के लिए टीम खूंटी आयी है। उन्होंने कहा कि पिछड़ा वर्ग के लोगों को सरकारी प्रावधानों के तहत योजनाओं का यथोयोचित लाभ प्राप्त हो, आयोग का यही लक्ष्य है। टीम ने शिक्षा के अधिकार अधिनियम के तहत निजी स्कूलों में बच्चों का नामांकन, मुख्यमंत्री रोजगार सृजन योजना में पिछड़ा वर्ग के लाभुकों की संख्या, खनन विभाग, वन विभाग, मत्स्य विभाग द्वारा संचालित योजनाओं में पिछड़े वर्गों के लाभुकों की समीक्षा की। साथ ही जमीन का म्यूटेशन के संबंध में संबंधित अधिकारी से जानकारी ली गयी। साथ ही संबंधित अधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिया गया। बैठक के अपरांत टीम द्वारा बीएलओ द्वारा किये गये डोर-टू-डोर सर्वे का स्थल निरीक्षण कर जायजा लिया गया। टीम द्वारा नगर पंचायत अंतर्गत वार्ड संख्या-05 के बुथ संख्या 183, वार्ड संख्या-04 के बुथ संख्या 184, वार्ड संख्या-10 के बुथ संख्या 201 एवं 202 तथा वार्ड संख्या-15 के बुथ संख्या 180 और 181 का निरीक्षण किया गया। इस दौरान संबंधित बीएलओ द्वारा किये गये डोर-टू -डोर सर्वे कार्य को संतोषप्रद पाया गया। बैठक में अपर समाहर्ता, जिला कल्याण पदाधिकारी, जिला खनन पदाधिकारी, कार्यपालक पदाधिकारी नगर पंचायत, जिला शिक्षा पदाधिकारी, जिला मत्स्य पदाधिकारी, प्रखंडो के बीडीओ, सीओ सहित अन्य विभागों के अधिकारी शामिल थे।

झामुमो ने राज्य पिछड़ा वर्ग आयोग को सौंपा ज्ञापन, सात जिलों में ओबीसी आरक्षण शून्य होने पर जतायी चिंता

खूंटी (आजाद सिपाही)। खूंटी के विधायक प्रतिनिधि कमलेश महतो के नेतृत्व में एक प्रतिनिधिमंडल सोमवार को खूंटी परिसदन में झारखंड राज्य पिछड़ा वर्ग आयोग के अध्यक्ष जानकी प्रसाद यादव एवं सदस्य लक्ष्मण यादव और नंदकिशोर मेहता से मुलाकात कर खूंटी समेत सात जिलों में ओबीसी आरक्षण शून्य कर दिये जाने को लेकर एक ज्ञापन सौंपा। ज्ञापन में कहा गया है कि खूंटी, लोहरदगा, गुमला, सिमडेगा, पश्चिमी सिंहभूम, दुमका, लातेहार आदि सात जिलों में ओबीसी आरक्षण पूर्णतः शून्य कर दिया गया है, जो न केवल संविधान प्रदत्त सामाजिक न्याय के अधिकारों का हनन है, बल्कि पिछड़े वर्ग के युवाओं के भविष्य के साथ भी बड़ा अन्याय है। यह स्थिति सामाजिक असमानता को बढ़ावा दे रही है और इससे ओबीसी वर्ग में व्यापक असंतोष व्याप्त है। प्रतिनिधिमंडल में झामुमो के जिलाध्यक्ष जुबैर अहमद, केंद्रीय सदस्य मकसूद अंसारी, भोलानाथ लाल, तौकीर आलम, शंकर सिंह मुंडा, बसंत महतो आदि कार्यकर्ता शामिल थे।

सीआरपीएफ के सब इंस्पेक्टर का शव पहुंचा तोरपा विधायक-सीआरपीएफ के जवानों ने दी श्रद्धांजलि

आजाद सिपाही संवाददाता

खूंटी। सीआरपीएफ 12वीं बटालियन के सब इंस्पेक्टर (जीडी) बेनिदिक तोपनो (59) का शव सोमवार को तोरपा पहुंचा। रविवार को उनका निधन ओडिशा में हो गया था। वे मूल रूप से गुमला जिले के कामडारा प्रखंड के रामतोलया गांव के रहने वाले थे और तोरपा के शांतिनगर में घर बनाकर रहपरिवार के साथ रहते थे। बेनेदिक सीआरपीएफ 12 बटालियन में थे और वर्तमान में वह ओड़िशा के नवरंगपुर के हाथीगांव में पदास्थापित थे। रविवार को वे ड्यूटी पर थे। उसी दौरान उन्हें सीने के दर्द शुरू हुआ। उन्हें तत्काल रायगढ़ अस्पताल ले जाया गया। वहां से उन्हें एसएलएन हॉस्पिटल एंड रिसर्च सेंटर कोरापुट ले जाया गया, जहां उनका निधन हो गया। सब इंस्पेक्टर अजय कुमार खंडेलवाल जवानों के साथ बेनिदिक के शव को ओड़िशा से लेकर तोरपा पहुंचे। शांतिनगर में उनको श्रद्धांजलि दी गयी। यहां सीआरपीएफ 94 बटालियन के उप कमाडेंट जयप्रकाश, सूबेदार मेजर संजीव कुमार की अगुवाई में सीआरपीएफ के जवानों ने श्रद्धांजलि दी। शहीद की पत्नी नीलिमा तोपनो, बेटा जेम्स तोपनो, बहू एमानी कंडुलना, उर्मिला, विधायक सुदीप गुड़िया, जिप सदस्य सुशांति कोनगाडी, शहीद वाल्टर गुड़िया की पत्नी राहिल गुड़िया, बीडीओ नवीन चंद्र झा, प्रमुख रोहित सुरीन आदि ने श्रद्धांजलि दी।

मुरी में सावन की तीसरी सोमवारी पर हर-हर महादेव का जयघोष

मुरी (आजाद सिपाही)। सावन महीने की तीसरी सोमवारी पर भारी संख्या में श्रद्धालुगण शिवालयों में जल चढ़ाने पहुंचे। बाबा के भक्त हर हर महादेव, बोल बम आदि के जयकारे लगाते रहे। आसपास के शिवालयों में महिला, पुरुष और छोटे बच्चे भी बोल बम के पोशाक में कतारबद्ध होकर बाबा का जलाभिषेक करते देखा गया। इस दौरान श्रद्धालु भक्त मंदिर प्रांगण जाकर भगवान भोलेनाथ की पूजा अर्चना की और जलाभिषेक किया। साथ ही क्षेत्र की सुख, शांति और खुशहाली की कामना की। दलबेड़ा मंदिर, फुलवार बाबा, सिलिडीह मन्दिर, टुंगरी पहाड़ी मंदिर आदि पूजा स्थलों पर पहुंचकर बाबा के भक्तों ने बेलपत्र, मधु, दूध, फूल फल, नारियल इत्यादि का भोग लगाया और मन्नते मांगी।

संत मेरीज नर्सिंग स्कूल में रूपम सोनाली को किया गया सम्मानित

आजाद सिपाही संवाददाता

खूंटी। संत मेरीज नर्सिंग स्कूल, खूंटी में सोमवार को अमृतपुर खूंटी की रहने वाली जेपीएससी सफल अभ्यर्थी रूपम सोनाली के सम्मान में समारोह का आयोजन किया गया। रूपम ने 22 वर्ष की आयु में पहले ही प्रयास में जेपीएससी में 268 वां रैंक प्राप्त किया। उनके माता-पिता के निधन के बाद भी उन्होंने पढ़ाई जारी रखी। इसमें उसकी बड़ी बहन रूपम सुरभि ने खूब सहयोग किया। स्कूल की प्रभारी प्रिंसिपल एंजिल कोनगाड़ी ने पारंपरिक शॉल से सम्मानित किया। मौके पर स्कूल की शिक्षिका संजीता हीरो, हेंसल आईंद, अल्पसंख्यक कांग्रेस के जिला अध्यक्ष असीम टोपनो, कांग्रेस शिक्षा विभाग के कार्यकारी अध्यक्ष आरिफ टोपनो, शिक्षा विभाग के मीडिया प्रभारी सह महासचिव जीतेन आदि उपस्थित थे।

नेहा कुमारी को गुरुकुल परिवार ने किया सम्मानित

बुंडू (आजाद सिपाही)। झारखंड राज्य लोक सेवा आयोग की परीक्षा में गुरुकुल विद्या निकेतन, बुंडू की छात्रा नेहा कुमारी का प्रशासनिक सेवा में चयनित किये जाने पर गुरुकुल परिवार ने विद्यालय परिसर में सम्मान समारोह का आयोजन किया। सम्मान समारोह में गरुकुल के अध्यक्ष अनुप चेल ने कहा कि नेहा कुमारी ने गुरुकुल विधा निकेतन के साथ साथ उनके परिवार का मान सम्मान बढ़ाया है। उन्होंने सभी छात्रों को नेहा कुमारी का अनुसरण कर बेहतर तैयारी करने पर बल दिया। सभा के अंत में गुरुकुल विधा निकेतन, गुरुकुल पब्लिक स्कूल एवं गुरुकुल परिवार घर द्वारा नेहा कुमारी को पुष्प गुच्छ, उपहार के साथ प्रस्सती पत्र एवं उनके माता पिता को शाल ओड़ाकर सम्मानित किया गया। मौके पर पंचानन महतो, अर्जुन गोराई, अंबुज दत्ता, लक्ष्मी जायसवाल, गुरुकुल के हिंदी एवं इंग्लिश मीडियम के सभी छात्र छात्राओं सहित सभी शिक्षक शिक्षाकाएं उपस्थित थे।

शहीद वाल्टर गुड़िया तीन दिवसीय फुटबॉल टूर्नामेंट का समापन

राज्य में खेलों को बढ़ावा दे रही है सरकार: सुदीप गुड़िया

बालक वर्ग में भगत इलेक्ट्रॉनिक पीएमपी और बालिका वर्ग में तोरपा फुटबॉल क्लब की टीम चैंपियन बनी

आजाद सिपाही संवाददाता

खूंटी। शहीद वाल्टर गुड़िया तीन दिवसीय फुटबॉल टूर्नामेंट का समापन सोमवार को हो गया। बालक वर्ग में भगत इलेक्ट्रॉनिक पीएमपी की टीम एमएससी खूंटी की टीम को 1-0 के अंतर से हराकर चैंपियन बनी। बालिका वर्ग में तोरपा फुटबॉल क्लब ने खूंटी फुटबॉल क्लब को टाईब्रेकर में एक गोल के अंतर हराकर चैंपियन बनी। विजेता व उपविजेता टीम के खिलाडियों को नगद पुरस्कार तथा ट्रॉफी देकर सम्मानित किया गया। मुख्य अतिथि विधायक सुदीप गुड़िया, विशिष्ट अतिथि जिला बीस सूत्री कार्यक्रम क्रियान्वयन समिति के उपाध्यक्ष जुबैर अहमद, जिप सदस्य सुशांति कोनगाडी आदि ने पुरस्कार वितरण किया। इसके पूर्व मुख्य अतिथि तथा विशिष्ट अतिथियों ने खिलाड़ियों का परिचय प्राप्त किया। विधायक सुदीप गुड़िया ने फुटबॉल को किक मारकर खेल शुरू कराया। इसके पूर्व विधायक सुदीप गुड़िया ने तोरपा चौक स्थित शहीद वाल्टर गुड़िया की प्रतिमा पर माल्यार्पण कर उन्हें श्रद्धांजलि दी। मौके पर विधायक ने कहा कि राज्य सरकार खेलों को बढ़ावा दे रही है। राज्य में खेल पदाधिकारियों की नियुक्ति की गयी है। प्रत्येक प्रखंड में स्टेडियम बनाने के योजना पर काम हो रहा है। सुदीप गुड़िया ने कहा कि तोरपा में जल्द हॉकी स्टेडियम बनेगा। विधायक ने कहा कि खेलकूद से भेदभाव खत्म होता है तथा समाज में सामाजिक समरस्ता आती है। मौके पर बीडीओ नवीन चंद्र झा, तपकारा थाना प्रभारी नितेश कुमार गुप्ता, मुखिया दीप्ती गुड़िया, पुष्पा गुड़िया, विनीता नाग, रौशनी गुड़िया सहित अमृत हेमरोम, लक्ष्मी नारायण बड़ाइक, मार्शल मुंडू, सिंघराय कंडुलना, जयदीप तोपनो आदि उपस्थित थें।

मूसलाधार बारिश से जनजीवन अस्त-व्यस्त

तमाड़ (आजाद सिपाही)। लगातार हो रही मूसलाधार बारिश के कारण क्षेत्र में लोगों का जनजीवन अस्त व्यस्त हो गया है। बारिश के कारण ग्रामीण सड़कें जलमग्न हो गयी हैं और नदिया उफान पर हैं। मूसलाधार बारिश के कारण झारगांव गांव के निवासी कालीचरण मुंडा, पिता- स्वर्गीय जंगल मुंडा का घर सोमवार को गिर गया। घर गिरने से भुक्तभोगी को काफी दिक्कतों का सामना करना पड़ रहा है। पीड़ित परिवार ने जल्द उचित मुआवजा राशि देने की मांग की है।

रड़गांव में सड़क बनी तालाब, ग्रामीण परेशान

रड़गांव (आजाद सिपाही)। तमाड़ प्रखंड के रडगांव जामा मस्जिद मुख्य ग्रामीण सड़क तालाब बन गया है। पानी निकलने के लिए एक पुलिया भी नहीं है, पुलिया नहीं होने के कारण बारिश का पानी जमा हो रही है, जिससे लोगों को परेशानी झेलना पड़ रहा है। कई बार ग्राम सभा में नाली तथा पुलिया बनाने के लिए कोशिश की गयी, लेकिन अभी तक नहीं बन पाया है। हल्की बारिश में भी सड़क तालाब का रूप ले लेती है।

साथी अभियान के तहत निराश्रित बच्चों के आधार पंजीकरण शिविर का आयोजन

ईचागढ़ (आजाद सिपाही)। चांडिल प्रखंड के आसनबोनी पंचायत सचिवालय में साथी अभियान के तहत निराश्रित बच्चों का आधार पंजीकरण शिविर का आयोजन किया गया। शिविर का आयोजन झालसा के निर्देशानुसार जिला विधिक सेवा प्राधिकार सरायकेला खरसावां के तत्वावधान में किया गया। शिविर का मुख्य उद्देश्य विशेष रूप से बेसहारा और वंचित बच्चों को सरकारी योजनाओं से जोड़ना और लाभ पहुंचना है। जिला विधिक सेवा प्राधिकार सरायकेला-खरसावां के सचिव तौसीफ मेराज ने जानकारी दिया कि साथी अभियान राज्य के अन्य जिलों में भी सक्रिय रूप से संचालित हो रहा है। सरायकेला-खरसावां जिले में यह अभियान निरंतर 05 अगस्त 2025 तक जारी रहेगा, ताकि हर निराश्रित बच्चों को सरकारी योजनाओं का लाभ मिल सके। इसके साथ ही उन्हें सामाजिक, शैक्षाणिक और स्वास्थ्य से जुड़ी योजनाओं से जोड़ा जा सके, और उन्हें उज्ज्वल भविष्य मिल सके। मौके पर आधार एवं संचालक ओम प्रकाश साहू, सरायकेला खरसावां जिला के साथी समिति सदस्य, नेहा कुमारी गंगा सागर पाल, ग्राम पंचायत के मुखिया, पंचायत सचिव ग्रामीण आदि उपस्थित रहे।

फाइलेरिया उन्मूलन को लेकर प्रशिक्षण

ईचागढ़ (आजाद सिपाही)। ईचागढ़ प्रखंड कार्यालय सभागार में सोमवार को फाइलेरिया उन्मूलन अभियान का कार्यान्वयन के लिए दवा सहयोगी आंगनबाड़ी सेविकाओं को प्रशिक्षण दिया गया। यह प्रशिक्षण कार्यक्रम अलग अलग पाली में 50-50 की संख्या में आयोजित किया गया। वहीं सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र ईचागढ़ के डॉक्टर अनुपम घोषाल ने बताया कि 10 अगस्त से 25 अगस्त तक एमडीए ,आइडीए कार्यक्रम निर्धारित है। उन्होंने कहा कि कार्यक्रम के सफल क्रियान्वयन के लिए सेविकाओं को प्रशिक्षण दिया गया। प्रशिक्षण में अलग-अलग पाली में चिकित्सा पदाधिकारी एवं सीएचओ द्वारा प्रशिक्षण दिया गया। प्रशिक्षण में फाइलेरिया दवा का सेवन उम्र, लंबाई के आधार पर स्वयं दवा खिलाने एवं दवा का प्रतिक्रिया तक निगरानी आदि के संबंध में जानकारी दिया गया। मौके पर डॉ अनुपम घोषाल, गौर चंद्र महतो, बुधराम बेसरा, आशीष गोराई, नितिन मिंज, मनोज महतो, कृष्णा देवी, ममता सिन्हा आदि उपस्थित थे।03

सावन की तीसरी सोमवारी को उमड़ी शिवालयों में श्रद्धालुओं की भीड़

खलारी (आजाद सिपाही)। खलारी-कोयलांचल सहित आसपास के विभिन्न शिवालयों में सावन की तीसरी सोमवारी पर शिवभक्तों ने श्रद्धा भाव से पूजा-अर्चना किया। सुबह से ही मंदिरों में भक्तों के आने का सिलसिला शुरू हो गया था। क्षेत्र के प्रसिद्ध पहाड़ी मंदिर, श्री जानकी रमण मंदिर, धमधमिया नौ नंबर मंदिर, करकट्टा, खलारी बाजारटांड, अमृत नगर, डकरा बीटाइप, सुभाष नगर आदि जगहों के मंदिरों में सुबह से ही श्रद्धालुओं की लंबी कतार लग गयी थी। क्षेत्र में पूरे दिन शिव की गीतों से माहौल भक्तिमय बना हुआ था। इधर सोमवार को लेकर दर्जनों शिव भक्त बाबाधाम जाने से पहले खलारी पहाड़ी मंदिर में पूजा अर्चना किया।

पिपरवार के शिवालयों में सावन की तीसरी सोमवारी पर उमड़ी श्रद्धालुओं की भीड़

पिपरवार (आजाद सिपाही)। सीसीएल पिपरवार कोयलांचल क्षेत्र और आस-पास के ग्रामीण इलाकों में सोमवार को सावन माह की तीसरी सोमवारी पर कोयलांचल क्षेत्र के सभी शिवालयों में श्रद्धालुओं की काफी भीड़ देखी गयी। बचरा चार नंबर चौक स्थित जय बाबा सिद्धेश्वर नाथ शिव मंदिर प्रांगण में अहले सुबह से ही श्रद्धालुओं की भीड़ उमड़ने लगी। श्रद्धालु भक्त मंदिर प्रांगण जाकर विधिवत रूप से पूजा अर्चना कर जलाभिषेक किया। इस दौरान भगवान भोलेनाथ के जयकारे से पूरा इलाका गूंज उठा। मंदिर में श्रद्धालुओं के द्वारा जलाभिषेक के दौरान किसी तरह की परेशानी नहीं हो इसको लेकर मंदिर कमेटी के द्वारा विशेष रूप से तैयारी की गई थी। इधर बेंती शिव मंदिर के प्रांगण में सावन माह के तीसरी सोमवारी पर काफी संख्या में श्रद्धालुओं की भीड़ देखी गयी। इस दौरान श्रद्धालु भक्त मंदिर प्रांगण जाकर भगवान भोलेनाथ की पूजा अर्चना की और जलाभिषेक किया। साथ ही क्षेत्र की सुख, शांति और खुशहाली की कामना की। इस मौके पर मंदिर समिति के सभी लोग मौजूद थे। इधर बचरा चार नंबर चौक स्थित जय बाबा सिद्धेश्वर नाथ शिव मंदिर के प्रागंण में देर शाम को मंदिर समिति के द्वारा सभी श्रद्धालुओं के बीच खीर महाप्रसाद का वितरण किया गया। पिपरवार के बचरा, राय, चुरी, बमने, राय कोलियरी, पुरानीराय, बहेरा, कल्याणपूर, किचटो, बिलारी, चिरैयाटांड़, कारो, बेंती, बन्हे, बुंडू, बचरा बस्ती सहित अन्य सभी ग्रामीण इलाकों में सावन माह के तीसरी सोमवारी पर मंदिरों में श्रद्धालुओं की काफी भीड़ देखी गयी।

झारखंड सिविल सेवा परीक्षा में सफल दो बहनों को राज्य की कृषि मंत्री ने किया सम्मानित

झारखंड सिविल सेवा में सफल दोनों बेटियां समाज के लिए मिशाल: शिल्पी

आजाद सिपाही संवाददाता

चान्हो। प्रखंड के पतरातू महुवाटोली में झारखंड सिविल सेवा परीक्षा में सफल हुई चान्हो के महुआटोली की दो सही बहनों दिव्या भगत और विद्या भगत को राज्य की कृषि पशुपालन एवं सहकारिता मंत्री शिल्पी नेहा तिर्की ने सोमवार की शाम पांच बजे सम्मानित किया। दोनों लड़किया साधारण किसान परिवार की हैं। दोनों की प्रारंभिक शिक्षा गांव के सरकारी स्कूल से ही हुई है। यह सम्मान समारोह विशेष रूप से उनके कठिन परिश्रम और समर्पण को सराहने के लिए आयोजित किया गया था। इस अवसर पर मंत्री ने कहा कि गांव के बच्चे भी होनहार होते हैं। आज इन दोनों बहनों ने यह साबित कर दिया। कहा कि यह उपलब्धि न केवल उनके परिवार के लिए गर्व की बात है, बल्कि पूरे राज्य के लिए प्रेरणा है। विद्या भगत ने रैंक 309 और दिव्या भगत ने रैंक 312 लाकर एक साथ अफसर बनी हैं । दोनों बहनों ने अपनी सफलता का श्रेय माता-पिता के सहयोग और खुद की लगन को दिया। मंत्री ने उन्हें उज्ज्वल भविष्य के लिए शुभकामनाएं देते हुए कहा कि ऐसी बेटियां समाज के लिए मिशाल हैं। इस मौके पर उनके पिता बिरसा भगत, माता प्रतिमा कच्छप्प को भी मंत्री ने सम्मानित किया। मौके पर अजीत कुमार सिंह, मंगलेश्वर उरांव, इरशाद खान, अब्दुल्लाह अंसारी, सुजीत शाही, नैपाल उरांव, दिलीप सिंह, जयराम टाना भगत, गूंजरी देवी, माधुरी कच्छप्प, मुखिया महादेव उरांव, एतवा उरांव, प्रवीण टोप्पो एवं सोमा उरांव आदि उपस्थित थे।

झारखंड सिविल सेवा परीक्षा में सफल बहनों को सम्मानित करती मंत्री शिल्पी नेहा तिर्की।

पिस्का के रैयतों ने भू-अर्जन विभाग की ओर से निर्धारित धनराशि का किया विरोध

समस्या को लेकर हटिया विधायक सहित संबंधित विभाग को ज्ञापन सौंपा

आजाद सिपाही संवाददाता

पिस्कानगड़ी। पिस्का मोड़ से पलमा सेक्शन आरओबी के अतिरिक्त भूखंड कार्य परियोजना के लिए पेज तीन के लिए अधिकृत भूमि राशि से विपरीत राशि पिस्का आरओबी के किनारे बसे रैयतों को दी जा रही है। जिसका नगड़ी के रैयतों ने विरोध किया है। इस संबंध में पिस्का आरओबी के किनारे बसे दर्जनों रैयतों के एक प्रतिनिधिमंडल ने रैयत राजेंद्र महतो के नेतृत्व में सोमवार को हटिया विधायक नवीन जायसवाल से भेंट कर अपनी समस्या से अवगत कराया। साथ ही मांग पत्र सौंपते हुए न्याय दिलाने की गुहार लगाई। रैयतों ने विधायक को अपनी समस्या सुनते हुए कहा कि सरकार एवं अर्जन विभाग द्वारा यहां दोहरा मापदंड अपनाया जा रहा है। आरओबी पिस्का के तीसरा पेज बनाने के लिए उन लोगों की जमीन का अधिग्रहण तो कर रही है, लेकिन राशि बहुत कम दी जा रही है। जबकि हम लोगों की जमीन व्यवसायिक है। इसीलिए हम सब को व्यावसायिक दर पर जमीन का मुआवजा मिलना चाहिए। इससे संबंधित भू अर्जन विभाग के अधिकारी हमें आवासीय दर से मुआवजा राशि दे रहे हैं, जो हमें स्वीकार्य नहीं है। अगर हमें व्यावसायिक दर पर मुआवजा राशि नहीं दी जाती जायेगी, तो अपनी जमीन आरओबी बनाने के लिए नहीं देंगे। विधायक से आग्रह हैं हमारी बात सरकार एवं संबंधित अधिकारी तक पहुंचायें। इस पर विधायक नवीन जसवाल में ग्रामीणों से कहा कि वे उनके साथ हैं। ग्रामीणों की समस्या का समाधान करना प्राथमिकता रहेगी। इस संबंध में रांची डीसी से बात करूंगा। इस मौके पर साहेर पंचायत के पूर्व पंसस मधुबाला देवी, मनोज महतो, ओंकार शर्मा, झूलन केसरी, दीपक केसरी, उमेश महतो, मंटू केसरी, गोवर्धन साहू, अजय केसरी, पवन केसरी, राजेंद्र केसरी, प्रकाश केसरी, रंजीत महतो, आनंद केसरी, बबलू साव, बालकरण महतो, बलराम महतो, राहुल केसरी आदि उपस्थित थे।

कला बच्चों में छिपी संवेदनशीलता, आत्मविश्वास और रचनात्मक ऊर्जा को बाहर लाने का माध्यम: प्रधानाचार्य

पिठोरिया (आजाद सिपाही)। प्रस्तावित सुकुरहुटू उच्च विद्यालय में चल रही हस्तकला और चित्रकला की विशेष कक्षाएं इन दिनों चर्चा का केंद्र बनी हुई हैं। इन कक्षाओं का उद्देश्य बच्चों में रचनात्मकता, आत्म-अभिव्यक्ति और दृष्टिकोण के विकास को प्रोत्साहित करना है। बच्चे अब न केवल सीख रहे, बल्कि अपनी सोच को रंगों और आकारों के माध्यम से व्यक्त कर रहे हैं। शिक्षकों द्वारा कक्षा में बनाये गए प्रेरक रेखाचित्र न केवल उन्हें तकनीकी समझ दे रहे हैं, बल्कि कल्पनाशक्ति को भी पंख लगा रहे हैं। प्रधानाचार्य ने बताया कि इस पहल की जरूरत इसलिए है कि शिक्षा केवल किताबी न रह जाए। कला बच्चों के भीतर छिपी संवेदनशीलता, आत्मविश्वास और रचनात्मक ऊर्जा को बाहर लाने का माध्यम बनती है। शिक्षकों का मानना है कि जब बच्चे रंगों से सीखते हैं, तो वे सिर्फ कला नहीं, बल्कि जीवन के भाव और अनुभवों को भी आत्मसात करते हैं। इससे उनकी एकाग्रता, संप्रेषण और सोचने की क्षमता में भी सुधार आता है। विद्यालय की इस पहल को स्थानीय अभिभावकों और ग्रामवासियों से भी भरपूर समर्थन मिल रहा है। ग्रामीणों ने इसे बच्चों के समग्र विकास की दिशा में एक ऐतिहासिक कदम बताया है।

बारिश में भी आस्था भारी, हर-हर महादेव के जयकारे से गूंजे शिवालय

नामकुम (आजाद सिपाही)। सावन की तीसरी सोमवारी को भी क्षेत्र के सभी शिवालयों में शिवभक्तों की भीड़ उमड़ी। तेज बारिश के बावजूद आस्था भारी रही। श्रद्धालुओं ने कतार में लगकर पूजा अर्चना की। शिवभक्त हर-हर महादेव, ऊं नम शिवाय एवं बोल-बम का जयघोष करते हुए आगे बढ़ते रहें। शिवलोक धाम मरासिल्ली पहाड़ पर रविवार की देर रात से ही शिवभक्त जुटने लगें थे। रात से ही दर्जनों दुकानें सजने लगी थी। इस दिन तड़के तीन बजे मंदिर खुलने के बाद सभी ने पूजा अर्चना की। सोमवारी को लेकर कांके विधायक सुरेश कुमार बैठा एवं आइएएस अधिकारी मनीष रंजन परिवार सहित मरासिल्ली पहाड़ पहुंचे और पूजा अर्चना की। देर शाम तक श्रद्धालुओं की लाइन लगी रही। श्रद्धालुओं की सुविधा के लिए ट्रस्ट के सदस्य सेवा में लगे हुए थे। ट्रस्ट के किशोर कुमार, राजेश वर्मा, विजय राय, दिनेश सिंह, गोवर्धन राय, विकास जयसवाल, आशुतोष राय, नरेंद्र राय, भीम राय, संजय राय, रुद्रेश्वर राय, सुरत राय, अशोक राय, मोहन शर्मा, चंदन कुमार, दीपक वर्मा, राजू सिंह आदि सेवा में लगें थे।

श्रद्धालु पहाड़ पर कांच की शीशी ना लायें

शिवलोक धाम मरासिल्ली पहाड़ ट्रस्ट के सदस्यों ने पहाड़ पर कांच की शीशी लाने से मना किया है। अध्यक्ष दयानंद राय ने बताया कि कांच की शीशी में गंगाजल एवं शहद लेकर श्रद्धालु पहाड़ पर आते है। शीशी जहां-तहां फेंक देते है, जिससे वह टूट जाती है। श्रद्धालुओं के पैर में गड़ जाती है। कई लोगों ने इसकी शिकायत की है। उन्होंने पूजन सामग्री बेचने वालों से भी कांच की शीशी नहीं बेचने का आग्रह किया है।

कलकत्ता पब्लिक स्कूल ओरमांझी में हास्टल के छात्रों ने स्कूली छात्र को बेरहमी से पीटा

परिजनों ने स्कूल प्रबंधक पर लगाया लापरवाही का आरोप, थाना में मामला दर्ज

आजाद सिपाही संवाददाता

ओरमांझी। थाना क्षेत्र स्थित कलकत्ता पब्लिक स्कूल में सोमवार की सुबह 10.30 से 11 बजे के बीच 12वीं के छात्र शौर्य राज (17) के साथ मारपीट किये जाने का मामला प्रकाश में आया है। पता चला है कि वह अपनी कक्षा में लंच करके बैठा था। तभी 15-16 की संख्या में हॉस्टल के छात्र कक्षा में पहुंचे और शौर्य राज पर लात-घूसों की बारिश कर दी। उसकी बेरहमी से पिटाई कर घायल कर दिया। उधर, मारपीट की खबर मिलते ही शिक्षकों और निदेशक ने विद्यार्थियों को शांत कराया। उधर, घटना की जानकारी होते ही छात्र के परिजन भी विद्यालय पहुंच गये और विद्यालय प्रबंधक से बात की। घटना का फुटेज देखा और दोषियों पर कार्रवाई करने की मांग की। इस पर विद्यालय प्रबंधक ने दोषी विद्यार्थियों पर कार्रवाई करने का आश्वासन दिया। दूसरी ओर, घटना से नाराज परिजनों ने घायल छात्र का इलाज स्वास्थ्य केंद्र डुण्डे में कराने के बाद ओरमाझी थाना में लिखित आवेदन सौंपा। जिसमें विद्यालय प्रबंधक पर लापरवाही का आरोप लगाते हुए दोषी छात्रों एवं विद्यालय प्रबंधक के किलाप कानूनी कार्रवाई करने की मांग की। उधर, विद्यालय प्रबंधक से बातचीत करने पर उन्होंने कहा कि घटना दुःखद है। ऐसी घटना नहीं होनी चाहिए।

अधिवक्ता के टाइपिस्ट का अपहरण

धनसार (आजाद सिपाही)। धनबाद के चर्चित अधिवक्ता सह बार एशोसिएशन के पूर्व अध्यक्ष राधेश्याम गोस्वामी के टाइपिस्ट आकाश सिन्हा का धनसार से अपहरण कर लिये जाने का मामला प्रकाश में आया है। आकाश अपने घर जामाडोबा के टाटा कालोनी से धनबाद कोर्ट के लिए सोमवार को स्कूटी से जा रहे था, तभी धनसार मं अपहरणकर्ताओं ने स्कूटी सहित अपहरण कर लिया। सुशील सिन्हा नामक युवक ने एक लाख 30 हजार रुपये की रंगदारी भी मांगी जा रही है। इस बाबत आकाश के पिता रंजन सिन्हा ने सुशील सिन्हा पर अपने बेटे का अपहरण करने की शिकायत धनसार थाने में दर्ज करायी है। उधर, मामले की गंभीरता को देखते हुए धनसार पुलिस ने आकाश की स्कूटी सहित पुराना स्टेशन निवासी प्रमोद सिंह नामक युवक को चांदमारी रोड स्थित एक होटल के पास से गिरफ्तार किया है। वहीं, आकाश की तलाश में जगह-जगह छापामारी की जा रही है। स्वजनों को आशंका है कि आकाश ने धनबाद के रोहित नामक व्यक्ति को एक चेक भी दिया था। इसी आलोक में पैसों की वसूली को लेकर संभवतः अपहरण किया गया है। वहीं, शिकायतकर्ता रंजन ने बताया कि शाम चार बजे उनके बेटे को अज्ञात लोगों ने मारपीट करते हुए अपने साथ उठा ले गये। अपहरण करने वाले वाला युवक खुद अपना नाम सुशील सिन्हा बता रहा था। वह आकाश के मोबाइल से अधिवक्ता के सहयोगी सोनू के मोबाइल पर फोन कर एक लाख 30 हजार देने की मांग की है। उसने सोनू से फिलहाल फोन पे पर 10 हजार रुपये भेजने को कहा। नहीं देने पर आकाश को जान से मारने की धमकी दी है। उधर, घटना के बाद पुलिस ने आकाश की स्कूटी में लगे जीपीएस के सहारे चांदमारी से बरामद कर लिया है। उक्त स्कूटी को पुराना स्टेशन के प्रमोद सिंह चलाते हुए चांदमारी आया था। जहां से पुलिस ने धर दबोचा। वहीं आकाश के मोबाइल फोन की लोकशेन पर पुराना स्टेशन, मनईटाड़, गांधी रोड इलाके में छापामारी की। हालांकि आकाश का अंतिम लोकशेन धनसार बताया जा रहा है।

महादानी मंदिर में उमड़ी श्रद्धालुओं की भारी भीड़

बेड़ो (आजाद सिपाही)। सावन की तीसरी सोमवारी पर महादानी मंदिर सहित बेड़ो प्रखंड के विभिन्न शिवालयों में श्रद्धालुओं का तांता लगा रहा। हर-हर महादेव, ऊं नमः शिवाय और बोल बम के जयघोषों के साथ सैंकड़ों श्रद्धालुओं ने भगवान भोलेनाथ पर जलाभिषेक कर सुख समृद्धि की कामना की। मंदिर में अहले सुबह से ही श्रद्धालुओं की भीड़ लगी रही। भगवान शिव से अपनी मुरादें मांगते हुए महिलाओं-पुरूषों ने सोमवारी व्रत रखा। वहीं, मंदिर के पुजारी अशोक पंडा एवं मेघनाथ गिरी ने व्रतियों को पूजा अर्चना कराया। प्रखंड के मुड़हर पहाड़ एवं जरिया शिव मंदिर में भक्तों की भारी भीड़ लगी रही। दूसरी ओ्र, शाम में श्रद्धालुओं ने महादानी मंदिर में महादानी बाबा एवं जरिया में भगवान भोलेनाथ का भव्य श्रृंगार किया।

सड़क हादसे में तीन घायल, एक गंभीर

बेड़ो (आजाद सिपाही)। थाना क्षेत्र के बेड़ो-लोहरदगा मार्ग पर सोमवार की सुबह 11 बजे करांजी पुल के समीप सड़क पर अचानक कुत्ता आ जाने से बाइक सवार गिर कर घायल हो गये। उनकी पहचान मांडर के कंदरी मोड़ निवासी सरफराज हक (20), अंजुम हक (38) और नजफ हक (10) के रूप में हुई है। तीनों रिश्ते में मां-बहन-भाई हैं। जानकारी के मुताबिक इस दिन सुबह सरफराज अपनी मां अंजुम हक और बहन नजफ हक को बाइक पर बिठा कर जा रहा था। तभी रास्ते में अचानकर कुत्ता आ जाने से उसका संतुलन बिगड़ गया और सड़क पर गिर गया। इस हादसे में तीनों को चोट आई है। स्थानीय लोगों की मदद से तीनों को बेड़ो सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र पहुंचाया गया। प्राथमिक उपचार के बाद गंभीर रूप से घायल सरफराज को रिम्स अस्पताल रेफर कर दिया।

बेड़ो में 262 छात्रों के बीच साइकिल का वितरण

बेड़ो (आजाद सिपाही)। झारखंड सरकार के कल्याण विभाग की ओर से प्रदत्त निःशुल्क उन्नति का पहिया साइकिल वितरण योजना के तहत प्रखंड मुख्यालय परिसर में सोमवार को 8वीं कक्षा के विद्यार्थियों के बीच साइकिल का वितरण किया गया। पंचायत सचिव करमु कंडीर ने कहा कि छात्र-छात्राओं को शिक्षा के प्रति प्रेरित करने के लिए सरकार ने यह योजना शुरू की है, जो छात्रों के शैक्षणिक उन्नति में काफी मददगार साबित होगी। उन्होंने कहा कि ग्रामीण क्षेत्रों के विद्यार्थियों को साइकिल मिलने से काफी सहूलियत होगी। वे समय पर स्कूल आ सकेंगें। बताया कि प्रखंड क्षेत्र के बेड़ो, जरिया, तुको एवं असरो स्कूलों के विद्यार्थियों के बीच कुल 262 साइकिलों का वितरण किया गया। इस मौके पर शिक्षक अरुण कुमार साहू, कुलदीप राम, विजय उरांव, शिक्षिका सीमा चौरसिया आदि मौजूद थे।

आजसू ने मृतक के परिजनों की आर्थिक मदद की

अनगड़ा (आजाद सिपाही)। विगत दिनों हेसल मंझिला टोली में धान रोपनी के दौरान वज्रपात की चपेट में आकर धर्मनाथ महतो की पत्नी सीता देवी की मौत हो गई थी। इसकी सूचना पाकर सोमवार को आजसू के जिला सचिव सह समाजसेवी अजीत महतो एवं प्रखंड अध्यक्ष जगरनाथ महतो मृतका के घर पहुंचे और शोक संतप्त परिवार के प्रति संवेदना प्रकट की। उन्होंने मृतका के दशकर्म के लिए परिजनों को खाद्य सामग्री और नकद आर्थिक सहयोग भी किया। कहा कि आगे भी आजसू पीड़ित परिवार को हर संभव सहयोग के लिए तत्पर रहेगा। इस मौके पर प्रेमनाथ महतो और सहज नाथ महतो आदि उपस्थित थे।

ओरमांझी में शिवालयों में उमड़ी भक्तों की भीड़

ओरमाझी (आजाद सिपाही)। सावन माह की तीसरे सोमवारी को महाकालेश्वर धाम उलातु, दुर्गा महादेव मंदिर ओरमांझी, गगारी धाम सहित क्षेत्र के सभी शिवालयों में सुबह पांच बजे से ही श्रद्धालु शिवलिंग पर जलाभिषेक करने पहुंचने लगे। भक्त अपने हाथों में जल, फुल,वेलपत्र और नारीयल-रोडी आदि पूजा सामग्री लेकर हर हर महादेव और बोल बम का जय कारे लगाते मंदिर पहुंचे और शिव लिंग पर जलाभिषेक कर अपने परिवार एवं देश की खुशहाली की कामना की। शाम तक भक्तगण पूजा अर्चना करते दिखे। मंदिरों में भजन कीर्तन का भी आयोजन किया गया था। वहीं, महाकालेश्वर धाम में मंदिर समिति की ओर से भक्तों के बीच प्रसाद का वितरण किया गया। समिति के मुख्य संरक्षक अमरनाथ चौधरी ने बताया कि पांच हजार से अधिक भक्तों ने जलाभिषेक किया है।

आवास पूरा नहीं करने पर कार्रवाई : उषा मिंज

लापुंग (आजाद सिपाही)। प्रखंड अंतर्गत सापूकेरा पंचायत के फतेहपुर गांव में सबसे ज्यादा अबुआ आवास लंबित है। बीडीओ उषा मिंज ने प्रखण्ड कर्मी सहित औचक निरीक्षण किया। इसमें अबुआ आवास लाभुकों को सख्त निर्देश दिया कि वे दो दिनों के अंदर अपने आवास की ढलाई का काम शुरू नहीं करेंगें, तो उनके विरूद्ध सख्त कार्रवाई की जाएगी। वहीं, पंसस के पति नसीम आलम को आदेश दिया कि वे खुद इसकी निगरानी करें और मंगलवार से काम शुरू कराएं। इस मौके पर मुखिया सविता उरांव, प्रखंड समन्वयक विनोद ऋषि नंदन, कनीय अभियंता साकेत गिरी, पंचायत सहायक पंकज खाखा आदि थे।

प्रतिभा सम्मान सह तकनीकी शिक्षा प्रचार कार्यक्रम आयोजित

तकनीकी शिक्षा का महत्व बढ़ गया है: डॉ अमर चौधरी

10वीं-12वीं के उत्कृष्ट विद्यार्थियों को किया गया सम्मानित

आजाद सिपाही संवाददाता

नामकुम/अनगड़ा। कैम्ब्रिज इंस्टीट्यूट ऑफ पॉलिटेक्निक के सौजन्य से सोमवार को हेसल पंचायत भवन में प्रतिभा सम्मान सह तकनीकि शिक्षा जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। मुख्य अतिथि के रूप में रांची विश्वविद्यालय एवं जेटीयू के पूर्व रजिस्ट्रार डॉ अमर कुमार चौधरी, मुख्य वक्ता शिक्षाविद डॉ रिझू नायक और विशिष्ट अतिथि उपप्रमुख जयपाल हजाम थे। हेसल पंचायत मुखिया कविता देवी एवं समाजसेवी कृष्णा भगत की अगुआई में आयोजित इस कार्यक्रम में 80 फीसदी से अधिक अंक प्राप्त करने वाले मैट्रिक एवं इंटर के 51 विद्यार्थियों को सम्मानित किया गया। इस मौके पर डॉ अमर कुमार चौधरी ने कहा कि स्थानीय जनप्रतिनिधि एवं प्रतिष्ठित संस्थान कैंब्रिज इंस्टिट्यूट ऑफ पॉलिटेक्निक की यह पहल काफी सराहनीय है। आज के दौर में तकनीक के बढ़ते प्रयोग और इस क्षेत्र में जीविका की असीम संभावना ने तकनीकी शिक्षा के महत्व को काफी बढ़ा दिया है। ऐसे में विद्यार्थियों को इसके लिए जागरूक करना प्रशंसनीय कार्य है। डॉ रिझू नायक ने कहा कि शिक्षाविद एवं सीआईटी के संस्थापक स्व डॉ बहादुर सिंह का सपना था क्षेत्र में तकनीकी शिक्षा को बढ़ावा मिले। उन्होंने इस सपने को साकार करने का बीड़ा उठाया और झारखंड में निजी क्षेत्र का पहला तकनीकी कॉलेज टाटीसिलवे में सीआईटी के रूप स्थापित किया। डॉ नायक ने कहा कि कैम्ब्रिज ग्रुप ने डॉ बहादुर सिंह के सोच को आगे बढ़ाने की यह शानदार पहल की गई है। जिसकी जितनी भी सराहना की जाए कम है। मुखिया कविता देवी ने कहा कि स्थानीय विद्यार्थियों को तकनीकी शिक्षा प्राप्त करने में जनप्रतिनिधियों व कैंब्रिज ग्रुप की ओर से हर संभव मदद उपलब्ध कराया जायेगा। कार्यक्रम में मौजूद लगभग 100 विद्यार्थियों ने तकनीकी शिक्षा ग्रहण करने में अपनी रूचि जताते हुए नामांकन के लिए पंजीकरण कराया। कार्यक्रम में उपप्रमुख जयपाल हजाम, सिरका पंचायत मुखिया रोशन लाल मुंडा, हेसल ग्राम प्रधान रामनाथ करमाली, मासू ग्राम प्रधान देवराज पाहन आदि ने भी अपने विचार व्यक्त किए। बता दें कि इसके पूर्व शुक्रवार को क्षेत्र में जागरूकता रथ को रवाना किया गया था। इस मौके पर उपमुखिया दुर्गा पाहन, संतोष पाठक, कृष्णा भगत, विष्णु महतो, बलराम मुंडा, रामेश्वर महतो के अलावे कैंब्रिज ग्रुप के अधिकारी डॉ रणवीर कुमार, मनीष नाथ, संतोष महतो, प्रो अंकित सिंह, धर्मेंद्र तिवारी, मंतोष करमाली, लखिन्द्र महतो आदि उपस्थित थे।

ओरमांझी के आनंदी गांव में छह दुकानों में चोरी

ओरमांझी (आजाद सिपाही)। थाना से महज 500 मीटर दूर आनंदी चौक पर चोरों ने छह दुकानों का शटर काट कर चोरी की घटना को अंजाम दिया है। इससे नाराज दुकानदारों ने पुलिस की पेट्रोलिंग पर सवालिया निशान खड़ा किया है। उधर, चोरी की सूचना मिलते ही ओरमांझी थाना प्रभारी सक्रिय हो उठे। आसपास लगे सीसीटीवी फुटेज की जांच करते हुए चोरों को जल्द गिरफ्तार करने का आश्वासन दिया।

सड़क दुर्घटना में सेवानिवृत्त शिक्षक घायल, रिम्स रेफर

बेड़ो (आजाद सिपाही)। थाना क्षेत्र के बेड़ो साईं मंदिर सड़क पर हुटार जंगल के बिरनीबेडा मोड़ के समीप सोमवार की शाम पांच बजे अज्ञात वाहन की चपेट में आने से बाइक सवार सेवानिवृत्त प्रधानाध्यापक लाल बहादुर सिंह (67) गंभीर रूप से घायल हो गये। वे नगड़ी के नारो के रहने वाले हैं। उनका दोनों पैर टूट गया है। शरीर के कई हिस्सों में भी गंभीर चोटें आयी। लापुंग से लौट रहे प्लस टू उच्च विद्यालय के प्रधानाध्यापक अमरेंद्र कुमार राय ने अन्य शिक्षकों की मदद से उन्हें अपनी कार से बेड़ो सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र पहुंचाया। जहां चिकित्सकों ने प्राथमिक उपचार के बाद बेहतर इलाज के लिए रिम्स अस्पताल रेफर कर दिया। जानकारी के अनुसार लाल बहादुर सिंह लापुंग के घघारी बाबा धाम और साईं मंदिर में पूजा-अर्चना कर अपनी बाइक से वापस लौट रहे थे, तभी एक कार ने उन्हें टक्कर मार दी और मौके से फरार हो गया।

सिसई : हाइवा से टक्कर में स्कॉर्पियो चालक की मौत

एक व्यक्ति गंभीर रूप से घायल और चार अन्य लोगों को हल्की चोट आयी

आजाद सिपाही संवाददाता

सिसई। गुमला रांची फोरलेन पर महुआडीपा स्टेडियम के पास सिसई से रांची की ओर जा रही स्कॉर्पियो जेएच 01 बीएच 0188 और गुमला की ओर आ रही अज्ञात हाइवा में आमने सामने जोरदार टक्कर हो जाने से स्कॉर्पियो चालक राहुल राम पिता जितेंद्र राम ग्राम सिंगरा कला डाल्टनगंज निवासी की मौके पर ही मौत हो गयी। स्कॉर्पियो में सवार शंकर सिंह पिता बिंदेश्वर सिंह ग्राम सिंगरा कला डाल्टनगंज निवासी गंभीर रूप से घायल हो गये। साथ ही अन्य चार लोग उपेन्द्र राम, रूपेश कुमार सिंह लक्ष्मी देवी सहित एक अन्य सभी डाल्टनगंज निवासी को हल्की चोटें आयी हैं। टक्कर इतना जबरदस्त था कि स्कॉर्पियो के परखच्चे उड़ गये है। सूचना मिलने पर स्थानीय पुलिस सदलबल के साथ घटना स्थल पहुंची और चालक की शव को कब्जा में लेते हुए रेफरल अस्पताल सिसई लेकर आयी। वहीं स्थानीय लोगों ने घायलों को रेफरल अस्पताल सिसई पहुंचाया जहां डॉक्टरों ने चालक को मृत घोषित कर दिया। वहीं गंभीर रूप से घायल शंकर सिंह को बेहतर इलाज के लिए गुमला सदर अस्पताल भेज दिया गया बाकी चार लोगों का इलाज रेफरल अस्पताल सिसई में किया जा रहा है। जानकारी के अनुसार सभी लोग शराब का सेवन किए हुए थे जिससे इतनी बड़ी दुर्घटना का शिकार होना पड़ा।

शराब पीने से छात्रा की हालत बिगड़ी

रायडीह (आजाद सिपाही)। रायडीह प्रखंड के सुरसांग थाना क्षेत्र के एक गांव में दादी ने अपनी 17 वर्षीय नाबालिग पोती को चुल्लू शराब पिला दिया। इसके बाद छात्रा को परिजन सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र रायडीह लाये। जहां से उसे गुमला रेफर कर दिया गया। प्राप्त जानकारी के मुताबिक घर के सभी सदस्य धान रोपने खेत गये थे छात्रा और उसकी दादी घर पर ही थी। धान रोपनी को लेकर घर में दादी ने महुआ शराब बनाई थी। दादी घर में महुआ शराब पीने लगी वह नशे में आ गयी और अपनी पोती को शराब पीने की जिद करने लगी। पोती ने इनकार किया लेकिन वह बोली कुछ नहीं होगा बोलकर अपना झूठा पोती को पिला दी। इसके बाद पोती बेसुध होकर घर में पड़ी रही। परिजन रविवार की अपराह्न 4 बजे घर लौटे तो उसे बेसुध अवस्था में जमीन पर पड़ा देखा। परिवार वालों ने समझा कि उसने जहर खा लिया है क्योंकि छात्रा बोलने की स्थिति में नहीं थी। इलाज के बाद होश आने पर उसने बताया कि दादी ने जबरन उसे शराब पिला दिया है।

दो बाइक की टक्कर में चार घायल

गुमला (आजाद सिपाही)। सदर थाना क्षेत्र के बड़ा अंजन गांव के पास रविवार की रात 8 बजे दो बाइक में सीधी भिड़ंत हो गयी। घटना में डुमरडीह जाना निवासी विनयचिक बड़ाइक और उसका 10 वर्षीय पुत्र श्रवण चिक बड़ाइक घायल हो गया। वहीं आंजन सेमर डीह निवासी संदीप उरांव और डहरू उरांव भी घायल हुए। स्थानीय ग्रामीणों ने घटना की सूचना एम्बुलेंस और टोटो पुलिस को दी। एंबुलेंस घटनास्थल पहुंची और विनय श्रवण और संदीप को लेकर सदर अस्पताल पहुंची जबकि एम्बुलेंस के सायरन की आवाज सुनकर डहरू उरांव घटना स्थल से फरार हो गया। घटना में विनय और संदीप को गंभीर चोट लगी है जानकारी के मुताबिक विनय और उसका पुत्र श्रवण अपने बुआ के घर रामपुर से घर लौट रहे थे जबकि संदीप और डहरू आंजन के एक होटल में नाश्ता पानी कर अपने घर लौट रहे थे इसी बीच दोनों बाइक के बीच जोरदार टक्कर हो गयी।

एंबुलेंस ड्राइवर सहित अन्य कर्मी धरना पर

गुमला (आजाद सिपाही)। गुमला स्वस्थ विभाग में संचालित 108 एम्बुलेंस के ड्राइवर सहित अन्य कर्मी अपनी विभिन्न मांगों को लेकर सदर अस्पताल परिसर में ही धरना प्रदर्शन पर बैठ गये है। सोमवार दिन के 2 बजे उन्होंने बताया कि सम्मान एजेंसी के द्वारा 108 एम्बुलेंस का संचालन हो रहा है लेकिन एजेंसी ना तो उनके हितों का ख्याल रखती है ना ही एम्बुलेंस की स्तिथि को सही रखती है उन्होंने कहा कि उनकी सेवा के अनुरूप उन्हें मान सम्मान भी नहीं मिल रहा है। इनके हड़ताल पर चले जाने से स्वास्थ्य व्यवस्था को सही रूप से संचालित करने में दिक्कत का सामना करना पड़ रहा है। कर्मियों ने बताया पूर्व में भी विभिन्न मांगों को लेकर धरना प्रदर्शन किया गया था साथ ही उपायुक्त मुख्यमंत्री व स्वास्थ्य मंत्री को आवेदन देकर मामले से अवगत कराया गया था यह धरना प्रदर्शन पूरे राज्य में संचालित था लेकिन झारखंड सरकार आशवासन देकर हम लोगों को गुमराह करती रही लिखित आश्वासन के बाद भी आज तक हमारी मांगों को लेकर ठोस पहल नहीं की गई। सरकार हमारी मांगों को पर विचार नहीं करती है तो आगे जोरदार आंदोलन किया जाएगा। वही 108 एम्बुलेंस कमी के आंदोलन से गुमला सहित पूरे झारखंड की स्वास्थ्य व्यवस्था चरमरा गयी है। खासकर मरीज को काफी कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है।

रांची की समस्याओं को लेकर मिशन बदलाव करेगा जनआंदोलन

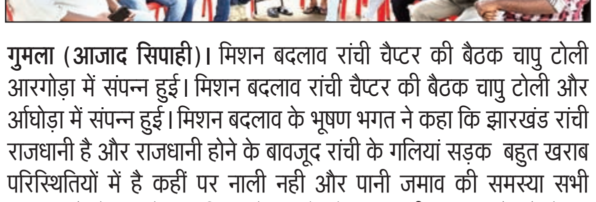

गुमला (आजाद सिपाही)। मिशन बदलाव रांची चैप्टर की बैठक चापु टोली आरगोड़ा में संपन्न हुई। मिशन बदलाव रांची चैप्टर की बैठक चापु टोली और अंघोड़ा में संपन्न हुई। मिशन बदलाव के भूषण भगत ने कहा कि झारखंड रांची राजधानी है और राजधानी होने के बावजूद रांची के गलियां सड़क बहुत खराब परिस्थितियों में है कहीं पर नाली नही और पानी जमाव की समस्या सभी समस्याओं से यहां के नागरिक परेशान है और इन सभी समस्याओं को लेकर नागरिक को उनके हक अधिकारों को लेकर जागाने की जरूरत है। मिशन बदलाव टीम के द्वारा शहरों में बैठक भी किया जाएगा और आम लोगों के साथ जुड़ने के अपील भी किया जाएगा। मिशन बदलाव के राजकुमार ने कहा कि रांची नगर निगम का लगभग 2200 करोड़ रूपया का सालाना बजट है उसके बावजूद भी पूरे नगर शहरों में समस्या वही का वही है। जब तक लोग जागरुक नहीं होंगे तब तक समस्याओं का समाधान नहीं होगा। मिशन बदलाव के पंकज चंद्र गोस्वामी ने कहा जब तक आंदोलन नहीं किया जायेगा तब तक आम लोगों के बीच में मिशन बदलाव के उद्देश्यों को हम लोग नहीं पहुंचा पायेंगे। प्रवक्ता प्रोफेसर सुभाष सामंत ने कहा अगर सकारात्मक मुद्दों के साथ रांची में प्रयास किया जाये तो रांची के नागरिकों को हम लोग ज्यादा से ज्यादा जोड़ सकते हैं और सकारात्मक चीज निकल कर बाहर आयेंगे। बैठक में मिशन बदलाव के सन्जए ब्बार्ला आकाश कुमार सानू साहू अधिवक्ता दीपक प्रधान अधिवक्ता रजनीकांत प्रणव प्रताप सिंह नित्तिश कुमार एव अन्य सदसस्य उपस्थित थे।

अल्पसंख्यक आयोग ने की बसिया दलमादी गांव के चर्चित लीज मामले की जांच

खनन तुरंत रोकने का आदेश

आजाद सिपाही संवाददाता

बसिया। राज्य अल्पसंख्यक आयोग ने बसिया के दलमादी गांव में तीजराज बिल्डकोन द्वारा चलाये जा रहे लीज क्षेत्र का आवलोकन करते हुएकई बिंदुओं पर जांच की और उसे तत्काल प्रभाव से अगले आदेश तक के लिए बंद करने का आदेश दिया है। जिला परिषद सदस्य बसंती डूंगडुंग द्वारा अल्पसंख्यक आयोग के समक्ष नियमो की अवहेलना करते हुए इस लीज कराने में प्रयुक्त गलत वंशावली, सीएनटी एसपीटी एक्ट का उलंघन करने की शिकायत की गयी थी, जिसके आलोक में सोमवार को अल्पसंख्यक आयोग के उपाध्यक्ष ज्योति सिंह मथारू, सदस्य डॉ तौसीफ एंव वारिस कुरैशी सोमवार को दलमादी गांव पहुंचे थे। लीज स्थल निरीक्षण के दौरान आयोग की टीम ने स्थानीय ग्रामीणों से पूछताछ की और लीज स्थल की जमीन का भी निरीक्षण किया। आयोग की टीम द्वारा उपस्थित एसडीओ जयवंती देवगम, डीएमओ विभूति कुमार, बीडीओ सह प्रभारी सीओ सुप्रिया भगत को आवश्यक बिंदुओं पर 13 अगस्त तक रिपोर्ट मांगी है। जांच के दौरान उपस्थित सभी रैयतों ने कहा कि पहले का जांच टीम के द्वारा उन से जांच के नाम पर सहमति ली गयी थी। उन्होंने 7 मई के एग्रीमेंट में कोई साइन नहीं किया है। आयोग द्वारा अगले आदेश तक तत्काल प्रभाव से खनन कार्य रोकने का भी आदेश दिया। आयोग की टीम द्वारा लीज स्थल पर ग्रामीणों से भी पूछताछ की गयी। जिसमें अनेकों ग्रामीणों ने गलत ग्रामसभा होने की बात आयोग के सदस्यों के समक्ष कही। इस संबंध में आयोग के उपाध्यक्ष ज्योति सिंह मथारू ने कहा कि वे लोग बसंती डूंगडुंग के द्वारा की गयी शिकायत पर जांच हेतु आये थे और प्रथमदृष्टया सीएनटी एसपीटी एक्ट के उलंघन का मामला के साथ ही ग्राम सभा मे गड़बड़ी का मामला भी प्रतीक होता है। आयोग द्वारा सभी पक्षो की बातो को सुना गया है और उसके आधार पर अंतिम निर्णय लिया जायेगा। आयोग के सदस्य वारिस कुरैशी ने कहा कि लीज के कागजातों और रैयतों के बयान, स्थल निरीक्षण पर ग्रामीणों के बयानों से प्रतीत होता है कि गलत तरीके से लीज करायी गयी है। यह पूरी तरह धोखाघड़ी का मामला बनता है। सदस्य डॉक्टर तौसीफ ने कहा कि यह मामला कही न कही संदिग्ध प्रतीक होता है। आयोग इसपर उचित निर्णय लेगा। इस संबंध में तीजराज बिल्डकोन के प्रॉपराइटर विकास साहू से भी पूछताछ की गयी मौके पर एसडीओ जयवंती देवगम, डीएमओ विभूति कुमार, बीडीओ सुप्रिया भगत, शिकायतकर्ता जिप सदस्य बसंती डूंगडुंग, रोशन बरवा, कॉंग्रेस जिलाध्यक्ष चैतू उरांव, मुंतजिर खान, विकास साहू, जेडी नायक, तिजराज बिल्डकॉन के विकास साहू, दीपक प्रसाद समेत दलमादी राजस्व ग्राम के ग्रामीण उपस्थित थे।

देवर की प्रताड़ना से तंग आकर महिला ने खाया उर्वरक

गुमला (आजाद सिपाही)। कामडरा थाना क्षेत्र के इचा गुट्टू गांव निवासी 39 वर्षीय महिला जलेश्वरी देवी ने देवर की प्रताड़ना से तंग आकर उर्वरक खा लिया। परिजन रविवार की शाम 5 बजे बजे उसे लेकर सदर अस्पताल पहुंचे जहां इलाज कराने को लेकर महिला ने हाई वोल्टेज ड्रामा किया। वह इलाज कराने को तैयार नहीं थी। परिजनों ने बताया 18 वर्ष पूर्व महिला के पति की मौत हो गयी थी इसके बाद देवर ने उसे अपने पास रख लिया। शुरूआती दौर में सब कुछ ठीक-ठाक था लेकिन इधर देवर शराब का सेवन कर उसे मारपीट करने लगा साथ ही कई प्रकार के ताने भी देता है। महिला के पहले पति से एक बच्चा है जबकि देवर से दो बच्चा जन्म लिया है। रविवार को देवर ने उसके साथ मारपीट किया साथ ही भद्दी गाली देकर ताने भी कशे। जिससे महिला आहत हो गयी और उसने गिलास में यूरिया और डीएपी घोलकर पी लिया।

चैंबर प्रतिनिधियों ने ट्रांसफार्मर लगाने की मांग की

आजाद सिपाही संवाददाता

गुमला। चैंबर ऑफ कॉमर्स का एक प्रतिनिधि मंडल चेंबर अध्यक्ष राजेश सिंह की अध्यक्षता में गुमला विद्युत विभाग के कार्यपालक अभियंता विनय कुमार से उनके कार्यालय में मुलाकात की। गुमला में बिजली से संबंधित समस्याओं पर चर्चा की लिए मुख्य रूप से अध्यक्ष श्री सिंह ने नगर में कोई भी ट्रांसफार्मर अचानक से उड़ जाने पर उसे बनाने और लगने में होने वाली देर को विकराल समस्या बताया। इसके निराकरण के लिए उपाय की मांग की।

ज्ञात रहे की दो दिन पूर्व ही धोबी मोहल्ला का ट्रांसफार्मर उड़ जाने की वजह से काफी परेशानी हो रही है। शहर के बीचोबीच ट्रांसफर्मर उड़ जाने के कई दिन बीत जाने के बाद भी सोमवार शाम तक ट्रांसफार्मर नहीं बन पाया और विभाग के पास कोई ट्रांसफार्मर है ही नहीं जिसे लाकर लगाया जाये। विभाग की तरफ से सिर्फ इतना आश्वाससन मिला कि गुमला में ट्रांसफार्मर नहीं है हम कोशिश करते हैं लोहरदगा से ट्रांसफार्मर मंगा कर लगवा दें। अध्यक्ष ने दूसरी मांग की है कि अगर ट्रॉली ट्रांसफार्मर गुमला में एक के जगह चार या पांच होता है तो इतनी समस्या नहीं होती। इसके अलावा ट्रांसफार्मर लाने और ले जाने के लिए पिकअप वाइन और हाइड्रा की भी विभाग द्वारा व्यवस्था होनी चाहिए। विभाग की तरफ से कहा गया कि उन्होंने पहले भी उच्च पदाधिकारी को ट्रॉली ट्रांसफार्मर के लिए लिखा है वे फिर से प्रयास कर रहे हैं कि कम से कम चार ट्रॉली ट्रांसफार्मर गुमला में रहे।

निवर्तमान अध्यक्ष दामोदर कसेरा ने बचे हुए मीटर रीडिंग को शीघ्र करवाने की मांग की। विभाग की तरफ से कहा गया के चार दिन के अंदर जितने भी मीटर रीडिंग बचे हुए हैं सबों को कर दिया जायेगा और स्मार्ट मीटर में जो भी गड़बड़ी हो रही है उसे लगातार सुधारा जा रहा है। मौके पर चैंबर अध्यक्ष राजेश सिंह के साथ निवर्तमान अध्यक्ष दामोदर कसेरा, चेंबर सचिव बबलू वर्मा, मीडिया प्रभारी इम्तियाज मिनी आदि उपस्थित थे।

एकता रौनियार महिला संगठन ने किया सावन मिलन समारोह का आयोजन

महिलाओं को एकजुट करने से समाज बनेगा सशक्त : लता गुप्ता

आजाद सिपाही संवाददाता

गुमला। एकता रौनियार महिला संगठन गुमला ने अपना छट्ठा वार्षिकोत्सव सह सावन मिलन समारोह मनाया। पालकोट रोड गुमला स्थित रौनियार धर्मशाला में आयोजित इस कार्यक्रम में संगठन की झारखण्ड प्रदेश अध्यक्ष लता गुप्ता भी शामिल हुईं। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए अध्यक्ष लता गुप्ता ने कहा कि महिलाएं समाज के विकास की महत्वपूर्ण कड़ी होती है। अगर महिलाएं जागरूक और एकजुट रही तो निसंकोच समाज तरक्की करेगा। साथ ही हमारे आने वाली पीढ़ियां इन महिलाओं से जागरूकता की सीख लेंगी। कार्यक्रम में सावन के खूबसूरत झूले और खूबसूरत सजावट ने सबको आकर्षित किया। नन्हे बच्चे जिया और साकची सौर्या ने खूबसूरत शिव और पार्वती के वेश धारण करके सबों का मन मोह लिया । सभी सखियों ने झूले का भरपूर आनन्द लिया ।

कार्यक्रम को सर्वप्रथम गणेश वंदना से शुरूआत किया गया। फिर अध्यक्ष लता गुप्ता और झारखंड प्रदेश से आए पदाधिकारियों द्वारा दीप प्रज्वलित कर के कार्यक्रम की शुरूआत की गयी। कार्यक्रम में झारखंड प्रदेश कोषाध्यक्ष मीनाक्षी गुप्ता, रांची बाजरा इकाई के अध्यक्ष संतोष गुप्ता, गोकुल नगर निवासी महेश प्रसाद गुप्ता और संगठन मंत्री रीता कुमारी गुप्ता, रौनियार समाज गुमला के संरक्षक, संगीतरत्न शम्भु लाल गुप्ता और उनकी धर्मपत्नी अध्यक्षा लता गुप्ता, समाजसेवी सुबोध गुप्ता और उनकी धर्मपत्नी कोषाध्यक्ष मंजू गुप्ता, बजरा इकाई से आई दीपाली गुप्ता और नीलम गुप्ता को तुलसी के पौधे , क्राउन पहना कर और शॉल ओढ़ा कर सर्टिफिकेट देकर सम्मानित किया गया। साकची सौर्या और जिया ने खूबसूरत नृत्य प्रस्तुत किया।

संगठन की सचिव सरिता गुप्ता ने शिव पार्वती के भजन में मनमोहक नृत्य प्रस्तुत किया। सात समुंदर पार गीत में सुलोचना गुप्ता ने एकल नृत्य किया। कार्यक्रम में करमटोली भरसस गोकुलनगर के बीच सामुहिक नृत्य का कंपीटिशन हुआ । दोनों ने एक से बढ़कर एक सामुहिक नृत्य पेश करके सभी का दिल जीत लिया और दोनों के परफॉर्मेंस में फर्क कर पाना मुश्किल हो रहा था इसके कारण उनका रिजल्ट टाई घोषित कर दिया गया और दोनों समूह को सामुहिक रूप से तुलसी पौधे देकर सम्मानित किया गया। अध्यक्ष लता गुप्ता ने सखियों के संग बहुत ही खूबसूरत सामुहिक नृत्य पेश कर कार्यक्रम में शमा बांध दिया।

28 सितंबर को रांची में राज्यव्यापी भव्य कैडर कन्वेंशन होगी : विजय सिंह

आजाद सिपाही संवाददाता

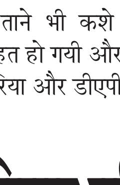

गुमला। ऑल इंडिया पीपुल्स फ्रंट व झारखंड नवनिर्माण दल प्रदेश लीडिंग टीम की आवश्यक ऑनलाइन बैठक 27 जुलाई 2025 को देर रात तक पार्टी के झारखंड प्रभारी सह झारखंड नवनिर्माण दल के केंद्रीय संयोजक विजय सिंह की अध्यक्षता में संपन्न हुई। बैठक में राज्य में फैले भ्रष्टाचार पर गहरी चिंता जतायी गयी एवं गुमला से रामगढ़ व बिहार में बेहोश पड़ी युवती के साथ सामूहिक दुष्कर्म समेत देश में महिलाओं पर बढ़ते शोषण अत्याचार पर आक्रोश व्यक्त करते हुए राज्य सत्ता के नाकामी के कारण हो रहे इस घृणित कृत्य के विरुद्ध कारगर पहल व आंदोलन संगठित करने पर विचार किया गया। वहीं राज्य से सिर्फ मजदूर, बेरोजगार व युवतियों का भर नहीं बल्कि झारखंड के बैंकों में राज्य के लोगों का जमा 50% पैसे दूसरे राज्य पलायन हो रहा है, वहीं खासकर महिलाएं माइक्रोफाइनेंस कंपनियों से ऊंचे सूद् पर ऋण लेने को मजबूर हैं जिसे बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। झारखंड से इस पूंजी पलायन को भी रोकने के लिए राष्ट्रव्यापी रोजगार व सामाजिक अधिकार अभियान के तहत राज्य के सभी 24 जिलों में अभियान के संदेश को पंपलेट व जनसंवाद के माध्यम से ले जाने पर सहमति बनी। इस मौके पर एआईपीएफ के झारखंड प्रभारी सह जेएनडी के संयोजक विजय सिंह ने कहा कि राज्य में फैले भ्रष्टाचार व गहराती जन समस्याओं का समाधान के लिए पार्टी की मजबूती जरूरी है सभी नेता कार्यकर्ता कमर कस लें। श्री सिंह ने झारखंड से पूंजी पलायन पर रोक, स्थानीय व नियोजन नीति जल्द बनाने, सहारा इंडिया समेत दर्जनों दर्जन नन बैंकिंग में लोगों के खून पसीने के जमा पैसे जल्द भुगतान करने, जैसे राज्यहित की मांगों को लेकर शहीद भगत सिंह जयंती 28 सितंबर 2025 को रांची के पुराना विधानसभा स्थित विधायक क्लब में राज्यव्यापी कैडर कन्वेंशन आयोजित करने तथा कन्वेंशन की सफलता के लिए अभी से ही नेताओं को लगने की अपील की है।

मुठभेड़ में मारे गये उग्रवादी का शव पुलिस ने परिजनों को सौंपा

घाघरा (आजाद सिपाही)। पुलिस व जेजेएमपी उग्रवादी संगठन के साथ मुठभेड़ में मरा गया तीसरा उग्रवादी सुशील मुंडा का शव को लेने उसके जीजा जी गणेश मुंडा सोमवार को घाघरा थाना पहुंचे। कागजी कार्रवाई के बाद उसे गुमला पोस्टमार्टम हाउस शव लेने के लिए भेज दिया गया। यहां बता दे कि सुशील लावादाग का रहने वाला था उसके पिता का नाम फगुआ मुंडा है। पोस्टमार्टम हाउस से मृतक के जीजा शव लेकर पैतृक गांव लावादाग पहुंचे जहां शव का अंतिम संस्कार किया गया। गणेश ने घाघरा थाना में आवेदन दे कर यह बताया कि समाचार पत्रों के माध्यम से सूचना मिली कि उसका साला सुशील मुंडा जेजेएमपी उग्रवादी संगठन में काम करता था और पुलिस के साथ मुठभेड़ में मारा गया है।

एक अगस्त को डीलरों का महाधरना प्रदर्शन

सिसई (आजाद सिपाही)। जन वितरण प्रणाली दुकानदारों के द्वारा अपनी मांगों को लेकर आगामी एक अगस्त को महाधरना दिया जायेगा। इस बावत डीलर संघ सिसई के प्रखंड अध्यक्ष मकीन अंसारी जानकारी देते हुए बताया कि डीलरों को करोना काल से लेकर अब तक अलग-अलग महिनों का कमिशन बकाया भुगतान, ग्रीन कार्ड खाद्यान्न वितरण का बकाया भुगतान, जन वितरण प्रणाली दुकानदारों के नोमिनी की अनुज्ञप्ति हस्तांतरण, स्मार्ट पीडीएस सिस्टम की खामियों में सुधार, सभी राशन डीलर को अगस्त तक 4 जी ई-पॉश मशीन उपलब्ध कराने, खाद्यान्न वितरण यथा नमक,चना दाल, का सही आप्शन जारी करने, इलेक्ट्रॉनिक वैट मशीन रिपेयरिंग में शोषण बंद करने, पेपर लैस सिस्टम लागू करने, ई-केवाईसी की जिम्मेवारी कार्डधारकों को देने सहित विभिन्न मांगों को लेकर जिला मुख्यालय में एक अगस्त को जिला के सभी प्रखंडों के डीलर्स के द्वारा महाधरना प्रदर्शन किया जायेगा। उक्त धरना प्रदर्शन कार्यक्रम में सिसई प्रखंड के सभी डीलर उपस्थित रहेंगे।

लावा नदी पुल के किनारे बना बड़ा गड्ढा

जारी (आजाद सिपाही)। जारी प्रखंड से भीखमपुर को जोड़ने वाला मुख्य सड़क पर स्थित लावा नदी पुल के किनारे इन दिनों एक बड़ा गड्ढा बन गया है। जो राहगीरों के लिए गंभीर खतरा बना हुआ है। यह गड्ढा पुल के एक ओर इतना गहरा हो चुका है कि कभी भी कोई बड़ा हादसा हो सकता है। स्थानीय लोगों के अनुसार यह गड्ढा कई दिनों से लगातार बढ़ता जा रहा है। लेकिन अब तक कोई प्रशासनिक पहल नहीं की गयी है। रोजाना इस पुल से सैकड़ों वाहन और स्कूल जाने वाले बच्चे गुजरते हैं। ऐसे में दुर्घटना की आशंका और भी बढ़ जाती है। ग्रामीणों ने बताया कि उन्होंने कई बार स्थानीय प्रतिनिधियों और अधिकारियों को इस बारे में सूचना दी है। परंतु अब तक मरम्मत का कार्य शुरू नहीं किया गया है। अगर जल्द ही इस गड्ढे को नहीं भरा गया। तो यह किसी जानलेवा हादसे का कारण बन सकता है।

तीसरी सोमवारी को निकाली गयी कलश यात्रा

जारी (आजाद सिपाही)। जारी प्रखंड के जरडा पंचायत के हुटार गांव में सावन के तीसरी सोमवार को मिनू सिंह की नेतृत्व मे भव्य कलश यात्रा निकाली गयी। इस अवसर पर 150 महिलाओं ने शंख नदी से जल उठाकर कलश यात्रा के साथ आरा लता स्थित शिव भगवान के शिवलिंग में जलाभिषेक किया। वही महिलाओं ने इस आयोजन में सक्रिय रूप से भाग लिया और पारंपरिक वेशभूषा में जलाभिषेक के लिए कलश यात्रा निकाला। वही सावन के सोमवार को शिव भगवान की पूजा का विशेष महत्व है और जलाभिषेक एक महत्वपूर्ण अनुष्ठान है जिसमें भगवान शिव को जल चढ़ाया जाता है। कलश यात्रा और जलाभिषेक जैसे आयोजन स्थानीय परंपरा और संस्कृति का हिस्सा हैं और ग्रामीण समुदायों में धार्मिक और सामाजिक एकता को बढ़ावा देते हैं। मौके पर श्रवण भगत,अमर साय,सेवती देवी, सिकन्दर नगेसिया, शिवकुमार रौतिया समेत कई श्रद्धालु मौजूद रहे।

शिविर में पांच यूनिट रक्त संग्रह

भरनो (आजाद सिपाही)। उपायुक्त गुमला के निर्देशानुसार रक्तदान शिविर प्रखंड भरनो में प्रखंड प्रमुख पारसनाथ उरांव एवं प्रखंड विकास पदाधिकारी अरुण कुमार सिंह की देखरेख में हुआ। कैंप मे पुरुषों से ज्यादा महिलाओं में उत्साह देखी गयी। बाल विकास परियोजना में कार्यरत आंगनबाड़ी सेविका अपना ब्लड जांच कराते हुए रक्त दान में हिस्सा ली। रक्तदाता का नाम सविता मिंज, किरण कुमारी, संगीता कुमारी, अलका देवी, प्रहलाद उरांव। बहुत खुशी की बात है कि महिलाएं भी पुरुषों से पीछे नहीं है। रक्तदान शिविर मे कुल 5 यूनिट रक्त इकट्ठा किया गया। शिविर में सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र भरनो के बिपिएम रविंद्र कुमार, बाल विकास परियोजना पदाधिकारी नीलम केरकेट्टा, प्रखंड कृषि पदाधिकारी राम कृष्ण ओहदार, पंचायत समिति सदस्य जहांगीर आलम, महिला पर्यवेक्षिका उर्मिला देवी, सुमन देवी सहित स्वास्थ विभाग के कर्मी उपस्थित थे।

सामुदायिक स्वास्थ्य शिविर का आयोजन

घाघरा (आजाद सिपाही)। नाबार्ड एवं बाएफ के द्वारा संचालित वाडी परियोजना घाघरा के तहत ग्राम हहरी मे सामुदायिक स्वास्थ्य शिविर का आयोजन किया गया। जिसमे डा बसंत कुमार एवं सीएचओ गम्हरिया प्रभारी अलका खलखो के द्वारा शिविर मे आये 55 लोगों को निशुल्क बीपी शुगर हेमोगलबिन आदि जांचो उपरांत सनेटरी पैड एवं दवा दिया गया। बाएफ के क्लस्टर प्रभारी प्रेम कुमार ने बताया कि स्वास्थ्य शिविर मे जांच के साथ स्वास्थ्य के प्रति जागरूक किया जा रहा है। डॉ बसंत कुमार के द्वारा लोगो को बताया कि स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहे एवं खाने मे हरा सब्जी का उपयोग करे तथा वर्ष मे एक बार बीपी शुगर का जरूर जांच कराये। शिविर में सुरेश उरांव, सोमा भगत, फागु उरांव, सरिता उरांव, महतो उरांव बुधनी उरांव आदि उपस्थित थे।

चपका में हाथी ने दो दुकान के शटर और एक घर के दरवाजा को क्षतिग्रस्त किया

घाघरा (आजाद सिपाही)। घाघरा थाना क्षेत्र के चपका गांव में एक जंगली हाथी ने दो दुकान के शटर और एक घर के दरवाजा को क्षतिग्रस्त कर दिया। एक की दुकान में रखें एक बोरी चावल को निकाल कर खा लिया और बर्बाद कर दिया। फॉरेस्ट विभाग की टीम द्वारा हाथी को भगाने का प्रयास किया गया। जो हाथी घाघरा चांदनी चौक के समीप से कॉलेज रोड होते हुए मुख्य पथ को पार कर कोटा माटी गांव पतरा पहुंचा। समाचार चलाये जाने तक पतरा में हाथी विचरण करते दिखा। फॉरेस्ट की टीम लगातार जंगल की ओर हाथी को भेजने का प्रयास कर रहे हैं। उक्त चपका निवासी पीड़ित अनूप साहू ने बताया कि हाथी ने उसके एक दुकान का शटर तोड़ दिया जबकि एक घर का दरवाजा को तोड़ दिया। जिस घर का दरवाजा तोड़ा उसमें एक लड़का सोया हुआ था। हालांकि हाथी ने लड़का को कोई क्षति नहीं पहुंचाया। उक्त घटना में लगभग 20हजार की नुकसान की बात कही।वही पीड़ित तेज नारायण भगत ने बताया कि उसके दुकान के शटर को तोड़कर दुकान में रखे एक बोरी चावल को हाथी चट कर गया। इस क्रम में लगभग 10 हजार का नुकसान हुआ है। जान जोखिम में डालकर लोग हाथी को देखने के लिए भीड़ लगाये थे। फॉरेस्ट विभाग के कईयों द्वारा लोगों को हाथी से दूरी बनाये रखने की बात कही गयी।

आजाद सिपाही
रांची, मंगलवार, 29 जुलाई, 2025
www.azadsipahi.in
11

डीसी ने दिया सभी विभागों को समन्वय बनाकर योजनाओं की प्रगति में तेजी लाने का निर्देश

अयोग्य राशन कार्डधारी खुद सरेंडर कर दें राशन कार्ड

- तीन दिनों में संबंधित विभाग आपूर्ति विभाग को आयकर दाता, वाहन मालिक, तीन कमरों के पक्का मकान धारी, पांच एकड़ से अधिक सिंचित भूमि वाले लोगों का डाटा उपलब्ध कराएं
- 15 अगस्त तक मुख्यमंत्री मंईयां योजना, सर्वजन पेंशन योजना एवं अन्य योजनाओं का अभियान चलाकर डाटा करें दुरूस्त, प्रखंड-जिला स्तर पर हेल्प डेस्क सेंटर का करें संचालन

समाहरणालय सभागार में अधिकारियों के साथ बैठक करते डीसी अजय नाथ झा।

आजाद सिपाही संवाददाता

बोकारो। जिला समन्वय समिति की बैठक सोमवार को समाहरणालय सभागार में हुई। जिसकी अध्यक्षता डीसी अजय नाथ झा ने की। इसमें विभिन्न विभागों की योजनाओं की प्रगति की समीक्षा की गई एवं पारदर्शिता, सुगमता और लाभुक केंद्रित कार्य प्रणाली पर बल दिया गया। डीसी ने सभी विभागों को आपसी समन्वय बनाकर कार्य करने और योजनाओं के क्रियान्वयन में तेजी लाने का निर्देश दिया। इस दौरान अंचल अधिकारियों को स्पष्ट निर्देश दिया कि वे आय प्रमाण पत्रों को समय पर जारी करना सुनिश्चित करेंगे। पर बिना विधिवत जांच के प्रमाण पत्र निर्गत ना करें। फर्जी जानकारी देने वालों के विरुद्ध कार्रवाई भी करें। डीसी ने फील्ड पदाधिकारियों को अपने भ्रमण की जानकारी लॉग बुक में दर्ज करने और समय-समय पर इसकी अद्यतन प्रतिवेदन जिला कार्यालय को उपलब्ध कराने का निर्देश दिया। कहा कि शिक्षा एवं समाज कल्याण विभाग आपस में समन्वय बनाकर एक महीने में अभियान चलाकर सभी आंगनबाड़ी केंद्रों में अध्ययनरत बच्चों का नजदीकी विद्यालयों में शत-प्रतिशत नामांकन सुनिश्चित कराएं। इसकी निगरानी बैठक में उपस्थित डीडीसी को करने को कहा। वहीं, पशुपालन विभाग एवं जेएसएलपीएस को निर्देश दिया कि पशुपालकों की आयवृद्धि के लिए ज्यादा से ज्यादा समूह और क्लस्टर का गठन करें। सभी चयनित लाभुकों का अकाउंट खोले। साथ ही, उन्हें मुद्रा ऋण योजना से भी जोड़ें, इससे दीदियों की आर्थिक आत्मनिर्भरता को बढ़ावा मिलेगा। साथ ही, प्रधानमंत्री सुरक्षा बीमा योजना एवं प्रधानमंत्री जीवन ज्योति बीमा योजना अंतर्गत लंबित बीमा दावों का शीघ्र निपटारा करने एवं अभिसरण योजनाओं जैसे दीदी बाड़ी, बिरसा हरित ग्राम योजना एवं सोलर लिफ्ट सिंचाई को प्रभावी ढंग से लागू करने को कहा। समीक्षा क्रम में एलडीएम से बैंकों में दीदी-भैया काउंटर खोलने की प्रगति की भी जानकारी ली। समाज कल्याण की समीक्षा क्रम में आंगनबाड़ी केंद्रों के लिए उपयुक्त भूमि चिन्हित करने को अविलंब अंचलाधिकारियों को निर्देश दिया। वहीं, जिले में कुल 715 आंगनबाड़ी केंद्रों को सक्षम आंगनबाड़ी केंद्र के रूप में चिन्हित किया गया है। इन केंद्रों को मिशन मोड में पेयजल, शौचालय, विद्युत, वॉश बेसिन जैसी सुविधाएं उपलब्ध कराई जाएं। बैठक में कसमार प्रखंड अंतर्गत नव-निर्मित पंचायत भवनों का त्वरित हैंड ओवर कराने, प्रखंड परिसर के नव-निर्मित भवनों में बिजली आपूर्ति सुनिश्चित करने एवं जरीडीह प्रखंड में डीपीएलआर से अनापत्ति नहीं मिलने के कारण रुकी योजनाओं के शीघ्र समाधान करने का उपायुक्त ने संबंधित पदाधिकारियों को निर्देश दिया। उन्होंने मनरेगा कर्मियों के ईपीएफ कटौती और वीर शहीद पोटोहो खेल मैदान चयन को लेकर डीईओ-डीएसई एवं सभी अंचलाधिकारियों को निर्देश दिया। लगे हाथ जल छाजन के तहत स्प्रिंगशेड डेवलपमेंट के लिए बीडीओ को चयनित स्थलों की सूची जिला को समर्पित करने को कहा। समीक्षा क्रम में डीसी ने आपूर्ति विभाग द्वारा जिले के अयोग्य लाभुकों का राशन कार्ड विलोपित करने को लेकर विभाग से प्राप्त दिशा-निर्देश पर डाटा तैयार करने को कहा। उन्होंने जिला परिवहन पदाधिकारी, जिला कृषि पदाधिकारी, आयकर पदाधिकारी, जिला अवर निबंधक बोकारो-तेनुघाट सभी बीडीओ-सीओ, पंचायती राज पदाधिकारी, जेएसएलपीएस आदि को निर्देशित किया कि तीन दिनों के अंदर ऐसे लोगों की पहचान कर डाटा तैयार कर आपूर्ति शाखा को उपलब्ध कराएं जो आयकर दाता, चार पहिया वाहन स्वामी, तीन कमरों के पक्के मकानधारी या पांच एकड़ से अधिक सिंचित भूमि आदि के स्वामी हैं। कहा कि आपूर्ति शाखा सभी डाटा को एक साथ एकत्र कर ऐसे लोगों का समेकित डाटा तैयार करें। उन्होंने अयोग्य लाभुकों से आगे आकर खुद राशन कार्ड सरेंडर करने की अपील की, ताकि, जरूरतमंद लोगों को राशन कार्ड का लाभ दिया जा सके। इस मौके पर डीडीसी शताब्दी मजूमदार, डीपीएलआर मेनका, अपर समाहर्ता मो. मुमताज अंसारी, अनुमंडल पदाधिकारी चास प्रांजल ढ़ांडा, अनुमंडल पदाधिकारी बेरमो मुकेश मछुआ, डीसीएलआर चास प्रभाष दत्ता, जिला परिवहन पदाधिकारी वंदना शेजवलकर, जिला आपूर्ति पदाधिकारी शालिनी खालखो, जिला भू अर्जन पदाधिकारी द्वारिका बैठा आदि उपस्थित थे।

योजनाओं से संबंधित त्रुटियां दूर की जाए

सामाजिक सुरक्षा कोषांग की समीक्षा के क्रम में डीसी ने प्रखंड एवं जिला स्तर पर झारखंड मुख्यमंत्री मंईयां सम्मान योजना, सर्वजन पेंशन योजना सहित अन्य सभी तरह की पेंशन योजनाओं से संबंधित त्रुटि-समस्या के निराकरण के लिए हेल्प सेंटर खोलने का निर्देश दिया। वहीं, राशि भुगतान के क्रम में झारखंड मुख्यमंत्री मंईया योजना, सर्वजन पेंशन योजना सहित अन्य सामाजिक सुरक्षा योजनाओं में डाटा सुधार को लेकर विशेष अभियान चलाने को कहा। साथ ही 15 अगस्त तक लाभुकों का आधार सीडिंग, बैंक विवरण में त्रुटि, दोहरी प्रविष्टि इत्यादि का समाधान करने को कहा।

राजस्व संग्रहण लक्ष्य को शत प्रतिशत पूर्ण करें : डीसी

बोकारो (आजाद सिपाही)। डीसी अजय नाथ झा ने समाहरणालय सभागार में सोमवार राजस्व संग्रहण से संबंधित समीक्षा बैठक की। इस क्रम में वाणिज्यकर बोकारो-बेरमो, निबंधन विभाग बोकारो-बेरमो, खनन, उत्पाद, नगर निगम, परिवहन, मोटरयान निरीक्षक, बाजार समिति चास-बेरमो, माप-तौल विभाग, जिला मत्स्य नगर पंचायत फुसरो सहित अन्य विभागों की ओर से किए गए राजस्व संग्रहण की मासिक प्रतिवेदन की विस्तृत समीक्षा की। उन्होंने संबंधित विभागों से उनके वार्षिक लक्ष्य एवं विगत माह के प्रदर्शन की क्रमवार जानकारी ली। राजस्व संग्रहण लक्ष्य को शत प्रतिशत प्राप्त करने के लिए जरूरी दिशा इ्र निर्देश दिया। उत्पाद एवं परिवहन विभाग को विशेष निर्देश देते हुए कहा कि ये विभाग राजस्व अर्जन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। अतः दोनों विभाग विशेष रणनीति बनाकर कार्य करें और अपने लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु पहल करें। दोनों विभागों का राजस्व संग्रहण का प्रदर्शन संतोषजनक नहीं रहने पर नाराजगी प्रकट किया।राजस्व संबंधी मामलों में दाखिल-खारिज प्रक्रिया को लेकर उपायुक्त ने सभी अंचलाधिकारियों को स्पष्ट कहा कि कोई भी मामला बेवजह रद्द नहीं किया जाए। उन्होंने कहा कि राजस्व वसूली में पारदर्शिता, जवाबदेही और गति लाने की आवश्यकता है।

बोकारो स्टील सामूहिक दुर्घटना बीमा का नवीनीकरण

बोकारो (आजाद सिपाही)। स्टील सामूहिक दुर्घटना बीमा के नवीनीकरण के साथ बोकारो इस्पात संयंत्र सहित बीएसएल के अधीन माइंस एवं कोयलरीज में कार्यरत ऑन रोल अधिशासी एवं अनाधिशासी इस योजना का लाभ ले सकते हैं। नवीनीकरण के बाद वार्षिक बीमा प्रीमियम प्रति व्यक्ति प्रति लाख रुपये के लिए सभी कर सहित मात्र 95 रुपये निर्धारित की गयी है? बोकारो स्टील सामूहिक दुर्घटना बीमा के अंतर्गत बीमाकृत राशि पचीस लाख रुपये और एम्बुलेंस एवं अंतिम संस्कार खर्च के लिए 25 हजार रुपये प्रदान किया जायेगा। बीमा कवरेज के लिए कर्मचारी के साथ पति-पत्नी एवं पांच वर्ष से 25 वर्ष तक के आश्रित बच्चे भी शामिल हैं। बीमा अवधि के बीच कंपनी में नियुक्त कर्मचारी एवं अन्य इस्पात संयंत्र से स्थानांतरित कर्मचारी यथानुपात प्रीमियम राशि की कटौती के बाद सामूहिक दुर्घटना बीमा की सदस्यता के पात्र होंगे। जिन कर्मचारियों ने गत वर्षों में इस योजना से ऑप्ट आउट का आवेदन दिया था, वह आवेदन इस वर्ष की योजना के लिए मान्य नहीं होगा। यदि कोई कर्मचारी-सदस्य इस योजना का लाभ नहीं लेना चाहते हैं, तो उन्हें 10 अगस्त तक ऑप्ट आउट का आवेदन समिति द्वारा जारी सर्कुलर के अनुसार कर सकते हैं। अगर किसी कर्मचारी की दुर्घटना से स्थाई पूर्ण अपंगता होती है तो दुर्घटना के बाद सूचना बोकारो जनरल हॉस्पिटल, सरकारी अस्पताल या अधिकृत अस्पताल द्वारा चिकित्सा अशक्तता प्रमाण पत्र प्राप्त होने के 25 दिनों के अंदर एवं किसी कर्मचारी की दुर्घटना से मृत्यु होने के 25 दिनों के अंदर समिति के सचिव को लिखित रूप में विभागीय अधिकारी द्वारा अग्रसारित करवाने के बाद विभागीय डाक या ई-मेल से दिया जा सकता है। इस बीमा योजना में ऑप्ट -इन या ऑप्ट-आउट करने के लिए नए आवेदन एचसीएम पोर्टल द्वारा ही मान्य होंगे और प्रीमियम राशि की कटौती अगस्त माह में की जाएगी।

स्नेही समाज की महिलाओं ने हर्ष के साथ मनाया सावन महोत्सव

बोकारो (आजाद सिपाही)। स्नेही (तेली) समाज महिला प्रकोष्ठ के तत्वावधान में चिरा चास में सोमवार को भव्य सावन महोत्सव का आयोजन किया गया। पारंपरिक गीतों, नृत्यों और मनोरंजक खेलों के साथ महिलाओं ने सावन के इस त्योहार को धूमधाम और उत्साह के साथ मनाया। कार्यक्रम की अध्यक्षता स्नेही समाज महिला प्रकोष्ठ की अध्यक्ष रेनू साह ने की। उन्होंने सभी महिलाओं को एकजुट करते हुए सांस्कृतिक प्रस्तुतियों का सफल नेतृत्व किया। महिलाओं ने पारंपरिक परिधान में सज-धज कर पूरे आयोजन को रंग-बिरंगा और जीवंत बना दिया। कार्यक्रम का शुभारंभ जिला परिषद अध्यक्ष सुनीता देवी और प्रसिद्ध समाजसेवी संजू देवी ने संयुक्त रूप से किया। मुख्य अतिथि ने कहा कि सावन महोत्सव केवल ऋतु परिवर्तन का उत्सव नहीं, बल्कि महिला सशक्तिकरण, उमंग और सांस्कृतिक एकता का प्रतीक है। ऐसे आयोजनों से समाज में महिलाओं की भूमिका और भी मजबूत होती है। आयोजन में स्नेही समाज के अध्यक्ष डीके. साह, महासचिव धर्मेंद्र कुमार और कोषाध्यक्ष संतोष कुमार साह सहित पूरी टीम का सराहनीय योगदान रहा।

अपार्टमेंट की महिलाओं ने मनाया सावन महोत्सव

धनबाद (आजाद सिपाही)। हरे कृष्णा अपार्टमेंट, वनस्थली कॉलोनी धनबाद की महिला समूह ने सावन महोत्सव का जश्न मनाया। बच्चों और महिला समूह के नृत्य ने माहौल को और खुशनुमा बना दिया। इसमें कपल डांस, और फनी गेम्स ने कार्यक्रम में चार चांद लगा दिया। इस मौके पर ऋतू कुमारी, शिखा मुखर्जी, नीलू, पिंकी सिंह, रेखा, कल्पना, रिंकी मण्डल, कंचन, संपा, ममता, लक्ष्मी, निशि बिहारी, ज्योति कुमारी, सुमन, सुमन केशरी, अनीता श्रीवास्तव और प्रीति रॉय आदि ने हिस्सा लिया।

महुदा में हुआ शानदार लाठी खेल का प्रदर्शन

महुदा (आजाद सिपाही)। बस्ती स्थित मिल्लत-ए-यूवा इस्लाम मोहल्ला में रविवार की शाम 'एक शाम, मरहूम अब्दुल जब्बार के नाम' के तहत भव्य नुमाइशी लाठी खेल मुकाबले का आयोजन किया गया। जिसमें कई प्रतिष्ठित लाठी खेल की टीमों ने भाग लिया और शानदार प्रदर्शन से दर्शकों का दिल जीत लिया। इस कार्यक्रम में नूरे हसनेन डाबर बहाल, नूरे अंजुमन डुमरजोड़, मासूम क्लब मुंधनिया, गुलाम-ए-हसनेन कमेटी जाला, हुसैनी फोर्स नर्रा, आखड़ा कारवाने बेलाली सिंगड़ा और खुद्दाम-ए-इस्लामिया कमेटी भर्रा की टीमों ने हिस्सा लिया। सभी टीमों के खिलाड़ियों ने अनुशासन और कौशल का परिचय देते हुए बेहतरीन लाठी प्रदर्शन किया, जिसे दर्शकों ने खूब सराहा। अंत में सभी खिलाड़ियों को मेडल और टीमों को ट्रॉफी देकर सम्मानित किया गया। इसमें बतौर मुख्य अतिथि भाटडीह ओपी के एसआई निरंजन प्रताप, मुखिया मोहम्मद बदरूद्दीन अन्मारी, पंसस दिलखुश अंसारी, समाजसेवी मोहम्मद आमान अंसारी, मुखिया महेश कुमार पटवारी, सूर्यकांत महतो, मुखिया प्रतिनिधि दिनेश प्रमाणिक, शिबू महतो और कैलाश रवानी उपस्थित रहे। वहीं, कार्यक्रम को सफल बनाने में पत्रकार रोशन जमील, शाह हुसैन, समरीद अंसारी, खुर्शीद अंसारी, बउद्दीन अंसारी आदि का योगदान सराहनीय रहा।

बाघमारा ुधियक ने मृतक के प्रदर्शनकारी परिजनों को दिलाया प्रोविजनल नियोजन

आजाद सिपाही संवाददाता

कतरास। बीसीसीयल के न्यू आकाश किनारी कोलियरी कार्यालय के समक्ष एसडीएल ऑपरेटर लक्ष्मण नोनिया (57) के शव को रखकर परिजन नियोजन की मांग को लेकर प्रदर्शन कर रहे थे। इसकी सूचना पाकर बाघमारा विधायक शत्रुघ्न महतो तुरंत मौके पर पहुंच गये औरप्रबंधक से वार्ता कर मृतक के बड़े पुत्र को प्रोविजनल नियोजन दिलवाया। जानकारी के मुताबिक 26 दिन पहले न्यू आकाश किनारी कोलियरी में एसडीएल ऑपरेटर पद पर कार्यरत लक्ष्मण नोनिया अपने कार्यस्थल में प्रथम पाली में कार्य करते समय अचानक बीमार हो गये थे। उन्हें साथियों ने तुरंत डुमरा अस्पताल पहुंचाया, जहां हालत गंभीर देख धनबाद के सेंट्रल अस्पताल रेफर कर दिया गया। जहां इलाज के दौरान रविवार की रात निधन हो गया। इसकी सूचना पाकर ट्रेड यूनियन (एटक) के नेताओं ने परिजनों के साथ मिलकर सोमवार को शव कोलियरी कार्यालय के पास रखकर नियोजन की मांग को लेकर प्रदर्शन शुरू कर दिया। इसकी खबर पाकर बाघमारा विधायक घटनास्थल पर पहुंचकर कोलयरी प्रबंधक के साथ परिजनों की वार्ता कराई। इसके बाद मृतक के बड़े पुत्र पिंटू कुमार को प्रोविजनल नियोजन देने पर सहमति बनी। साथ ही अन्य योजनाओं का भी लाभ दिए जाने को लेकर चर्चा हुई। इस मौके पर प्रबंधक की ओर से केके सिंह, महाप्रबंधक यू खान, परियोजना पदाधिकारी यशवंत कुमार जायसवाल, अमित कुमार महतो, यूनियन की ओर से बाघमारा विधायक शत्रुघ्न महतो, सुदय सिंह, राकेश सिंह, अजय सिंह, इस्लाम अंसारी, बसंत शर्मा, मोहम्मद कलीम, टेकलाल महतो और रविशंकर पांडे आदि थे।

फुड इंस्पेक्टर ने कई मिठाई दुकानों का किया निरिक्षण

गंदगी एवं मिठाई की गुणवत्ता घटिया, मनोज साव को मिठाई फैक्ट्री बंद करने का निर्देश

आजाद सिपाही संवाददाता

डुमरी/बेरमो। डुमरी थाना क्षेत्र के आइबीपी में चल रहे मनोज साव एवं डब्ल्यू कुमार की गैर लाइसेंसी लड्डु फैक्ट्री, जामतारा बेड़वा में संचालित लाईसेंसी गोपाल लड्डु फैक्ट्री और वनांचल चौक में संचालित गोपाल भोग मिठाई दुकान की जांच सोमवार को गिरिडीह के फुड इंस्पेक्टर डॉ पवन कुमार ने किया। इस दौरान मिठाई निर्माण में भारी अनियमितता पाये जाने, गंदगी एवं मिठाई की गुणवत्ता घटिया रहने के कारण मनोज साव को अपनी मिठाई फैक्ट्री बंद करने का आदेश दिया गया। उधर, निरीक्षण की भनक लगते ही डब्ल्यू कुमार अपनी मिठाई फैक्ट्री में ताला बंद कर फरार हो गया। जबकि गोपाल लड्डु फैक्ट्री में मिठाई की गुणवत्ता सही थी, लेकिन छेना पानी की निकास के लिए बने ड्रेनेज में सुधार को ले आवश्यक निर्देश दिया गया। गोपाल भोग मिठाई दुकान से जांच के लिए रसगुल्ले का सैंपल साथ ले जाया गया। बताया जा रहा कि फुड इंस्पेक्टर को प्रखंड में संचालित मिठाई फैक्ट्री में मिठाई निर्माण में की जा रही गुणवत्ता की अनदेखी, बरती जा रही अनियमितता और छेना पानी को खुले में बहाने से उसके दुर्गंध से आसपास के लोगों को होने वाली परेशानी से संबंधित शिकायत मिल रही थी। बतातें चलें कि मिठाई निर्माण फैक्ट्री एवं मिठाई दुकान से छेना पानी एवं अपशिष्ट खुले रोड या रास्ते में बहा देने से राहगीरों, आसपास के लोगों को दुर्गंध से काफी परेशानी होती है। इंस्पेक्टर ने बताया कि बिना लाइसेंस के संचालित मनोज साव को फैक्ट्री बंद करने का आदेश दिया गया है। साथ ही खराब हो चुके लड्डु को फेंक दिया गया है। जबकि मिठाई के सैंपल जांच के लिए साथ ले जा रहे हैं। वहीं, डब्ल्यू कुमार को नोटिस जारी किया जाएगा। उन्होंने बताया कि अवैध रूप से चल रहे ऐसे फैक्ट्री के संचालक को 10 लाख रुपये जुर्माना, एवं मिठाई की गुणवत्ता घटिया रहने पर पांच लाख रुपये तक के जुर्माने का प्रावधान है। गौरतलब हो कि प्रखंड में दर्जनों छोटे-बड़े मिठाई दुकान खुली है, जहां मिठाई निर्माण में घटिया सामग्री एवं रंग का प्रयोग किया जाता है। इस मौके फुड इंस्पेक्टर के सहयोगी मनीष कुमार, वसीम अकरम, एएसआई उदय कुमार आदि उपस्थित थे।

9 जुलाई की हड़ताल की समीक्षा को लेकर बैठक

करगली/बेरमो (आजाद सिपाही)। विगत नौ जुलाई की संपन्न हुई हड़ताल की समीक्षा को लेकर सोमवार को राष्ट्रीय कोलियरी मजदूर यूनियन की बोकारो एवं करगली इकाई की समीक्षा बैठक करगली महिला कल्याण मंडल में हुई। जिसकी अध्यक्षता दिगंबर महतो एवं संचालन एकेके ओसिपी के सचिव जयनाथ तांती ने किया। यूनियन के सोशल रीजनल अध्यक्ष श्यामल सरकार और सचिव महेश सिंह ने कहा कि यदि कोयला मजदूर संगठित नहीं हुए तो केंद्र सरकार कोयला उद्योग में निजी क्षेत्र को बेतहाशा पूंजी निवेश की बढ़ावा देगी।

अधिशासी निदेशक (संकार्य) क्वालिटी सर्कल ट्रॉफी 2025 का हुआ आयोजन

बोकारो (आजाद सिपाही)। अधिशासी निदेशक (संकार्य) क्वालिटी सर्कल ट्रॉफी 2025 का आयोजन मानव संसाधन के ज्ञानार्जन एवं विकास केंद्र में आयोजित किया गया। जिसका उद्घाटन अमरेश सिन्हा महाप्रबंधक (बिजनेस एक्सीलेंस) ने किया। इस दौरान अनुपमा तिवारी महाप्रबंधक (बिजनेस एक्सीलेंस) ने प्रतिभागियों को अधिक से अधिक परियोजनाओं के साथ क्वालिटी सर्किल टूल्स के व्यापक उपयोग करने के लिए प्रोत्साहित किया। निर्णायक मंडल में शामिल डॉ तृप्ति चंद्रा, (एसीएमओ) बोकारो जनरल अस्पताल ने क्वालिटी सर्कल के बारे में अपने अनुभव को साझा किया। बाहरी और आंतरिक प्रशिक्षण सत्रों के माध्यम से कार्यस्थल पर नवीन विचारों को विकसित करनेके बिजनेस एक्सीलेंस विभाग के प्रयासों की सराहना की। इस मेगा आयोजन में बोकारो इस्पात संयंत्र के विभिन्न विभागों के प्रतिभागियों ने भाग लिया। इसमें बीएसएल की कुल 40 क्वालिटी सर्कल टीमों ने अपनी प्रस्तुति दी। बिजनेस एक्सीलेंस विभाग से वरीय प्रबंधक देवयानी चक्रवर्ती एवं सागरिका साहू ने अपनी टीम के साथ पूरे कार्यक्रम का संचालन किया।

JHARKHAND BIJLI VITRAN NIGAM LIMITED
(CIN: U40108JH2013SGC001702)
ELECTRIC SUPPLY AREA, HAZARIBAG
JULU PARK, HAZARIBAG, PIN NO. - 825301
E-mail id:- general.manager12@gmail.com,Phone :- 06546-226949

e-Tender Notice for selection of agency to provide technical and non-technical manpower resource for runningoperation &maintenance of 33 KV, 11 KV, LT lines on OH conductor/AB Cable/Arial cable lines& UG cable and 11/0.415kV distribution transformers etc., revenue realization activities and operation &maintenance related works of 33/11 KV Power Sub-Station for areasunder jurisdiction of Electric Supply Circle, Kodermaof Electric Supply Area, Hazaribag.

Online tender is invited from reputed experienced/Govt. Registered, technicallyand financially sound agencies/contractor, having past experience of providing/ handling of Technical resource in the electricity distribution discom/power utility to provide technical and non-technical manpower resource for running operation & maintenance of 33 KV, 11 KV, LT lines on OH conductor/AB Cable/Arial cable lines & UG cable and 11/0.415kV distribution transformers etc., revenue realization activities and operation & maintenance related works of 33/11 KV Power Sub-Station for areas under jurisdiction of Electric Supply Circle,Koderma under Electric Supply Area, Hazaribag.
- Head O&M
- F.Y. 2025-26.

NIT No. 118/PR/JBVNL/2025-26

Sl. No.	Name of Particulars	Category of Manpower	Unit	Qty.	EMD (In Rs.) for 01 years	Cost of BOQ non-refundable (In Rs.)
1.	To provide technical and non-technical manpower resource for running operation & maintenance of 33 KV, 11 KV, LT lines on OH conductor/AB Cable/Arial cable lines & UG cable and 11/0.415kV distribution transformers etc., revenue realization activities and operation & maintenance related works of 33/11 KV Power Sub-Station for areas under jurisdiction of Electric Supply Circle, Kodermaof Electric Supply Area, Hazaribag.	Switch Board Operator Gr.-II I.T.I. Trained (Electrical)	Nos.	48	Rs. 1350000.00	20000+3600 = 23,600 (including 18% GST)
		Junior Line Man I.T.I. Trained (Electrical)	Nos.	31		
		Un-skilled Khalasi (Matric Pass)	Nos.	130		
		Total No. of Manpower	Nos.	209		

IMPORTANT SCHEDULE OF DATES .
a) The schedule of issue, submission and opening of tender documents are given hereunder.

1	**Availability of tender document on website**	:-	Tender documents to be downloaded from www.jharkhandtenders.gov.in From 28/07/2025
2	Last date and time for submitting e-tender	:-	18/08/2025upto 18:00 Hrs.
3	Last date and time of submission of original DD towards Cost of BOQ & EMD and hard copy of offline submission.	:-	19/08/2025upto 17:00 Hrs.
4	Date and time of opening of tender (Techno- Commercial Cover) i.e. Cover-I	:-	20/08/2025 at 14:00 Hrs.

b) If any"Holiday" falls on any of the scheduled date, then the next working day (between mentioned working hours) shall be considered as the scheduled date.

Note :- Quantity and category of manpower indicated above shall be used for tender evaluation andactual Manpower requirement may increase or decrease as per requirement from field officials.
1. Guidelines for online submission of bids can be downloaded from the website http://jharkhandtenders.gov.in
2. Interested bidders can download the bid from the website http://jharkhandtenders.gov.in
3. Bidders should be ready with the scanned copies of cost of documents & EMD as specified in the tender document. Before submission of online bids, bidders must ensure that scanned copies of all necessary documents have been attached with bid.
4. Bidders have to produce the original Demand Draft towards tender fee & EMD as mentioned in NIT to the Accounts Officer, Electric Supply Area, Hazaribag and collect the money receipt before the cutoff date & time as mentioned in the NIT failing which bid will not be accepted. The details of cost of documents, EMD specified in the tender documents should be the same as submitted online (scanned copies) otherwise tender will summarily be rejected.

स्वहित एवं राष्ट्रहित में ऊर्जा बचावें। कृपया अपनी शिकयतों को टॉल फ्री नं० 1800 345 6570 पर दर्ज करायें।

Sd/-
General Manager-Cum-CE
Electric Supply Area, Hazaribag

PR 358367 Jharkhand Bijlee Vitran Nigam Ltd(25-26).D

शाओलिन मंदिर के प्रमुख पर कई बच्चे पैदा करने का आरोप

चीन में महिलाओं से संबंध रखने पर महंत शी योंगक्सिन बर्खास्त

- बौद्ध संघ ने मान्यता रद्द की, दीक्षा प्रमाणपत्र छीन लिया गया

आजाद सिपाही संवाददाता

नयी दिल्ली। चीन के मशहूर शाओलिन मंदिर के प्रमुख महंत शी योंगक्सिन को बर्खास्त कर दिया गया है। उन पर मंदिर की संपत्ति और फंड के गबन, कई महिलाओं से अवैध संबंध रखने और नाजायज बच्चों के पिता होने जैसे संगीन आरोप लगे हैं।

चाइना डेली की रिपोर्ट के मुताबिक कई सरकारी एजेंसियां मिलकर इन आरोपों की जांच कर रही हैं। इस बीच चीन के बौद्ध संघ ने सोमवार को उनका दीक्षा प्रमाणपत्र छीन लिया है। संघ ने अपने बयान में कहा कि शी योंगक्सिन के कामों ने बौद्ध समुदाय की प्रतिष्ठा और भिक्षुओं की छवि को गंभीर नुकसान पहुंचाया है।

योंगक्सिन ने शाओलिन को दुनियाभर में मशहूर बनाया : शी योंगक्सिन 1999 से शाओलिन मंदिर के मठीधीश हैं। उन्होंने इस मंदिर को एक तरह से आधुनिक बिजनेस मॉडल में बदल दिया, जिसके चलते उन्हें सीइओ मोंक कहा जाने लगा। उनके नेतृत्व में मंदिर ने विदेशों में स्कूल खोले और मोंक (भिक्षुओं) का एक ग्रुप बनाया जो दुनियाभर में शाओलिन कुंग फू शो करता है।

हालांकि यह पहला मौका नहीं है जब योंगक्सिन विवादों में आए हैं। सबसे पहले साल 2006 में एक स्थानीय सरकार ने उन्हें लगभग 1 मिलियन युआन (करीब $125,000) मूल्य की एक वोक्सवैगन रवश उपहार में दी थी। तब माना गया कि शी ने स्थानीय पर्यटन को बढ़ावा देने में मदद की थी, जिससे खुश होकर सरकार ने उन्हें यह गिफ्ट किया है। हालांकि तब योंगक्सिन ने इसे एक गिफ्ट बताया और कहा कि उन्होंने कोई व्यक्तिगत लाभ नहीं लिया गया।

पहले भी महिलाओं से नाजायज संबंध रखने के आरोप लगे : इसके बाद साल 2015 में उनके एक पूर्व शिष्य ने दावा किया था कि शी योंगक्सिन ने कई महिलाओं से नाजायज संबंध बनाए हैं और उनकी संतानें भी हैं। इस पर उन्होंने कहा था कि ये आरोप झूठे और आधारहीन हैं। बाद में कोई सबूत न मिलने पर ये आरोप खारिज हो गये थे। इसके बाद उन पर मंदिर से जुड़े प्रोजेक्ट और संपत्ति का दुरुपयोग करने और उनसे व्यक्तिगत लाभ लेने का आरोप लगा। उन पर आरोप था कि उन्होंने नकली रसीदें जारी कर और अपनी पहचान छिपाकर वित्तीय गड़बड़ी की। हालांकि इसके भी कोई सबूत नहीं मिले।

योंगक्सिन ने एक बार सोने के धागे से बना कड़ा भी पहना था जिसे लेकर उनकी आलोचना हुई थी। कुछ रिपोर्ट्स में इसकी कीमत 25000 डॉलर बतायी गयी थी।

बौद्ध धर्म में भिक्षुओं से सादगी और सांसारिक भोगों से दूर रहने की अपेक्षा की जाती है। आलोचकों ने कहा कि एक मठाधीश, जिसे साधु जीवन जीना चाहिए, जब इतना भड़कीला, महंगा वस्त्र पहनता है, तो वह धर्म की गरिमा और मंदिर की परंपरा को धूमिल करता है।

एक न्यूज एजेंसी को दिये इंटरव्यू में जब उनसे पूछा गया कि उन पर इतने गंभीर आरोप क्यों लगे हैं, तो उन्होंने कहा था कि अगर वाकई कुछ गड़बड़ होती, तो अब तक सामने आ गयी होती।

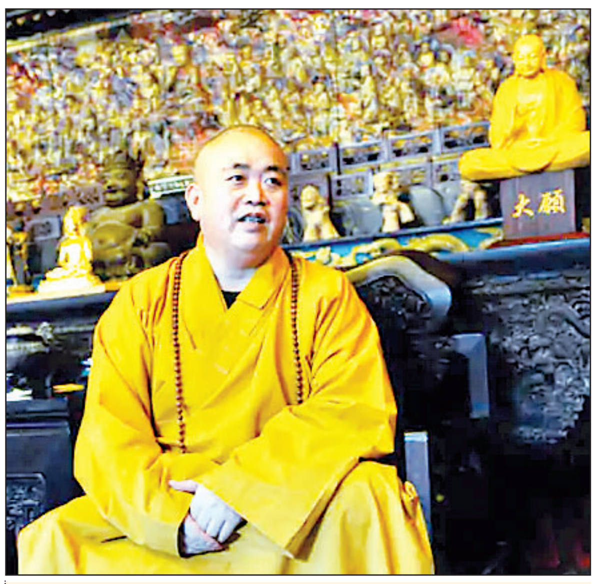

महंत पर बौध धर्म के सिद्धांतों का उल्लंघन करने का आरोप

महंत की गतिविधियां बौद्ध धर्म के सिद्धांतों का खुला उल्लंघन मानी जा रही हैं। मामले की जांच कर रहे अधिकारियों ने कहा है कि जो भी जानकारी सामने आयेगी, उसे समय-समय पर जनता के साथ साझा किया जायेगा। शाओलिन मंदिर सेंट्रल चाइना के हेनान प्रांत की पहाड़ियों में स्थित है। 1500 साल पुराना यह मंदिर सिर्फ धार्मिक कारणों से ही नहीं, बल्कि अपनी मार्शल आर्ट परंपरा खास कर कुंग फू के लिए दुनियाभर में मशहूर है। हर साल देश-विदेश से लाखों लोग इस बौध धर्म के इस मंदिर को देखने आते हैं।

कंबोडिया ने की थाईलैंड के साथ युद्धविराम की घोषणा

कंबोडिया के प्रधानमंत्री हुन मानेट (बायें), मलेशिया के प्रधानमंत्री अनवर इब्राहिम (बीच में) और थाईलैंड के कार्यवाहक प्रधानमंत्री फुमथम वेचायाचाई (दायें) सीजफायर की घोषणा के बाद तस्वीर खिंचाते हुए।

- अमेरिका और चीन ने मध्यस्थता की, जंग में 30 से ज्यादा मौत हुई

एजेंसी

बैंकॉक/नोम पेन्ह। कंबोडिया के प्रधानमंत्री हुन मानेट ने थाईलैंड के साथ चल रहे सीमा विवाद में युद्धविराम की घोषणा की है। उन्होंने कहा कि दोनों देशों के बीच तनाव को कम करने के लिए तत्काल लड़ाई रोकने की उम्मीद है। चीन और अमेरिका ने इस सीजफायर में मध्यस्थता की है। दोनों देशों के बीच मलेशिया की राजधानी कुआलालंपुर में शांति वार्ता हुई। इस बैठक में थाईलैंड की तरफ से कार्यवाहक प्रधानमंत्री फुमथम वेचायाचाई और कंबोडिया की तरफ से प्रधानमंत्री हुन मानेट ने हिस्सा लिया। इस बैठक की अध्यक्षता मलेशिया के प्रधानमंत्री अनवर इब्राहिम ने की दोनों देशों के बीच सीमा विवाद के चलते बीते दिनों में भारी गोलीबारी हुई है। इसमें 33 लोगों की मौत हो चुकी है। मरने वालों में ज्यादातर आम नागरिक शामिल हैं। मलेशिया इस समय दक्षिण-पूर्व एशियाई देशों के संगठन एएसइएएन की अध्यक्षता कर रहा है। उसने दोनों देशों को बातचीत की मेज पर बुलाया है।

अवसानेश्वर मंदिर में भगदड़, 2 की मौत

बाराबंकी (आजाद सिपाही)। उत्तर प्रदेश में बाराबंकी के अवसानेश्वर महादेव मंदिर में सावन के तीसरे सोमवार को भगदड़ मच गयी। इस हादसे में दो श्रद्धालुओं की मौके पर ही मौत हो गयी, जबकि 29 लोग घायल हुए हैं, जिनमें महिलाएं और बच्चे भी शामिल हैं। बताया जा रहा है कि रविवार रात 2.30 बजे जलाभिषेक के दौरान मंदिर परिसर में अचानक करंट फैलने से हादसा हुआ। भागने के दौरान लोग एक-दूसरे को कुचलते चले गये। डिप्टी सीएम ब्रजेश पाठक ने घटना को लेकर डीएम से 24 घंटे में रिपोर्ट मांगी है।

गोरखपुर लिंक एक्सप्रेसवे पर एक से लगेगा टोल टैक्स

लखनऊ (आजाद सिपाही)। यूपी के गोरखपुर लिंक एक्सप्रेसवे पर एक अगस्त से टोल टैक्स की वसूली शुरू हो जायेगी। इसके लिए दरों की सूची जारी कर दी गयी है। एक्सप्रेस वे पर दोपहिया वाहनों पर भी प्रति फेरा 140 रुपये की दर से टैक्स लिया जायेगा। वहीं, किसी व्यक्ति के अनुरोध पर उसी दिन वापसी करने पर वाहन के लिए टोल शुल्क 160 प्रतिशत ही देना होगा। साथ ही एक महीने में 20 या उससे अधिक एकल यात्रा करने वाले वाहनों को 80 प्रतिशत फीस ही देना होगा। गोरखपुर लिंक एक्सप्रेसवे पर टू व्हीलर/थ्री व्हीलर/लीगली रजिस्टर्ड ट्रैक्टर्स पर प्रति फेरा 140 रुपये की वसूली होगी। वहीं, कार, जीप, वैन या हल्के मोटर वाहन पर प्रति फेरा 285 रुपये चार्ज किया जायेगा। हल्के व्यवसायिक यान, हल्के माल यान या मिनी बस पर प्रति फेरा 440 रुपये टोल टैक्स लिया जायेगा। वहीं, बस या ट्रक पर 840 रुपये टोल टैक्य देना होगा।

जालंधर-अस्पताल के आइसीयू में ऑक्सीजन सप्लाई रुकी, 3 की मौत

जालंधर (आजाद सिपाही)। जालंधर सिविल अस्पताल के ट्रॉमा सेंटर में रविवार रात आइसीयू में भर्ती मरीजों की ऑक्सीजन सप्लाई दो मिनट के लिए बाधित हो गयी। इस दौरान तीन मरीजों की मौत हो गयी।

सीबीआइ ने महुआ मोइत्रा मामले की रिपोर्ट लोकपाल को सौंपी

- पैसे लेकर लोकसभा में सवाल पूछने के आरोपों का मामला

आजाद सिपाही संवाददाता

नयी दिल्ली। पैसे लेकर सवाल पूछने के आरोपों पर सीबीआइ ने लोकसभा सदस्य महुआ मोइत्रा और व्यवसायी दर्शन हीरानंदानी से जुड़े मामले में लोकपाल को अपनी रिपोर्ट सौंप दी है। अधिकारियों ने सोमवार को यह जानकारी दी। सीबीआइ ने लोकपाल की सिफारिश पर भ्रष्टाचार निवारण अधिनियम के प्रावधानों के तहत पिछले साल 21 मार्च को महुआ और हीरानंदानी के खिलाफ प्राथमिकी दर्ज की थी। महुआ पर आरोप है कि वह भ्रष्ट आचरण में लिप्त थीं और उन्होंने हीरानंदानी से रिश्वत और अन्य अनुचित लाभ लेकर अपने संसदीय विशेषाधिकारों से समझौता किया। महुआ पर यह भी आरोप लगा था कि उन्होंने लोकसभा सदस्य होने के नाते मिली संसद की लॉगइन आइडी और पासवर्ड साझा कर राष्ट्रीय सुरक्षा के समक्ष खतरा पैदा किया। सीबीआइ ने मामले में अपनी जांच के निष्कर्ष लोकपाल को सौंप दिये हैं, जो आगे की कार्रवाई तय करेगा।

दुबारा चुनाव जीत कर आयीं : बताते चलें कि महुआ पिछले लोकसभा चुनाव में पश्चिम बंगाल की कृष्णानगर सीट से निर्वाचित हुई थीं। दिसंबर 2023 में उन्हें 'अनैतिक आचरण' के लिए सदन से निष्कासित कर दिया गया था। महुआ ने इस फैसले को सुप्रीम कोर्ट में चुनौती दी। उन्होंने 2024 के आम चुनावों में कृष्णानगर में भाजपा की उम्मीदवार अमृता रॉय को हराकर 18वीं लोकसभा में अपनी सीट बरकरार रखी। वह तृणमूल कांग्रेस की सांसद हैं।

निशिकांत दुबे के आरोप पर जांच शुरू हुई थी : भ्रष्टाचार विरोधी लोकपाल ने भाजपा सांसद निशिकांत दुबे की ओर से मोइत्रा पर लगाये गये आरोपों की प्रारंभिक जांच के आधार पर सीबीआइ को निर्देश जारी किये। दुबे ने आरोप लगाया था कि महुआ ने दुबई स्थित व्यवसायी दर्शन हीरानंदानी से नकदी और उपहार लेकर उद्योगपति गौतम अदाणी और प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी सहित अन्य को निशाना बनाने के लिए संसद में सवाल पूछे। हालांकि महुआ ने आरोपों को सिरे से खारिज कर दिया था। उन्होंने आरोपों को राजनीतिक दुर्भावना से प्रेरित बताया था।

आजाद सिपाही की ओर से स्वत्वाधिकारी लैंडस्केप मीडिया प्रा. लि., प्रकाशक एवं मुद्रक हरिनारायण सिंह के लिए 176 कोकर चौक, ओल्ड एचबी रोड, रांची 834001 (झारखंड) से प्रकाशित तथा डीबी प्रिंट सोल्यूशंस (ए यूनिट ऑफ डीबी कार्प लिमिटेड), प्लॉट नं. 535 एवं 1272, ललगुटवा, पुलिस स्टेशन, रातू, रांची से मुद्रित।
संपादक : हरिनारायण सिंह, **स्थानीय संपादक* :** विनोद कुमार,***पीआरबी एक्ट के तहत खबरों के लिए जिम्मेदार, **राज्य समन्वय संपादक :** अजय शर्मा। समस्त दिवानी विवादों, न्यायोचित कार्रवाइयों एवं दंडित परिवादों के लिए क्षेत्राधिकार रांची न्यायालय में रहेगा। फोन : 9264434560, **R.N.I. No.-JHAHIN/2015/65109,** Postal Registration No. **RN/249/2019-21**